कथा-कुसुमाञ्जलि

का

सरल अध्ययन

(प्रत्येक कहानी की कहानी-कला की दृष्टि से आलोचना, कठिन स्थलों की सप्रसंग व्याख्या, कहानी-संक्षेप एवं सारांश; सम्भावित प्रश्न एवं उनके उत्तर)

लेखक

श्री बद्रीनारायण शर्मा,

एम० ए०, एल एल० बी०, 'साहित्यरत्न'

प्रधानाध्यापक

श्री महावीर दि० जैन बालिका विद्यालय, जयपुर

प्रकाशक

गर्ग बुक कम्पनी

त्रिपोलिया बाजार
जयपुर।

पुरानी मंडी
अजमेर।

१९६०]

[मूल्य ३)

[illegible]

प्रश्नों की सूची

कहानी नं० १.

१. प्रश्न—कहानीकार जयशंकर प्रसाद की विशेषताएँ बताकर मधुआ नामक कहानी का सारांश लिखिए।

२. प्रश्न—कहानी-कला की दृष्टि से मधुआ नामक कहानी की समीक्षा कीजिए

३. प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(क) एक चिन्ता पूर्ण··············बनना पड़ेगा क्या ?

(ख) सरकार ! मौज··················जा सकते है।

कहानी नं० २.

१. प्रश्न—कहानीकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी की कहानियों की विशेषताएं संक्षेप में बताकर 'उसने कहा था' नामक कहानी का सारांश लिखिए।

२. प्रश्न—उसने कहा था नामक कहानी की कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा कीजिए।

३. प्रश्न—'उसने कहा था' कहानी के शीर्षक के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कीजिए। क्या आप इस शीर्षक से सहमत हैं ?

४. प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) बड़े बड़े..............................का मरहम लगावें।

(ख) आँख मारते..............................समझ गया।

कहानी नं० ३.

१. प्रश्न—लेखक का परिचय देकर 'बड़े भाई साहब' कहानी को संक्षेप में लिखो।

२. प्रश्न—कहानी के कौन कौन से तत्व होते हैं ? बड़े भाई साहब नामक कहानी की इन तत्वों के आधार पर आलोचना करो।

३. प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(क) उन्होंने भी उसी..............................पायेदार बने।

(ख) हमेशा एक..............................न कर सका।

(ग) आँखें आसमान की..............................जा रही हो।

कहानी नं० ४.

१. प्रश्न—एक गौ कहानी को संक्षेप में लिखिए।

२. प्रश्न—भाव, भाषा एव चरित्र चित्रण की दृष्टि से 'एक गौ' की आलोचना कीजिए।

३. प्रश्न—कहानीकार निरुद्देश्य कहानी नही लिखता तथा कहानी की बिखरी हुई कथावस्तु को समेटने के लिए कथोपकथनों का सहारा लेता है। क्या यह कथन सत्य है ? एक गौ नामक कहानी का उद्देश्य बताइए तथा यह भी बताइए कि कथोपकथनों की दृष्टि से यह कहानी कैसी है ?

४. प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करो—

(क) ऐसे तुम्हारे..............................क्या हो ?

(ख) जो कहो..............................मेरी सुन्दरिया।

कहानी नं० ५.

१. प्रश्न—कहानीकार अज्ञेय जी की विशेषता बता कर उनकी 'शत्रु' नामक कहानी संक्षेप में लिखो।

२. प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से शत्रु नामक कहानी की आलोचना कीजिए।

३. प्रश्न—शीर्षक का कहानी में क्या महत्व है [illegible] कहानी [illegible] के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

४. प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(क) [illegible] .... [illegible] है।

(ख) इसमें [illegible] .... [illegible] होगा।

कहानी नं० ६.

१. प्रश्न—श्रीभगवतीचरण वर्मा का संक्षिप्त साहित्यिक परिचय देकर 'प्रायश्चित' कहानी को संक्षेप में लिखो।

२. प्रश्न—चरित्र चित्रण, कथोपकथन एवं उद्देश्य की दृष्टि से प्रायश्चित नामक कहानी की आलोचना कीजिए।

३. प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से प्रायश्चित कहानी की समीक्षा कीजिए।

४. प्रश्न—कहानी में शीर्षक का महत्व बताते हुए प्रायश्चित कहानी के शीर्षक की उपयोगिता बताइए।

कहानी नं० ७.

१. प्रश्न—संक्षेप में श्रीसियारामशरण गुप्त का परिचय देकर कोटर और कुटीर नामक कहानी को संक्षेप में लिखो।

२. प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से कोटर और कुटीर नामक कहानी की समीक्षा कीजिए।

३. प्रश्न—अच्छी कहानी की प्रमुख विशेषताएँ बताकर कोटर और कुटीर नामक कहानी को उन विशेषताओं की दृष्टि से आँकिए।

४. प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

(क) तो यही तो मैं भी.................नहीं सध सकता है।

(ख) घनश्याम के..........................दूसरा अनर्थ।

(ग) बेटा ! पृथ्वी ....आवश्यक भी है।

(घ) एक क्षण में ही.....................इसे कहाँ पाया।

कहानी नं० ८.

१. प्रश्न—कहानीकार यशपाल की विशेषताएँ बताकर उनकी 'कुत्ते की पूँछ' नामक कहानी का सारांश लिखो।

२. प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से 'कुत्ते की पूँछ' नामक कहानी का मूल्यांकन कीजिए।

३. प्रश्न—'कुत्ते की पूँछ' कहानी का शीर्षक कहाँ तक उपयुक्त है ?

४. प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए—

(क) परिस्थिति को..................................सीमा नहीं है ।

(ख) पुरुस सिद्धान्त..................................कठिन है ।

कहानी नं० ९.

१. प्रश्न—कहानीकार उपेन्द्रनाथ अश्क की विशेषतायें बताकर उनकी डाची नामक कहानी का सारांश लिखो ।

२. प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से डाची नामक कहानी की आलोचना कीजिए ।

कहानी नं० १०.

१. प्रश्न—कहानीकार होमवती देवी का परिचय दीजिए तथा माँ नामक कहानी का सारांश लिखिए ।

२. प्रश्न—'माँ' कहानी की कहानी कला की दृष्टि से आलोचना कीजिए ।

३. प्रश्न—'माँ' कहानी के शीर्षक पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

कहानी नं० ११.

१. प्रश्न—कहानीकार विष्णु प्रभाकर की विशेषताएँ बताकर आपरेशन नामक कहानी को संक्षेप में लिखो ।

२. प्रश्न—कहानी-कला की दृष्टि से 'आपरेशन' कहानी की समीक्षा कीजिए ।

३. प्रश्न—निम्नांकित गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए ।

(क) जिस समय..................................उकसाया ।

(ख) आज उन्होंने..................................सफलता के साथ ।

कहानी नं० १२.

१. प्रश्न—कहानीकार रांगेयराघव का परिचय देकर नई जिन्दगी के लिए नामक कहानी की कथा संक्षेप मे लिखिए ।

२. प्रश्न—नई जिन्दगी के लिए नामक कहानी की कहानी कला की दृष्टि से आलोचना कीजिए ।

३. प्रश्न—'नई जिन्दगी के लिए' कहानी के शीर्षक के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कीजिए ।

४. प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) मारता है..................................एक नहीं रहोगी ।

कहानी नं० १३.

१. प्रश्न—कहानीकार भगवती प्रसाद वाजपेयी की विशेषताएँ बताकर उनकी 'मिठाई वाला' नामक कहानी की समीक्षा कीजिए।

२. प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से 'मिठाई वाला' नामक कहानी की समालोचना कीजिए।

३. प्रश्न—"कहानी जीवन की एक घटना पर प्रकाश डालती है तथा कहानी में संवेदना केन्द्रित होती है। इस कथन के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कीजिए तथा मिठाई वाला नामक कहानी की आलोचना उस एक घटना एवं संवेदना को ध्यान में रख कर कीजिए।

४. प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए—

(क) "मिलता भला क्या है ?..............चाहता भी हूँ।"

(ख) मेरा वह ....सुख का।

कहानी नं० १४.

१. प्रश्न—कहानीकार चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की विशेषताएँ बताकर जीजी नामक कहानी का साराश लिखिए।

२. प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से जीजी नामक कहानी की समीक्षा कीजिए।

३. प्रश्न—'जीजी' कहानी के शीर्षक के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

४. प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए—

(क) कुछ लोगों ....हजम नहीं होती।

(ख) नान्सेन्स...............................छुई मुई हो जाय।

कहानी नं० १५.

१. प्रश्न—कहानीकार कमला चौधरी की कहानी विषयक विशेषताएँ बताकर उनकी टेक की रक्षा नामक कहानी की समीक्षा कीजिए।

२. प्रश्न—'टेक की रक्षा' कहानी की कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा कीजिए।

३. प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए—

(क) अपने परिश्रम...............................आलस्य है।

(ख) चिन्ता का अन्तिम....................घेर लिया।

मधुआ

लेखक—जयशंकर प्रसाद

प्रश्न—कहानीकार जयशंकर प्रसाद की विशेषताएँ बता कर मधुआ नामक कहानी का सारांश लिखिए।

उत्तर—आधुनिक युग के कहानी लेखकों में बाबू जयशंकर प्रसाद अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। प्रसाद जी की प्रतिभा सर्वोतमुखी थी। वे कवि, नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार एवं निवन्ध लेखक के रूप में हिंदी साहित्य की अद्वितीय सेवा करने वाले प्रभावशाली व्यक्ति थे। इसलिए इनकी कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनमें कवित्व, नाटकीयतत्व एवं निरीक्षण शक्ति का पर्याप्त समावेश हुआ है। प्रसाद जी ने प्रत्येक प्रकार की कहानियाँ लिखी है। कहानी चाहे घटना प्रधान हो, चाहे प्रभाव प्रधान हो, चाहे वातावरण प्रधान, चाहे चरित्र प्रधान हो और चाहे प्रतीकवादी हो; सामाजिक हो अथवा ऐतिहासिक हो—प्रसादजी ने उसे सफलतापूर्वक लिखा है। प्रसादजी की अधिकांश कहानियाँ चरित्र प्रधान एवं भाव प्रधान हैं जिनमें चरित्र चित्रण, कल्पना एवं भावना की प्रधानता रहती है। मनोभावों के वेग से हृदय को झकझोर देने में प्रसादजी की टक्कर का दूसरा लेखक हिन्दी साहित्य में आज तक नही हुआ। वातावरण प्रधानं कहानियाँ एवं प्रतीकवादी कहानियाँ जिस अनूठे ढंग से प्रसादजी ने लिखी हैं वे अत्यधिक प्रभावशाली बन गई है। प्रसादजी सौन्दर्य एवं करुणा के पुजारी थे। इसलिए इनकी कहानियों मे सौन्दर्य एवं करुणा के प्रभावशाली चित्र मिलते हैं। प्रसाद जी की कहानियों में प्रेम तत्व का मार्मिक विश्लेषण हुआ है। प्रसादजी की कहानियों का आरम्भ एवं अन्त चमत्कारपूर्ण होता है। इनकी कहानियों के कथोपकथनों में नाटकीयता रहती है। इनका कल्पना वैभव एवं वस्तुविन्यास उत्तम कोटि का है। प्रसादजी को अपनी कहानियों के चरित्र चित्रण में अधिक सफलता मिली है। प्रसादजी की कहानियों में प्रयुक्त शैली मनोवैज्ञानिक है। प्रसादजी पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग करना शायद उचित नहीं समझते। वे संस्कृति के तत्सम शब्दों का प्रयोग ही अपनी कहानियों में करते हैं। प्रसादजी भावुक व्यक्ति थे। अतः इनकी कहानियों में भी भावुकता टपकती है। प्रसादजी किसी निश्चित उद्देश्य को सामने रख कर कहानियाँ नही लिखते प्रतीत होते

तत्काल एवं सारगर्भित होने चाहिए। प्रस्तुत कहानी में कथानक का आरम्भ चित्ताकर्षक ढंग से हुआ है और उसका प्रयोजन पूर्ण है। लेखक ने ठाकुर एवं उसके कुँवर के चरित्र को तत्कालीन ठाकुर एवं कुँवर का चरित्र बनाने का सफल प्रयास किया है। बच्चा मधुआ दिन भर कुँवर साहब की चाकरी के पश्चात भूख प्यास से विह्वल हो जाता है किन्तु ठाकुर अपनी नौकरी लेने में जागरूक है उसकी मनोदशा की ओर मुड़ कर देखना मानो उन्होंने सीखा ही नहीं। बड़ा आदमी तो भूख की तीव्र ज्वाला को फिर भी बर्दाश्त कर जाता है किन्तु बच्चा इस ज्वाला को बर्दाश्त करने में प्रायः असमर्थ ही रहता है। अतः वह रो पड़ता है। मधुआ भी भूख से व्याकुल होकर रो पड़ता है। प्रसाद जी ने चरित्र चित्रण में पर्याप्त सफलता पाई है। इसलिए कथानक सजा सा प्रतीत होता है।

(२) चरित्र-चित्रण—इस कहानी में चरित्र-चित्रण पर पूर्ण ध्यान दिया गया है। प्रसादजी की निरीक्षण शक्ति बहुत ही तीव्र थी। इसलिए जीवन के सच्चे चित्र अंकित करने में सदैव सफल रहे है। चरित्र-चित्रण की सबसे बड़ी विशेषता चरित्र की स्वाभाविकता होती है। सफल कहानी लेखक व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों मे डालकर उसका विकास करता है। इस कहानी मे प्रसाद जी ने शराबी एवं मधुआ को विभिन्न परिस्थितियो मे डालकर उनके चरित्र का ऐसा स्वाभाविक विकास किया है कि वे काल्पनिक चरित्र प्रतीत न होकर वास्तविक चरित्र प्रतीत होते है। लल्लू मे जमीदारी बू है। वह मालिक की लात को सेवक पर पड़ना साधारण सी बात समझ कर उल्टा मधुआ पर ही झल्लाता है। वह अपने आराम मे व्यवधान नही पड़ने देना चाहता चाहे कोई जीयो या मरो। उसमे न सहृदयता है और न सहिष्णुता। शराबी मे मानवता है। उससे मधुआ को ऐसा नही देखा जाता। उसकी ममता असहाय मधुआ के प्रति उमड़ पड़ती है। उसके सद् और असद् विचारों मे द्वन्द्व होता है। वह ठाकुर से प्राप्त रुपये की शराब पीने की सोच रहा था किन्तु मधुआ ही बीच मे आ धमका। अपने घर से मिठाई वाले की दुकान तक जाने मे जो समय शराबी को लगा वह समय उसके अन्तर्द्वन्द का समय था। उसके सूखे हृदय एवं मानवी भावनाओं मे विचारो का सशक्त अन्धड़ आया था। उस अन्धड़ में उसका स्वार्थ उड़ गया और ममता रह गई। वह पूरे रुपये की मिठाई ही ले गया, जिसको देख कर ही मधुआ की रुआँसी आखें मुस्करा उठी। इस स्थान पर लेखक ने शिशु मनो-

विज्ञान का स्वस्थ उदाहरण उपस्थित किया है। वर्षों की आदत एक क्षण में ही नहीं वदल जाया करती है। उसके बदलने में भी थोड़ा सा समय लगता है। शराबी दुनियादारी के झंझटों से मुक्त था। उसे चिन्ता फिकर के नाम पर अपनी भी चिन्ता नही थी। यदि थोड़ी वहुत चिन्ता थी तो शराव की वोतल की चिन्ता थी—वह जीता ही शराव की वोतल के लिये था—कथा कहानी सुनाता ही इसलिए था कि उसे शराव पीने को पैसे मिलेंगे। इसलिए सुबह उठते ही उसने मधुआ से पीछा छुड़ाने की फिर सोची। उसे मधुआ जंजाल सा लग रहा था किन्तु जब मधुआ ने कहीं भी जाने के लिए इंकार कर दिया तो वह उस पर झुंझलाता हुआ गोमती के किनारे तक पहुँच गया। उसके सद् और असद् विचारों में अब भी तीव्र संघर्ष हो रहा था किन्तु जब वह सान धरने की कल लेकर वापस लौटा और मधुआ को वैसे ही जमा हुआ पाया तो उसने मेहनत मजदूरी करके उस शिशु का पालन पोपण करने की पूरी ठान ली। उसकी आत्मा की ममता पूर्णतया विजयी हो गई। प्रसाद जी ने शरावी के जीवन में स्वाभाविक परिवर्तन लाकर चरित्र चित्रण में वास्तविकता ला दी है।

(३) कथोपकथन—कथोपकथन कहानी का प्राण होता है। कथोपकथन के द्वारा लेखक अपनी कहानी मे तीव्रता एवं सजीवता लाने का प्रयास किया करता है। प्रसाद जी ने इस कहानी का आरम्भ ही कथोपकथन से किया है। कथोपकथन के द्वारा ही लेखक ने शरावी के स्वभाव की विशेषताएं वतलाई है। ठाकुरसाहब की रुचि का परिचय दिया है। इस कथोपकथन मे शराबी के चरित्र का अच्छा विकास हुआ है। वालक मधुआ की शिशु जन्य प्रवृत्तियों का अच्छा विश्लेपण हुआ है। लेखक ने शराबी और ठाकुर साहव के कथोपकथन मे नवाबी घरानो की कुण्ठा, तड़पन एवं रंगरेलियो का तड़फता हुआ चित्र अंकित किया है जो वहुत ही मार्मिक एवं तथ्यपूर्ण है। कथोपकथन के द्वारा ही प्रसादजी ने कथानक का विकास किया है तथा इसी कथोपकथन को चरित्र विश्लेपण का माध्यम बनाया है। कहानी के कथोपकथन स्वाभाविक, रोचक एवं प्रभावशाली है।

(४) वर्णनशैली—प्रसादजी की वर्णन शैली प्रौढ एवं प्रांजल है। वे वस्तुस्थिति का ऐसा मनोवैज्ञानिक वर्णन करते हैं कि कहानी मे वास्तविक जीवन झलकने लगता है। इस कहानी में भी प्रसादजी ने शरावी मधुआ, एवं सम्वन्धित घटनानों का ऐसा सुन्दर वर्णन किया है कि मर्म को छू लेता है। प्रसाद जी भावात्मक स्थलो का वर्णन करने में पूर्णतया सिद्धहस्त है। इस कहानी में

शराबी की मनोदशा का ऐसा [illegible] वर्णन किया है कि पाठक की चित्त-वृत्ति उसमें उलझे बिना नहीं रहती।

(५) देशकाल—इस कहानी में देशकाल का पूरा ध्यान रखा गया है। शराबी के मुँह से प्रसाद जी ने नवाबी युग की प्रवृत्तियों का प्रभावशाली वर्णन करवाया है। कुँवर साहब का मधुआ के लात मारना और जमादार ठल्लू का मधुआ को डाँटना आदि देश काल के अनुसार ही हुआ है। सामन्तशाही और गुलामी की प्रवृत्तियाँ कवरों-भंवरों के समय की ही देन है।

(६) उद्देश्य—इस कहानी का प्रमुख उद्देश्य मानव हृदय का विश्लेषण है। इसी उद्देश्य से लेखक ने शराबी के चरित्र का विश्लेषण किया है। मानव मात्र में संवेदना होती है वह कभी न कभी किसी के प्रति उभर उठती है। शराबी से मधुआ का रोना नहीं देखा गया। उसकी आत्मा के कोमल परत खुल गये और वह मधुआ के लिए घर-गृहस्थी बसाने के लिए सान धरने की कल लेकर कमाने-खाने के लिए चल पड़ा। उसकी वर्षों से पड़ी हुई शराब की लत छूट गई। इस कहानी में लेखक को अपने उद्देश्य में पूर्ण सफलता मिली है। अतः यह कहानी कहानी कला के तत्वों पर कसने से पूर्णतया सफल उतरती है और कहानी जगत में अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

उसने कहा था

लेखक—चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

प्रश्न—कहानीकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी की कहानियों की विशेषताएँ संक्षेप में बताकर उसने कहा था नामक कहानी का सारांश लिखिए।

उत्तर—चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने केवल मात्र तीन ही कहानियाँ लिखी हैं, जिनके नाम क्रमशः सुखमय जीवन, बुद्धू का काँटा एवं उसने कहा था है। प्रथम दो कहानियाँ साधारण है। उनमे कला की दृष्टि से अनेक खटकने वाले प्रकरण हैं किन्तु उनकी तीसरी कहानी उसने कहा था अत्यधिक कलापूर्ण एवं भाव पूर्ण है। इसी कहानी के कारण गुलेरी जी हिन्दी कहानी जगत में अमर हो गये है। अतः जब कभी कहानीकार गुलेरी की कहानी विषयक विशेषताओं की चर्चा चलती है उनकी यह "उसने कहा था" नामक अमर कृति ही सामने आती है और इसी के आधार पाठन की विशेषताओं पर प्रकाश डाला जाता है। कहानीकार गुलेरी जी की निरीक्षण शक्ति बड़ी प्रबल थी। यही कारण है कि इनकी कहा-नियो मे मानव मनोविश्लेषण का अनुपम चित्र खिंच जाता है। इन्होने अपनी

कहानियों के पात्रों के चरित्र विश्लेषण में विद्वत्ता का परिचय दिया है। गुलेरी जी की कहानियों में सस्ती भावुकता नहीं होती प्रत्युत एक उच्च कोटि का आदर्श रहता है। गुलेरी जी की अनेक विषयों की जानकारी विशाल थी तथा अध्ययन गहरा था इसलिए इन्होंने जो चरित्र अपनी कहानियों में रखे हैं वे प्रेरणा के स्रोत बन गए हैं। गुलेरी जी मनोविज्ञान के पंडित थे। इसलिए इनकी कहानियों में मानव मनोविश्लेषण का स्वस्थ रूप मिलता है। भाव, भाषा एवं शैली की दृष्टि से इनकी कहानियां उत्तम हैं। इनकी कहानियों में वर्णित प्रेम भावना उच्च कोटि की है। इनकी कहानियों में व्यंग एवं हास्य दोनों का पुट रहता है। किन्तु यह व्यंग एवं हास्य भी ऊँचे दर्जे का होता है। गुलेरी जी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आप अपनी कहानियों में अनुकूल वातावरण की सृष्टि करने में अत्यधिक सफल रहे हैं। इसलिए आपकी कहानियों को पढ़ कर पाठक झूम उठता है। गुलेरी जी का कल्पना वैभव एवं वस्तु विन्यास अद्वितीय है। इनकी कहानियों में विविधता होते हुए भी एकता है। इसलिए इनकी कहानियाँ मर्मस्पर्शी बन गई हैं।

कहानी का सारांश—एक दिन अमृतसर चौक की एक दुकान पर एक लड़का और एक लड़की सहसा मिल गए। दोनों ही सिक्ख थे और सौदा लेने आए थे। लड़की मगरे की रहने वाली थी और अमृतसर में अपने मामा के यहाँ आई हुई थी। लड़का भी मामा के यहां आया था। वे दोनों प्रायः दुकानों पर मिल जाया करते थे। लड़का मुस्करा कर उससे पूछता था—तेरी कुड़माई हो गई और लड़की धत् कह कर दौड़ जाती। एक दिन उस लड़की ने अपना रेशमी सालू दिखा कर अपनी कुड़माई होने की बात उस लड़के से कह कर दौड़ गई। लड़का यह सुन कर न जाने क्यों व्यथित हो गया। उसने एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, कावड़ी वाले की कमाई उलट गया, कुत्ते के पत्थर मारा, गोभी वाले के ठेले में दूध उँडेल दिया तथा एक वैष्णव स्त्री से टकरा कर अन्धा कहलाया। इस लड़के का नाम लहनासिंह था। यह घटना पुरानी हो गई। लहनासिंह का विवाह हो गया और वह फौज में भर्ती होकर लड़ाई में चला गया। २५ वर्ष व्यतीत हो गए। वह नं० ७७ राइफिल्स में जमादार बन गया। इस टुकड़ी का सूबेदार सरदार हजारासिंह था। लड़ाई के मैदान में जाते समय लहनासिंह सूबेदार हजारासिंह के निमन्त्रण पर उसके घर गया था। वहाँ सूबेदारनी ने उसे भीतर बुलाकर पूछा—"मुझे पहचाना ?" लहनासिंह ने नकारात्मक उत्तर दिया।

इस समय सूबेदारनी ने वही पुरानी पंक्ति दोहराई—'तेरी कुड़माई हो गई, धत् कल होगई देखते नही रेशमी बूटों वाला सालू-अमृतसर में" लहनासिंह के सब कुछ समझ मे आगया—यह वही लड़की थी जिसकी ओर २५ वर्ष पहले वह आकर्षित हुआ था। सूबेदारनी ने अपना आंचल पसार कर सूबेदार हजारासिंह एवं उसके पुत्र बोधासिंह के प्राणो की रक्षा करने का भार लहनासिंह को सौंप दिया। वहा से विदा होकर ये तीनों लाम पर चले आए। इस टुकड़ी में सब ही मित्र थे। एक दिन रात्रि मे लपटन साहब ने आकर सूबेदार हजारासिंह को आदेश दिया कि वह मील भर की दूरी पर पूर्व की तरफ जो जर्मन खाई है उस पर धावा बोल दे। सूबेदार हजारासिंह केवल आठ दस आदमियों को खाई में छोड़ कर पूरी टुकड़ी लेकर जर्मन-खाई पर हमला करने चल पड़ा। लहनासिंह खाई का पहरा दे रहा था। आए हुए लपटन साहब ने सिगरेट जलाई तो प्रकाश मे लहनासिंह ने उनका चेहरा देखा और धक् रह गया। यह तो वे लपटन साहब नही थे जो वहा आया करते थे। लपटन साहब ने लहना को जब सिगरेट पीने के लिए दी तो उसका शक और भी पक्का हो गया। उसने लपटन साहब की परीक्षा लेने के लिये एक कहानी गढी उसमें लपटन साहब के खोते पर बैठने की बात थी, मुसलमान बवर्ची के मन्दिर मे जल चढ़ाने की बात थी और नील गाय के दस फीट लम्बे सीगो की बात थी। लपटन साहब ने इन सब के लिए हामी भरी। अब तो लहना को लेश मात्र भी शक नही रह गया वह माचिस लाने के मिस उठकर खाई मे गया। और वजीरासिंह को सूबेदार हजारासिंह को वापस बुला लाने के लिए दौड़ाया और खाई के सिपाहियों को सावधान कर फिर लौट आया। उसने देखा कि लपटन साहब, खाई मे गोले लगा रहा है। जैसे ही उसने उन गोलों को चलाने के लिये माचिस जलाई लहनासिंह ने उल्टी बंदूक उसके मारी जिससे लपटन साहब वेहोश हो गया। होश मे आने पर लपटन साहब ने पैन्ट की जेब वाली पिस्तौल लहनासिंह पर चलादी और लहना ने दो फायर करके उसे खत्म कर दिया। इसी समय जर्मन टुकड़ी का उस खाई पर आक्रमण हुआ किन्तु खाई के आठ आदमियो ने जम कर लड़ाई की। वजीरासिंह हजारासिंह को लौटा लाया इसलिये पीछे से उसने आक्रमण किया। इस प्रकार जर्मनों का सफाया हो गया किन्तु लहना की पसली में एक गोली लग गई जिसकी सूचना उसने किसी को नही दी। जब घायलो को लेने वाली गाड़ी आई

तो उसने उसमें सूबेदार हजारासिह तथा उसके पुत्र बोधसिह को बैठा दिया और स्वयं दूसरी गाड़ी में जाने के लिये ठहर गया। हजारासिह उसको छोड़कर जाने के लिये तैयार नही था किन्तु लहनासिह ने उसे बोधसिह की सौगन्द दिला कर गाड़ी में बैठा ही दिया। जब गाड़ी चलने को हुई तो उसने हजारासिह से कहा—सूबेदारनी होरां को चिठ्ठी लिखो तो मेरा मत्था टेकना लिख देना और जब घर जाओ तब कह देना कि मुझसे जो उसने कहा था, वह मैंने कर दिया।"

गाड़ी चली गई। इस प्रकार सूबेदार हजारासिह एवं बोधसिह के प्राण बच गये किन्तु जमादार लहनासिह ने वजीरासिह की गोद में वहाँ खाई पर ही प्राण त्याग दिए।

प्रश्न—उसने कहा था नामक कहानी की कहानी कला की दृष्टि मे समीक्षा कीजिए।

उत्तर—चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की यह "उसने कहा था" नामक कहानी हिन्दी साहित्य में अद्वितीय कहानी समझी जाती है। इसका वस्तु विन्यास, चरित्र चित्रण सूक्ष्म मनोविश्लेषण एवं संकेत पूर्ण शीर्षक अनूठा है। इसी कहानी के आधार पर गुलेरी जी ने हिन्दी कहानी जगत में इतनी ख्याति पाई है। अतः इस कहानी को कलात्मक विशेषताओं पर विचार करके कला की दृष्टि से इसका मूल्यांकन किया जाता है।

कथावस्तु—इस कहानी की कथावस्तु मार्मिक एवं सारगर्भित है। लेखक ने इसका चयन इतने सुन्दर ढंग से किया है कि यह अत्यधिक प्रभावशाली बन गई है। गुलेरी जी स्वस्थ व्यंग लिखने में पूर्ण सिद्ध हस्त है। इस कहानी का आरम्भ ही अमृतसर के बम्बू कार्ट वालों के तीखे व्यंगो के विवरणो से हुआ है। इस कहानी की कथावस्तु को हम सुविधापूर्वक तीन भागो में विभाजित कर सकते हैं। कथावस्तु का यह पहला भाग नायक लहनासिह के बचपन का है। वह अमृतसर में अपने मामा के यहाँ आया हुआ है यहाँ ही उसका परिचय मगहरे से आई हुई उस लड़की से हुआ था जो आगे चल कर सूबेदार हजारासिह की पत्नी के रूप में हमे मिलती है। लहनासिह उससे प्रायः पूछा करता था—"तेरी कुड़माई होगई? और वह लड़की "धत्" कर कर दौड़ जाया करती थी। एक दिन उस लड़की ने लहनासिह की सम्भावना के विरुद्ध उत्तर दिया—"हाँ हो गई कल, देखते नही यह रेशम से कढ़ा सालू" यह उत्तर देकर लड़की भाग गई किन्तु बालक लहनासिह पर जो प्रतिक्रिया हुई वह उसके एक लड़के के मोरी में ढकेल देने से, छाबड़ी वाले की छाबड़ी उलटने से, कुत्ते के पत्थर मारने से तथा

नहा कर आती हुई वैष्णव स्त्री से टकराने से स्पष्ट हो जाती है। उसके हृदय पर ठेस लगी थी उसकी कुड़माई होने पर। कथावस्तु का दूसरा भाग युद्ध भूमि का दृश्य है जहां लपटन साहब के वेश में एक जर्मन खाई पर जाता है और सूबेदार हजारासिंह को फौज की टुकड़ी सहित दूर आक्रमण करने के लिए भेज देता है। लहनासिंह को उस पर संदेह होता है। वह लपटन साहब को टटोलता है और सन्देह विश्वास में बदलते ही खाई में बचे हुए सिपाहियों को सतर्क करके एक व्यक्ति को सूबेदार हजारासिंह को वापस लौटाने के लिए भेज देता है तथा लपटन साहब को परलोक भेज देता है हालांकि उसके जांघ में भी एक गोली लगी। इसी समय जर्मन फौज का आक्रमण उस खाई पर हुआ जिसका मुकाबला लहनासिंह ने जमकर किया। सूबेदार हजारासिंह की टुकड़ी भी लौट आई। उसने पीछे से जर्मनो पर आक्रमण किया। उस युद्ध मे लहनासिंह की पसली मे एक गोली लगी और सूबेदार हजारासिंह के कन्धे पर गोली लगी किन्तु लहनासिंह ने किसी को कुछ नही बताया और बीमार उठाने वाली गाड़ी आने पर स्वयं जाकर सूबेदार हजारासिंह को तथा उसके पुत्र बोधसिंह को भेज दिया और सूबेदार का मत्था टेकना लिखवा दिया। कथावस्तु का तीसरा भाग वह है जब वह घायलावस्था में वजीरासिंह की गोद मे सिर रखे हुए, मरणासन्न अवस्था में पड़ा है और उसको उस समय की स्मृति ताजा होती है जब वह सूबेदार हजारासिंह के निमन्त्रण पर उसके गांव गया था और वहाँ सूबेदारनी ने उसे भीतर बुला कर अपना आंचल पसार कर उससे अपने पति हजारासिंह एवं पुत्र बोधसिंह की रक्षा करने की याचना की थी। यह सूबेदारनी वही लड़की थी जिससे अमृतसर मे लहनासिंह की भेंट हुई थी और जिससे लहनासिंह पूछा करता था—"तेरी कुड़माई हो गइ।" लहनासिंह ने इसी के पति एवं पुत्र की रक्षा में अपने प्राण गवाये। उसने जो कुछ कहा था उसका रहस्य इसी तीसरे भाग में खुलता है। रहस्य खुलने के साथ ही कहानी भी अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाती है। इस प्रकार से कथावस्तु प्रभावशाली एवं मार्मिक है। लेखक ने कहानी के प्रथम भाग से तीसरे भाग का सामंजस्य इतनी सुन्दर ढग से बैठाया है कि कहानी ने अत्यधिक कलात्मक रूप ले लिया है। कहानी का अन्त तो और भी प्रभावशाली बन गया है। हमारी सवेदना लहनासिंह के प्रति उमड़ती है जिसने प्रेम और कर्त्तव्य की वेदी पर अपने प्राणो की आहुति दे दी।

पात्र—इस कहानी मे पात्रों की जो सृष्टि की गई है तथा उन पात्रों का जो

चरित्र चित्रण किया गया है वह बेजोड़ है। हिन्दी कहानी साहित्य में आज भी जब कि कहानी साहित्य दिनों दिन उन्नति कर रहा है ऐसे मार्मिक चरित्र चित्रणों के उदाहरण मिलना सम्भव नहीं हैं। इस कहानी का प्रमुख पात्र लहनासिंह है। सूबेदारनी दूसरा सबल चरित्र है। इन दो पात्रों—लहनासिंह एवं सूबेदारनजी के अतिरिक्त सूबेदार हजारासिंह, बोधासिंह, वजीरासिंह एवं लपटन साहब हैं। इस प्रकार विशेष ध्यान देने योग्य जो बात इस कहानी मे है वह यह है कि इस कहानी में पात्रों की अल्पता है। पात्रों की अल्पता कहानी का एक विशिष्ट गुण है। अधिक पात्रों के होने से कहानी में दुरूहता आ जाती है गुलेरी जी यह बात भली भांति जानते थे इसलिए उन्होंने इस कहानी मे पात्रों की संख्या बहुत ही सीमित रखी है। लहनासिंह इस कहानी का केन्द्र बिन्दु है और कहानी का नायक है। लहनासिंह के चरित्र के दो रूप हमारे सामने आते हैं। पहला रूप प्रेमी लहनासिंह का है और दूसरा रूप कर्त्तव्य परायण, वीर एवं साहसी लहनासिंह का है। इन दोनों रूपों का कहानीकार ने मर्मस्पर्शी एवं प्रभावशाली वर्णन किया है। लहना-सिंह निःस्वार्थी, वीर एवं लोक कल्याणकारी भावनाओं से पूर्ण है। उसमें त्याग और बलिदान है। उसके हृदय का प्रेम कर्त्तव्य परायणता में परिर्वातित हुआ है। सूबेदारनी ने अपने पति एवं पुत्र की रक्षा का भार उस पर छोड़ दिया। लह-नासिंह ने अपना उत्तरदायित्व अपने प्राणों की बाजी लगाकर पूरा किया। यदि युद्ध भूमि से वह घायल सूबेदार हजारासिंह एवं रुग्ण बोधसिंह को नहीं भेजता और स्वयं आ जाता तो वह जीवित बच जाता किन्तु बहुत सम्भव था कि उन दोनों बाप बेटों में से कोई एक काल का ग्रास बन जाता। यदि ऐसा हो जाता तो उस प्रेम और विश्वास का क्या परिणाम होता जो सूबेदारनी लहनासिंह के प्रति रखती थी। लहनासिंह अपना कर्त्तव्य खूब समझता है इसीलिए उसने अपने प्राण गँवा कर सूबेदारनी के पति हजारासिंह एवं पुत्र बोधसिंह के प्राणों की रक्षा करना पहला कर्त्तव्य समझा और इसी कर्त्तव्य पालन में अपने जीवन का अन्त कर दिया। सूबेदारनी को एवं उसके सुख को वह अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करता था इसलिए उसने उत्सर्ग का यह उदाहरण हमारे सामने उपस्थित किया। लहनासिंह ने लपटन साहब के छल को समझ कर उनकी जो आवभगत की वह उसकी तुरन्त बुद्धि एवं साहस का परिचायक है। लहनासिंह का निशाना भी अचूक है। वह अच्छा योद्धा, सच्चा प्रेमी एवं कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति के रूप में हमारे

सामने आता है और अपने [illegible] की बाज़ी आप खेल जाता है। गुलेरीजी ने लहनासिंह का चरित्र बड़ा ही प्रभावशाली, पुष्ट एवं निःस्वार्थी बना है।

दूसरा चरित्र सूबेदारनी का है। बाल्यावस्था में अमृतसर में उसका एक दिन लहनासिंह से मिलाप हो गया था। लहनासिंह ने उसे घोड़े गाड़ी की चपेट से बचा लिया था। वह लहनासिंह के साहस एवं शुद्ध हृदय से परिचित हो गई थ [illegible] लहनासिंह की ओर आकर्षित तभी हुई थी क्योंकि जब ही वह २५ वर्ष की लम्बी अवधि में भी उसे नहीं भूल सकी। इसलिए उसने लहनासिंह से साक्षा-त्कार होने पर वही बचपन की मीठी स्मृति दोहराई थी। उसने लहनासिंह को याद दिलाया था— तेरी कुड़माई हो गई? धत्—हाँ हो गई—देखते नहीं रेशमी बूटों वाला सालू—अमृतसर में…………" उसका लहनासिंह पर अत्यधिक विश्वास था तथा लहनासिंह की वीरता से परिचय था इसलिए वह अपने पति एवं पुत्र की रक्षा का भार उस पर डालकर प्रसन्न हुई थी। वह लहनासिंह के निःस्वार्थ प्रेम को जानती थी और आदर करती थी। उसके हृदय के परतो में लहना का प्रेम छिपा हुआ था। इसलिए वह आदर्श प्रेमिका भी थी। सूबेदारनी हजारासिंह की कर्त्तव्य परायण पत्नी तो थी ही, उसमे नारी सुलभ भय भी था। इसलिए अपने पति एव पुत्र को युद्ध भूमि में भेजते समय वह कांप उठती है। बचपन में वह जितनी चचल थी प्रौढ़ावस्था मे वह उतनी ही गंभीर है। उसके हृदय मे पति का प्रेम एवं पुत्र का स्नेह अजस्त्र रूप मे प्रवाहित होता है।

इन दो प्रमुख पात्रो के अतिरिक्त सूबेदार हजारासिंह के चरित्र का भी अच्छा विकास हुआ है। वह वीर साहसी एवं समझदार व्यक्ति है। बहादुर एवं साहसी व्यक्ति की कद्र करना जानता है। अपने मित्र एवं शत्रु को पहिचानने की सामर्थ्य रखता है। इसीलिए लहनासिंह को घायलावस्था मे छोड़कर स्वयं मोटर में बैठकर नही जाना चाहता किन्तु बोधासिंह की सौगन्द दिलाने पर विवश हो जाता है और लहनासिंह को छोड़कर चला जाता है। वजीरासिंह विनोदी जीव है और काम से जी चुराता है किन्तु समझदार भी बहुत है इसीलिए जब लहनासिंह मृतकावस्था मे उसकी गोद मे सो रहा था तो उसने उसे अपना भाई कीरतसिंह समझ कर सम्बोधित किया था और वजीरासिंह थोड़ी देर के लिए कीरतसिंह बन गया था। लपटन साहब के चरित्र की सृष्टि लहनासिंह के चरित्र के विकास करने के लिए ही की गई प्रतीत होती है। बोधासिह का चरित्र साधारण है। इस प्रकार से इस कहानी के पात्रो का चरित्र चित्रण मनोवैज्ञानिक, पुष्ट एवं प्रभावशाली हुआ है।

स्वाभाविकता का ध्यान सर्वत्र रखा गया है । गुलेरीजी ने पात्रों के चरित्र चित्रण में अपनी निरीक्षण शक्ति, अनुभव एवं कुशलता का परिचय दिया है ।

कथोपकथन—इस कहानी में आये हुये कथोपकथन प्रभावशाली एवं सार-गर्भित हैं । इन कथोपकथनों में चरित्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी हुआ है एवं कथानक में गति भी उत्पन्न हुई है । ये कथोपकथन जैसे स्वाभाविक, उपयुक्त एवं भावात्मक हैं वैसे ही सरल, संक्षिप्त, स्पष्ट एवं मनोरंजक भी हैं । गुलेरीजी ने इन कथोपकथनों के द्वारा ही युद्ध क्षेत्र के भयानक दृश्यों का सजीव वर्णन किया है । ये कथोपकथन कहानी के बीच-बीच मे बिखरे हुए हैं इसलिए कहानी में लेशमात्र भी शिथिलता नहीं आने पाई है तथा कथानक की बिखरी हुई घटनाएं संगठित होकर एक विशेष प्रभाव उत्पन्न करने में समर्थ हुई हैं । इस कहानी के कथोपकथन रोचक हैं एवं परिस्थिति का ज्ञान कराने वाले भी हैं । गुलेरीजी ने इन कथोपकथनो में पंजाबी, अंग्रेजी एवं जर्मन शब्दों का पात्रानुकूल व्यवहार कराकर स्वाभाविकता, विश्वसनीयता एवं वास्तविकता का वातावरण बनाया है । कथोपकथनों के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं—

"तेरे घर कहां है ?"
"मगरे मे—और तेरे ?"
"माझे में—यहाँ कहां रहती है ?"
"अतरसिंह की बैठक में, मेरे मामा होते हैं।"
"मैं भी मामा के आया हूँ उनका घर गुरु बाजार में है ।"

\+ \+ \+

"मुझे पहचाना ?"
"नही ।"

तेरी कुड़माई होगई ?—"धत्-कल हो गई—देखते नहीं रेशमी बूटों वाला साल—अमृतसर में—"

अतः यह कहानी कथोपकथनों की दृष्टि से अत्यधिक प्रभावशाली है । इन कथोपकथनों में नाटकीयता के गुण भी विद्यमान हैं ।

देशकाल—इस कहानी में देशकाल का पूरा ध्यान रखा गया है । गुलेरीजी की विशाल जानकारी का वास्तविक रूप इस कहानी में प्रयुक्त देशकाल में देखा जा सकता है । अमृतसर के बम्बूकार्ट वालो की विशेषता और बोली, युद्धभूमि का वातावरण, युद्ध भूमि के खाई, खन्दक, यूरोप का जलवायु एवं शत्रुओं की पैंतरे-बाजी इन सबका बहुत ही सजीव एवं मर्म स्पर्शी वर्णन देशकाल का वास्तविक

[illegible] । [illegible] सीमा पर [illegible] है, [illegible] मिलने पर [illegible] । भारतीय सैनिकों को [illegible] कि वे उनके देश की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं इसलिए [illegible] उनसे अत्यधिक प्रेम करने लगते हैं। गुलेरीजी का यह वर्णन भी देशकाल के अन्तर्गत ही आता है। यह एक चिरन्तन सत्य है कि व्यक्ति बीमारी से कहीं भी मरे, मरने से पहले वह अपनी मातृभूमि [illegible] एवं परिजनों की याद करता है। लहनासिंह की मरणावस्था में सूबेदार से [illegible] और मृत्यु से पहले अपने जीवन की घटनाओं पर सरसरी दृष्टि डालना बहुत ही स्वाभाविक है। जर्मनों के षड्यन्त्र किसने नहीं सुने ? उनकी बर्बर लड़ाई एवं धोखेबाजी सर्व विदित है। गुलेरीजी ने उन सब घटनाओं का यथार्थ चित्रण इस कहानी में किया है। इसलिए देशकाल की दृष्टि से भी यह कहानी उच्चकोटि की बन गई है।

शैली—गुलेरीजी की वर्णन शैली रोचक, प्रवाहमयी तथा प्रभावपूर्ण है। गुलेरीजी मे प्रतिभा एवं चातुर्य दोनो ही उच्च कोटि के थे, इसलिये इनकी वर्णन शैली भी विशिष्ट प्रकार की है। इनकी इस शैली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमे एक शब्द भी अनावश्यक नही है। इस कहानी में उनकी मंजी हुई भाषा प्रयुक्त हुई है। गुलेरीजी की भाषा मे माधुर्य, ओज एवं प्रसाद गुण का सम्मिश्रण है इसलिए इनकी वर्णन शैली अवसर के अनुसार साहित्यिक एवं भावात्मक रूप धारण कर लेती है। इस कहानी मे प्रयुक्त गुलेरीजी की भाषा नितान्त स्पष्ट, व्यावहारिक तथा सरल है। इस कहानी मे व्यंग एवं हास्य का पुट भी देखने को मिलता है। गुलेरीजी की वर्णन शैली में वर्णन शक्ति एवं विवरण शक्ति दोनों का सुन्दर रूप देखने को मिलता है। इन्होंने पात्रानुकूल भाषा का सहारा लेकर शैली में स्वाभाविकता का निर्वाह किया है। इनकी वर्णन शैली की यह विशेषता है कि गूढ़ से गूढ़ भावों का स्पष्टीकरण भी सरल एवं सरस रूप से हुआ है। गुलेरीजी ने आवश्यकतानुसार उर्दू, अंग्रेजी जर्मन एवं प्रान्तीय शब्दो का प्रयोग किया है इसलिए वर्णन शैली मे रोचकता एवं स्वाभाविकता बनी रहती है। इनकी शैली चित्ताकर्षक एवं सबल है। इनकी शैली की

सभी विशेषताएँ इस कहानी में प्रयुक्त हो गई हैं, इसलिए यह कहानी उच्च कोटि की वन गई है।

उद्देश्य—इस कहानी का प्रमुख उद्देश्य चरित्र चित्रण है। गुलेरीजी ने लहनासिंह के चरित्र का इतना सुन्दर विश्लेपण किया है कि हिन्दी साहित्य में वैसा चरित्र विश्लेपण आज तक नहीं हो पाया है। मानवमन की विभिन्न अवस्थाओं का जो सफल चित्रण इस कहानी में मिलता है वह प्रभावशाली है। यह कहानी चरित्र प्रधान कहानी है। इसलिए चरित्रों का सूक्ष्म एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना ही इस कहानी का उद्देश्य रहा है। वैसे प्रायः जो कहानी का उद्देश्य मनोरंजन करना हुआ करता है वह तो इस कहानी का भी रहा ही है।

अतः यह कहानी भाव, भाषा, शैली, चरित्र विश्लेपण एवं वातावरण की दृष्टि से एक अनुपम कृति है। इसमें कहानी के सभी तत्वों का सुन्दर रूप से समावेश किया गया है। यह कहानी हृदय पर गहरा प्रभाव छोड़ने में पूर्णतः सफल रही है।

प्रश्न—"उसने कहा था" कहानी के शीर्षक के सम्बन्ध में अपने विचार प्रगट कीजिए। क्या आप इस शीर्षक से सहमत हैं ?

उत्तर—शीर्षक कहानी का महत्वपूर्ण अंग होता है। कहानी का वहुत कुछ प्रभाव इसी शीर्षक पर निर्भर रहता है। अतः कहानीकार कहानी के शीर्षक के चयन में अपनी कुशलता एवं सतर्कता दिखाया करता है। इस कहानी का शीर्षक अत्यंत संकेतपूर्ण है। विद्वानों का मत है कि कहानी का डंक उसकी पूँछ में होता है। इस कहानी का सम्पूर्ण डंक इस 'उसने कहा था' शीर्षक में है और इस उसने कहा था का रहस्य अन्त में ही खुलता है। इस प्रकार लेखक ने कहानी का सम्पूर्ण रहस्य उसने कहा था शीर्षक मे निहित रखा है। जहाँ तक आकर्षण का प्रश्न है यह शीर्षक वहुत आकर्षक है। कहानी हाथ में लेते ही प्रश्न उठता है—"क्या कहा था ? किसने कहा था ?" पाठक इसी रहस्य को जान लेना चाहता है इसलिए वड़ी लगन से इस कहानी को पढ़ना आरम्भ कर देता है। वह वम्बूकार्ट वालों का दृश्य देखता है, युद्ध भूमि का दृश्य देखता है और सिपाहियों की बातें सुनता है। कहानी समाप्त होने को आ रही है किन्तु रहस्य नहीं खुल रहा है। वह आगे वढ़ता है। जमादार लहनासिंह मरणासन्न अवस्था में पड़ा है। वजीरासिंह ने उसे अपनी गोद में सुला रखा है। लहनासिंह की स्मृति ताजा होती है। वह लाम पर जाने से पहले सरदार हजारासिंह के मकान पर ठहरा है। सूबे-

दारनी ने उसे भीतर बुलाया है । लहनासिंह असमंजस में है । सूबेदारनी उसे कैसे जानती है, सूबेदारनी पूछती है—"मुझे पहचाना तेरी कुड़माई होगई ?—धत् कल हो गई—देखते नहीं रेशमी बूटों वाला सालू—अमृतसर में ।" ओह यह तो वह लड़की है जिसकी ओर लहनासिंह बाल्यावस्था में आकर्षित हुआ था । तो इसे वह घटना अब तक याद है ?—यह सब भी मुझे भ्रम करती है । ? नहीं तो वह बात कैसे याद रखती । लहनासिंह इन विचारों में मग्न हो रहा था कि सूबेदारनी ने अपना आंचल पसार दिया—मेरे पति और एक मात्र लड़का भी लाम पर जा रहे हैं । इनकी रक्षा करना ठीक उस प्रकार जिस प्रकार मुझे अमृतसर में घोड़े गाड़ी से बचा लिया था और खुद घोड़े की लातों में चले गए थे । यहां आते ही पाठक उसने कहा था का अर्थ समझ जाता है । तो उसने लहनासिंह से उत्सर्ग करने के लिए कहा था । अच्छा यह बात है ? इसलिए लहनासिंह ने स्वयं ठण्ड झेल कर बोधसिंह को अपनी जर्सी पहनाई थी । आज भी स्वयं बुरी तरह से घायल है किन्तु उसने सरदार हजारासिंह एवं बोधासिंह को पहले गाड़ी में भेजा है और स्वयं यहां ठहर गया है। हां तो इसलिए उसने सरदार हजारासिंह से कहा है—"घर जाओ तो कह देना कि मुझसे जो उसने (सूबेदारनी ने) कहा था वह मैंने कर दिया है।" जब रहस्य खुलने लगा । तो लहनासिंह इसलिए मर रहा है कि उसे सूबेदारनी के पति एवं पुत्र को जीवित रखना है ? क्यों जीवित रखना है क्या इसीलिए सूबेदारनी ने उसे उनका भार सोंपा है ? नहीं, यही बात नहीं यह बात भी है ही किन्तु इससे भी गहरी बात एक और है। उसके बाल्यावस्था का सचित्र प्रेम आज अत्यधिक उत्तेजित हो उठा है। वह उसके रोम रोम से वह चला है—अरे वह अपनी प्रेयसी का सुहाग रखने के लिए मर रहा है दूध रखने के लिए मर रहा है । प्रेम बलिदान और त्याग ही तो चाहता है—वह अपने जीवन की बाजी लगा रहा है क्योंकि उसने कहा था ? तो इस उसने कहा था का रहस्य यह है ? पाठक की सम्पूर्ण सहानुभूति लहनासिंह पर बिखर जाती है । यह आदमी है या देवता ? कौन है जो दूसरे के लिए मरे ?- क्यो मरे ? किन्तु लहनासिंह मर रहा है । सरदार हजारासिंह और उसके पुत्र बोधासिंह को जीवित रखने के लिए मर रहा है क्योंकि सूबेदारनी ने कहा था। कौन सूबेदारनी ? हजारासिंह की पत्नी ? नहीं; वह लड़की जो उसे अमृतसर के बाजार में मिली थी—और उसने पूछा था—"तेरी कुड़माई होगई ?" "धत्" यह कह कर दौड़

गई थी किन्तु एक दिन लहनासिंह की सम्भावना के विरुद्ध उसने कहा—हाँ होगई कल; देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू। लहनासिंह ने अपनी व्यथा के कारण रास्ते भर किसी को उलटा और किसी को ढकेला तव जाकर वह घर पहुँचा था। लहनासिंह का वह दर्द आज मिट रहा है क्योंकि वह उसी लड़की के लिए मिट रहा है—वह मर रहा है क्योकि उसने कहा था क्या कहा था ? काम सौंपा था। जीवन में उसने एक ही तो काम सौंपा। लहनासिंह प्राणपन से उसे पूरा क्यों न करे ? वह उसके लिए क्या नहीं कर सकता है ? वह करने वाला होता ही कौन है ? उसकी आत्मा जो कुछ करा रही है वही वह कर रहा है। उसकी आत्मा क्या करा रही है—वही जो उसने कहा था।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि इस "उसने कहा था" में लहनासिंह की अनेक भावनाएँ लिपटी हुई है। कहानीकार लहनासिंह के चरित्र का विश्लेषण करना ही अपनी कहानी का उद्देश्य समझे हुए है। फिर प्रस्तुत शीर्पक के अतिरिक्त दूसरा कौनसा शीर्पक होता ? यह शीर्पक सम्पूर्ण रहस्यों की कुंजी है। लहना का त्याग, वलिदान, हजारासिंह एवं वोधासिंह का जीवन केवल मात्र उसी का फल है जो कुछ सूवेदारनी ने कहा था। लहनासिंह उसी के माफिक कर रहा है क्योकि उसकी आत्मा ने ऐसा करने के लिए उसे विवश कर दिया है। मृत्यु लहनासिंह से करा देना चाह रही है परन्तु लहनासिंह प्रसन्न है क्योंकि उसने वह कर दिया जो उसने कहा था। अतः लेखक ने प्रेम एवं कर्त्तव्य को इस उसने कहा था कि स्मृति में गूँथ दिया है। इस कहानी का नामकरण मुख्य पात्र लहनासिंह के जीवन की प्रमुख घटना (वाल्यावस्था में सूवेदारनी की ओर आकर्पित होने) के अनुसार हुआ है। इस शीर्पक में आकर्षण, जिज्ञासा एवं कौतूहल है। यदि कहानी यही रहने दी जाय और शीर्पक दूसरा वदल दिया जाय तो कहानी का सम्पूर्ण सौन्दर्य तत्काल नष्ट हो जाय। अतः यह शीर्षक पूर्णतः सार्थक है। इसके समान, इससे अच्छा अथवा सम्पूर्ण कहानी का रहस्य खोलने वाला अन्य शीर्पक इस कहानी का हो ही नहीं सकता है।

प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) वड़े वड़े शहरों के इक्के-गाड़ी वालों की जवान के कोड़े से जिनकी पीठ छिल गई है और कान पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के वम्वू कार्ट वालो की वोली का मरहम लगावें।

उत्तर—यह गद्यांश चन्द्रधर शर्मा गुलेरी कृत उसने कहा था नामक कहानी

में से उद्धृत किया गया है । कहानी के आरम्भ में ही लेखक ने इन पंक्तियों को लिखा है । लेखक का अभिप्राय: इन पंक्तियों को लिखने में इक्के गाड़ी वालों के चरित्र का विश्लेषण करना है । उसकी मान्यता है कि इक्के तांगे वालों के वर्ग की विशेषता लगभग एक सी है । वे चाहे किसी भी शहर में घूम रहे हों उनकी जबान वैसे ही चलती है । विशेष प्रकार के लहजे में विशेष प्रकार की गालियाँ इनके मुँह से निकलती ही रहती हैं । अतः जो व्यक्ति अन्य नगरों के इक्के गाड़ी वालों के कटु शब्दों को सुनते सुनते ऊब गए हों वे अमृतसर के बम्बू कार्ट वालों की मधुर वाणी सुनें । लेखक संकेत करता है कि यदि अन्य नगरों के इक्के गाड़ी वाले स्पष्ट गालियां निकालते हुए अपने इक्के गाड़ियों को हाँकते हुए बाजारों से गुजरते है तो अमृतसर के बम्बू कार्ट वाले उनके सामने पड़ने वाले व्यक्तियों पर व्यंग कसते हुए आगे बढ़ते है । वे ऐसे करारे व्यंग कसते है कि जिसको सुनकर व्यक्ति तिलमिला उठे । जैसे तू पुत्र को प्यारी है, तू जीने योग्य है, तेरी अभी लम्बी आयु शेष है, तुम लोग क्यों मेरे पहियों के नीचे आना चाहती हो आदि । लेखक बताना चाहता है कि गालियां तो अमृतसर के बम्बू कार्ट वाले भी देते है किन्तु बहुत मीठे ढंग से देते हैं । इसलिए उनके तीखे तानों को मरहम के समान कोमल बनाया है ।

प्रश्न (ख) आँख मारते लहनासिंह सब समझ गए ।

उत्तर—यह वाक्य चन्द्रधर शर्मा गुलेरीकृत 'उसने कहा था' कहानी से उद्धृत किया गया है। लपटन साहब ने सूबेदार हजारासिंह को दूर जर्मनों पर आक्रमण करने के लिए भेजकर सिगरेट जलाई और खाई के पहरे पर पड़े लहनासिंह को भी सिगरेट पीने के लिए दी । यह उसी समय का वर्णन है।

लहनासिंह की ओर सिगरेट बढ़ाते ही लहनासिंह के ध्यान मे यह बात पूरी तरह से बैठ गई कि यह तो लपटन साहब नही कोई जर्मन है । उस लपटन वेश-धारी ने जब सिगरेट जलाई थी तो घुटी हुई खोपड़ी देखकर लहना को थोड़ा शक हुआ था क्योंकि कल तक तो लपटन साहब के बाल थे ही । आज ही वे सहसा कैसे उड़ गए । जब लपटन साहब ने लहनासिंह को भी सिगरेट दी तो अब लहनासिंह का शक विश्वास मे बदल गया । वह पूर्णतया समझ गया कि यह जर्मन है । इसने यहाँ के सिपाहियों को ऐसी जगह भेजा है जहाँ उन पर खुले स्थान पर हमला होगा और यहां कुछ ही देर मे जर्मनी का हमला होने वाला है । इसलिए वह सिगरेट सिलगाने के लिए पेटी लाने के मिस खाई के भीतर

गया। वहां पर लोगों को सचेत किया और वजीरासिंह को सूबेदार हजारासिंह को तुरन्त वापिस लौटाने के लिए दौड़ाया। इतना सब कुछ करके वह वापस आ गया। उसकी प्रत्युत्पन्न मति ने महान् अनिष्ट को बचा लिया।

वड़े भाई साहव

लेखक—प्रेमचन्दजी

प्रश्न—लेखक का परिचय देकर वड़े भाई साहव कहानी को संक्षेप में लिखो।

उत्तर—इस कहानी के लेखक श्री प्रेमचन्दजी हैं। आपने उपन्यास एवं कहानियाँ लिखकर हिन्दी साहित्य की सेवा की है। हिन्दी में आने से पहले आप उर्दू में साहित्य सृजन किया करते थे। प्रेमचन्दजी की निरीक्षण शक्ति वड़ी प्रवल थी। इसलिए आपने कल्पना के सहारे ऐसे चित्र वनाये हैं जो वास्तविक से प्रतीत होते हैं। आपने चरित्र प्रधान कहानियाँ ही अधिक लिखी हैं। आपकी भाषा हिन्दुस्तानी थी। मुहावरेदार भाषा में पात्रों का चरित्र चित्रण करना इनकी सवसे वडी विशेषता है। यह कहानी उत्तम पुरुष में लिखी गई है इसलिए इतनी सवल नही वनी है जितनी इनकी अन्य कहानियाँ वनी हैं।

कहानी संक्षेप—वड़े भाई साहव मेरे से पाँच वर्ष वड़े थे और मेरे से तीन क्लास आगे थे। हम दोनो ही होस्टल में रहते थे। वड़े भाई साहव मुझे हमेशा पढ़ाई के सम्वन्ध में डाँटते फटकारते रहते थे; वे हमेशा पुस्तक तो खोले हुए रहते थे किन्तु अपनी कापी में अन्ट सन्ट लिखा करते थे। मैं भाई साहव के भय से अपना ऐसा टाइम-टेवल वनाया करता था जिसमें खेलने का भय विल्कुल नहीं रहता किन्तु उस टाइम-टेवल के अनुसार कार्य विल्कुल नहीं किया करता था और भाई साहव की आँख वचाकर खेलता रहता था। वड़े भाई साहव अपने भाषण की मशीनगन छोड़ते हुए कहते अंग्रेजी वड़ी कड़ी भाषा है। वहुत सिर पचाने पर भी यह भाषा मस्तिष्क में नहीं वैठती। वड़े वड़े पढ़क्कड़ ची वोल जाते हैं फिर तुम्हारी क्या औकात है। मैं मुँह लटकाये सव कुछ सुनता रहता था।

सालाना परीक्षा में मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। जव मैं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ और वड़े भाई साहव अनुत्तीर्ण हो गए। मुझे अपने पर कुछ अभिमान भी हुआ। अव छूटपट्टा खेलने लगा किन्तु भाई साहव ने मुझे फिर डाटा—"कमाल की वात है, तुम पास क्या हो गये मानों कोई राज पा लिया। घमंड करना अच्छी वात नहीं है। रावण तक घमंड के कारण विनष्ट हो गये

है । मैंने फिर सोचने का विचार छोड़ दो क्योंकि मेरी कक्षा का कोर्स इतना विशाल और कठिन रखा है कि इस स्थान में पढ़ना कर तुम एक कुछ अक्षर भी याद नहीं रख सकोगे । इतिहास तो याद होता ही नहीं क्योंकि एक ही नाम के अनेक व्यक्ति हो गए हैं जिनके जीवन की घटनाएँ याद रखना टेढ़ी खीर है ।" मैंने डर कर फिर कुछ पढ़ना आरम्भ किया किन्तु मैं इतना ही पढ़ता था जितने समय में स्कूल का दिया हुआ काम पूरा हो जाता ।

वार्षिक परीक्षा में इस बार भी मैं प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुआ और भाई साहब अनुत्तीर्ण हो गए । वे रो पड़े और उनकी देखादेखी मैं भी रो पड़ा । अब भाई साहब बहुत नरम पड़ गए थे और मेरी शैतानी बढ़ गई थी । उनके और मेरे बीच मे केवल एक कक्षा का ही अन्तर तो रह गया था। वे नवीं में ही पढ़े थे और मैं आठवी कक्षा मे आ गया था । यदि भाई साहब एक बार और फेल हो जाते तो हम दोनों एक ही कक्षा मे होते । ऐसा विचार मेरे मन मे बार बार आया था किन्तु मैंने इसे नीच विचार समझ कर त्याग दिया था । मुझे अब पतंगबाजी का नया चाव लग गया था । मैं पतंगबाजी की योजनाओं मे ही अटका रहता था । एक दिन होस्टल के बाहर मैं एक पतंग के पीछे दौड़ रहा था कि भाई साहब उधर से आ टपके । उन्होंने मुझे बुरी तरह से फिर डांटा कि क्या तुम बाजारू लौंडो की तरह धेले के पतग के पीछे दौड़ रहे हो । आदमी को अपनी पोजीशन का विचार तो रखना ही चाहिए। मैं उनकी यह दलील सुनकर पानी पानी हो गया किन्तु इसी समय एक कटा हुआ पतंग उधर से गुजरा और स्वयं भाई साहब उसकी डोर पकड़ कर होस्टल की ओर तेज गति से दौड़ पड़े । मैं भी उनके पीछे दौड़ा और बहुत से लड़के हमारे पीछे दौड़े ।

प्रश्न—कहानी के कौन कौन से तत्व होते हैं ? बड़े भाई साहब नामक कहानी की इन तत्वों के आधार पर आलोचना करो ।

उत्तर—विद्वानो ने कहानी के ६ तत्व माने है जो इस प्रकार है—(१) कथावस्तु (२) पात्र (३) कथोपकथन (४) देशकाल (५) शैली एवं (६) उद्देश्य । "बड़े भाई साहब" नामक कहानी स्वर्गीय श्री प्रेमचन्दजी की अनुपम कृति है । यह कहानी उत्तम पुरुष मे लिखी गई है ।

कथावस्तु—इस कहानी की कथावस्तु बहुत ही छोटी है किन्तु लेखक की प्रतिभा ने इसमे भी प्राण डाल दिये है। मुख्य रूप से दो बाते है: पहली यह कि बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई को डाँटना डपटना अपना जीवन सिद्ध अधिकार

समझते है । दूसरी बात यह है कि बड़े भाई साहब पढ़ने मे रात दिन एक करके भी अनुत्तीर्ण ही होते है और छोटा भाई अपना अधिकांश समय खेल कूद में बिताकर भी श्रेणी में प्रथम आता है । कहानी उत्तम पुरुष में लिखी गई है इसीलिए छोटा भाई बड़े भाई साहब के स्वभाव की विशेषताओं से कहानी का आरम्भ करता है तथा कहानी का अन्त भी उसी के वर्णन से होता है । ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक कथानक को आगे धकेलना चाह रहा है और स्वयं कथानक पिछड़ता जाता है । लेखक कथानक की इस कमजोरी को लम्बे लम्बे भाषणों के सहारे छिपाता सा प्रतीत होता है ।

पात्र—इस कहानी मे केवल दो ही पात्र हैं एक छोटा भाई और दूसरा बड़े भाई साहब । किन्तु लेखक ने इन दोनों चरित्रों का अच्छा विश्लेषण किया है । छोटा भाई खेल कूद में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करता है और बड़े भाई साहब पुस्तक खोले ही बैठे रहते है किन्तु बड़े भाई साहब का भी चित्त पढ़ने मे कम ही लगता है क्योंकि वे अपनी कॉपियों पर अन्ट सन्ट लिखा करते हैं और विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनाया करते है । लेखक ने बहुत ही कुशलता पूर्वक यह संकेत किया है कि बड़े भाई साहब जैसे दिखाई देते हैं वैसे है नहीं । वे तो अपने छोटे भाई के सामने पढ़ते रहने का आदर्श स्थापित करने की भावना से पुस्तक खोल कर बैठ जाते हैं—पुस्तक में से उनके पल्ले या तो कुछ पड़ता ही नही है और यदि पड़ता है तो बहुत कम पड़ता है। इसलिए वे रात दिन घोटा लगा कर भी वार्षिक परीक्षा में अनुत्तीर्ण ही होते है । छोटा भाई बहुत कम पढ़ता है किन्तु फिर भी वार्षिक परीक्षा में अच्छा डिवीजन ले आता है । इसका कारण उसकी स्मरण शक्ति भी हो सकती है और ध्यानपूर्वक मनन भी हो सकता है । बडे भाई साहब प्रत्येक कक्षा मे दो दो तीन तीन वर्ष तक अटकते हैं । अतः उनका मस्तिष्क ठस ही है। पढ़ने में मस्तिष्क ठस होने पर भी वे अपने छोटे भाई के संरक्षक है और उसे डाँटना फटकारना अपना कर्त्तव्य एवं अधिकार समझते हैं । इसीलिए वे उसे डाँटते फटकारते रहते है किन्तु वार्षिक परीक्षाफल घोषित होने पर कुछ दिनों के लिए उन पर मुर्दनी छा जाती है और वे ढीले पड़ जाते हैं किन्तु छोटे भाई की खेल कूद की मनोवृत्ति इन्ही दिनों मे फलती फूलती है । प्रेमचन्द जी को मानव प्रकृति का सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन था इसलिए उन्होंने अपनी रचनाओ मे जीवन के सच्चे एवं तीखे चित्र खीचे हैं। इस कहानी मे भी बड़े भाई का मार्मिक चित्र उपस्थित किया है ।

कथोपकथन—कथोपकथन का कहानी में बहुत महत्व होता है। कथोप-कथन कथानक में गति उत्पन्न तो करता ही है साथ ही चरित्र चित्रण भी करता है। कहानी के बीच में कथोपकथन का प्रयोग होने से कहानी में शिथिलता का दोष नही आया करता है। यह कहानी उत्तम पुरुष में कही गई है। इसलिये इसमे विवरण प्रधान हो गया है। कथोपकथन लेश मात्र भी नहीं पनपा है। बड़े भाई साहब के लम्बे लम्बे भाषणो मे ही इस कहानी का अन्त हुआ है। उत्तम पुरुष मे कही जाने वाली कहानी मे कलात्मकता बहुत कम रह जाती है। यही दोष इस कहानी मे भी आगया है। बड़े भाई साहब सिद्धान्तो का प्रतिपादन करते रहते है जो कभी कभार तो ऊबा देने वाला होता है। यह बात नही है कि उत्तम पुरुष मे कही गई कहानी मे कथोपकथनो के लिए स्थान ही नही है। कितनी ही ऐसी कहानियां हिन्दी साहित्य में हैं जो उत्तम पुरुष मे भी कही गई है और कथोपकथन की दृष्टि से भी अच्छी बन पड़ी है किन्तु यह कहानी कथोपकथनों की दृष्टि से बडी कमजोर है।

देशकाल—देशकाल का इस कहानी मे अच्छा निर्वाह हुआ है। बड़े भाई साहब जो कुछ कहते है उसमे देशकाल स्पष्ट हो जाता है। आज के तीस चालीस वर्ष पहले मिडिल पास लड़कों को पुस्तक पढने तक का ढंग नही आता। यूरोप के इतिहास का जो वर्णन बड़े भाई साहब ने किया है वह भी तथ्य पूर्ण है। हेनरी एवं चार्ल्स नामक इतने सम्राट हो गए हैं कि उनके नाम के आगे प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ आदि लगा कर उनका श्रेणी विभाजन किया जाता है। इनके सन् सम्वतो को रटता रटता विद्यार्थी वेहाल हो जाता है। फिर भी कहीं न कहीं चूक ही जाता है और चूकते ही चारो खाने चित आता है। विद्यार्थियों के लिये एलजब्रा, जामेट्री भी प्राणलेऊ विषय रहे है। कोई एलजब्रा में चल निकलता है तो जामेट्री मे ठप हो जाता है और जामेट्री में चल निकलता है तो एलजब्रा मे ठप हो जाता है। कोई ऐसा भाग्यशाली विद्यार्थी निकलता है जो सब विषयो को सुविधापूर्वक समझ पाता है। अतः बड़े भाई साहव बहुत ही बुद्धिमानी से एक तो अपने अनुत्तीर्ण हो जाने की सफाई पेश कर देते है और दूसरी ओर छोटे भाई के सामने पढ़ाई का होना उपस्थित कर देते हैं। प्रायः ऐसा होता भी आया है। प्रत्येक आगे की कक्षा का छात्र पीछे की कक्षा के छात्र के सामने अपनी डीग हाँकने के लिए अथवा अपनी विद्वत्ता दिखाने के लिये अथवा पढ़ाई का हौवा बनाने के लिए कुछ ऐसी बातें करता है कि पीछे की कक्षा के छात्र की

हिम्मत टूटने लगती है। यहाँ बड़े भाई साहब की बातें भी कुछ इसी प्रकार की रही है। माता-पिता की अनुपस्थिति मे बड़ा भाई ही छोटे भाई-बहिनों पर हावी रहता है। इस कहानी मे दोनों भाई ही होस्टल में रहते थे। इसलिए बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई को देख रेख के जुम्मेवार थे। फिर भला वे उसे डाटने डपटने से बाज क्यो आते। लेखक ने इस डाट डपट मे अनेक प्रकार के हलके और गहरे रंग भरे है जिनसे मानव के व्यक्तित्व का अच्छा विश्लेषण हो पाया है। छोटे बच्चे खेलकूद मे मस्त रहते है। स्कूल आने के पश्चात् पुस्तकों को उठाकर देखना उनके स्वभाव के विरुद्ध है किन्तु बड़े लड़के और ऐसे बड़े लड़के जो एक ही कक्षा मे दो दो तीन तीन बार अनुत्तीर्ण होकर रेंगते हुए आगे बढ़ते है अपने पर से विश्वास गंवा बैठते है। वे पुस्तकों मे ही उलझे रहते है किन्तु फिर भी परिणाम मे सिफर की सिफर रहती है। अतः उनका पढ़ाई से भयभीत होना स्वाभाविक है और फिर यह तो और भी स्वाभाविक है कि प्रतिकूल परीक्षा फल सुनते ही रो पड़ें। इसमे भी स्वाभाविक उनका यह कहना होता है कि भाग्य से कौन जीत सकता है, हम पढ़ कर भी फेल हो गए और अमुक खेलकर भी पास हो गया। इस कहानी में इसी तथ्य का विश्लेषण अधिक हुआ है।

शैली—प्रेमचन्दजी की शैली व्याख्यात्मक एवं व्यंग्यात्मक दोनों ही प्रकार की है। जब वे किसी सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं तो उनकी शैली व्याख्यात्मक होती है किन्तु जब उन्हें कोई चुभती हुई बात कहनी होती है तो वे व्यंग्यात्तमक शैली का सहारा लेते है। इस कहानी में व्याख्यात्मक शैली का ही प्रयोग हुआ है। बड़े भाई साहब छोटे भाई की चुटकी अवश्य काटते हैं किन्तु इस चुटकी में तिलामिला देने वाली शक्ति नहीं रहती—डरा देने वाली बात रहती है जिसकी लम्बी चौड़ी भूमिका बांधी जाती है। व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग अधिकतर कथोपकथन का पूर्णतया अभाव ही रहा है। फिर भी लेखक की व्याख्यात्मक शैली का अच्छा रूप इस कहानी मे प्रयुक्त हुआ है। श्री प्रेमचन्दजी की भाषा में उर्दू फारसी के शब्दों का प्रयोग अधिक मिलता है। संस्कृत के तत्सम एवं अर्ध तत्सम शब्दों का प्रयोग उनके द्वारा प्रायः कम ही हुआ है। वे "हिन्दुस्तानी" ही लिखा करते थे। इसलिए उनकी भाषा मुहावरेदार चुस्त एवं गुदगुदा देने वाली होती है। इस कहानी में उनकी भाषा का यही रूप प्रयुक्त हुआ है।

उद्देश्य—इस कहानी का उद्देश्य यह बताना रहा है कि बालक

आखिर बालक ही होते है। चार छः वर्ष का आयु मे अन्तर होने से ही उनमें कोई विशेष अन्तर नही आ जाता है। वडे भाई साहब अपने छोटे भाई को इस-लिए डाट रहे थे कि वह आठवी कक्षा का विद्यार्थी होकर भी एक धेले के पतंग के पीछे दौड़ रहा था। उसे अपनी पोजीशन का थोड़ा सा भी ध्यान नहीं रहा किन्तु वे ही बडे भाई साहब स्वयं एक धेले के पतंग की डोर का तुक्कड़ पकड़ कर होस्टल की ओर तीव्र गति से दौड पड़े। इस कहानी का अन्त लेखक ने बहुत ही मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है। जो लालच छोटे भाई के मन को उद्विग्न कर रहा था उसी लालच ने बड़े भाई साहब को होस्टल की ओर वेह-ताशा दौडाकर छोड़ा। दोनो बच्चे ही तो थे। दोनों मे बालक का हृदय था किन्तु बड़े भाईसाहब अपने छोटे भाई के सम्मुख अपना आदर्श जीवन रखने के लिए उस हृदय को उछल कूद नही मचाने देते थे किन्तु जैसे ही कटे हुए पतंग की डोर उन पर से गुजरी—हृदय वे काबू हो गया और वे भी वही कर बैठे जिसके लिए वे छोटे भाई को डाट डपट रहे थे।

प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए।

(क) उन्होंने भी उसी उम्र मे पढना शुरू किया था जब मैंने शुरू किया लेकिन तालीम जैसे महत्व के मामले में वह जल्दबाजी से काम लेना पसंद न करते थे। इस भवन की बुनियाद खूब मजबूत डालनी चाहते थे, जिस पर आली-शान महल बन सके। एक साल का काम दो साल मे करते थे। कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे। बुनियाद ही पुख्ता न हो तो मकान कैसे पायेदार बने।

उत्तर—यह गद्याश प्रेमचन्दजी कृत बड़े भाई साहब कहानी से उद्धृत किया गया है। कहानी के प्रारम्भ मे ही छोटा भाई अपने बड़े भाई साहब के व्यक्तित्व का परिचय देता हुआ कह रहा है—

बड़े भाई साहब ने भी मेरी आयु में ही पढना आरम्भ किया था किन्तु उन्होने अपनी प्रगति को बहुत धीमी रखा है। विद्या पढ़ने जैसे मामले में उन्होंने मेरे समान जल्दी जल्दी कक्षाओं को पास करके जल्दबाजी का परिचय नहीं दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे उसकी नीव खूब पक्की डालना चाहते रहे है जिस पर उन्हें ऊँची डिग्रियों का महल बनाना है। इसलिए एक ही कक्षा में दो दो वर्ष लगा देते है कभी कभी तो तीन वर्ष तक वे एक ही कक्षा में ठहर जाते है। उनका विचार यह है कि यदि नीव ही पक्की नही होगी तो मकान मजबूत कैसे बनेगा अर्थात् यदि वे जो कुछ पढ़ते है उसे पक्का याद न कर लेंगे तो आगे चल कर क्या कर सकेगे।

विशेष—इस गद्यांश मे व्यंग है। लेखक यह कहना चाह रहा हैं कि बड़े भाई साहब का मस्तिष्क बहुत कम काम देता है। वे एक ही कक्षा में कम से कम दो बार तो अनुत्तीर्ण होते ही है। कभी-कभी तीन बार भी अनुत्तीर्ण हो जाते है जबकि उनका छोटा भाई एक ही वर्ष में प्रत्येक कक्षा में उत्तीर्ण होता चला आ रहा हैं।

(ख) हमेशा एक नंगी तलवार सी लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच में भी आदमी मोह और माया के जीवन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल कूद का तिरस्कार न कर सकता।

उत्तर—ये पंक्तियाँ प्रेमचन्दजी कृत बड़े भाई साहब नामक कहानी से उद्धृत की गई है। छोटा भाई अपने बड़े भाई साहब की डाट फटकार से बहुत डरने लगा था, किन्तु फिर भी उसके हृदय में खेलने की तीव्र इच्छा रहती थी। वह खेलने चला ही जाता था और फिर चुपचाप कमरे में प्रविष्ट होता था। उसे अपने बड़े भाई साहब की दृष्टि कैसी लगती थी, किन्तु फिर भी वह क्या करता था, इसी का वर्णन वह कर रहा है—

बड़े भाई साहब की दृष्टि उस नंगी तलवार की भाँति थी जो टँगी रहे और उसके नीचे जाने वाले व्यक्ति को यह भय सदैव बना रहे कि न जाने यह कब पड़ जायगी और कब कोई गहरा घाव कर देगी। यही अवस्था बड़े भाई साहब की दृष्टि की थी। वह न जाने मेरे पर कब पड़ जाय और वे मुझे बुरी तरह से डांटने लगें, किन्तु इतना भय होने पर भी मैं खेलने जाता था। मुझसे खेले बिना रहा ही नही जाता था। मेरी भी ठीक वही दशा थी जो उस मनुष्य की होती है जो यह जानता है कि वह मृत्यु और विपत्ति में फँसा हुआ है। वह कभी भी मर सकता है, कभी भी उस पर भयंकर विपत्ति आ सकती है। यह जानते हुए भी वह अपने सांसारिक सुखों के मोह को नहीं छोड़ता है। वह माया के वश में होकर अपनी मृत्यु एवं विपत्ति की शाश्वता को भूल सा जाता है। मैं भी खेल की खुशी में बड़े भाई साहब की डाट फटकार सह लेता था, किन्तु फिर खेलने ही चला जाता था।

(ग) आँखें आसमान की ओर थी और मन उसका आकाशगामी पथिक की ओर जो मन्द गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था कोई आत्मा स्वर्ग से निकल कर विरक्त मन से नये संस्कार ग्रहण करने जा रही हो।"

उत्तर—ये पंक्तियाँ सियारामशरण जी की काकी नामक कहानी से उद्धृत की गई हैं। काकी कथा में श्यामू नामक छोटा भाई एक कटी हुई पतंग के पीछे दौड़ रहा है। वह उसी समय का वर्णन कर रहा है—

मैं उस कटी हुई पतंग का पीछा करने के लिए आसमान में झोंके खाती हुई पतंग के पीछे दौड़ रहा था। मैं देख तो रहा था। आसमान की ओर किन्तु मेरा मन उस झोंके खाती हुई पतंग पर ही टिका हुआ था जो शनैः शनैः नीचे उतर रही थी। उस कटी हुई पतंग का नीचे की ओर आना ऐसा लग रहा था मानों कोई स्वर्ग की आत्मा पृथ्वी पर नये संस्कार ग्रहण करने के लिए आ रही हो। विरक्त मन यहां इसलिये प्रयुक्त हुआ है कि पतंग को इस बात की चिन्ता नहीं रहती कि वह किसके हाथ में पड़े, किसकी झाड़ी अथवा बाग में अटके। उसके लिए सब ही लुटेरे एक समान होते हैं। कोई भी उसे लूट ले। लुटेरा उस पतंग को अपने ढंग से रखेगा। अतः उस पतंग के संस्कार भी उस लुटेरे के हाथों ही बनेंगे। आत्मा जब किसी देह में प्रविष्ट होती है तो उस देह के अनुसार ही उसका ह्रास एवं विकास होता है। इस प्रकार गिरते हुए पतंग का साम्य आत्मा के देह धारण करने से दिखाया गया है।

एक गौ

लेखक—जैनेन्द्रकुमार जी

प्रश्न—एक गौ की कहानी संक्षेप में लिखो।

उत्तर—हीरासिंह हरियाना का एक गाँव का रहने वाला ऐसा व्यक्ति था जिसके घराने की इज्जत एव खुशहाली दो पीढ़ियों पहले खूब अच्छी थी, किन्तु शहरों के विकास ने गावो को उजाड़ बना दिया है। हरियाना के पशुओ की नस्ल बहुत अच्छी मानी जाती है। हीरासिंह के पास सुन्दरिया नामक बहुत ही सुन्दर गाय थी, जिसको हीरासिंह का लड़का जवाहरसिंह मौसी कह कर सम्बो-धित करता था। यह गाय हीरासिंह की बढ़ती हुई गरीबी के कारण भार बनती जा रही थी। इस गाय की कीमत भी दो सौ रुपये लग गई थी। किन्तु हीरासिंह से वह बेची नहीं गई। गाँव के पटवारी को वह अपनी इतनी सुन्दर गाय कैसे बेचता? हीरासिंह गरीबी से दब कर दिल्ली चला गया और उसने एक सेठ के यहाँ पहरेदारी की नौकरी कर ली।

एक दिन सेठ जी ने हीरासिंह से हरियाना की कोई बढ़िया सी गाय जो १५ सेर दूध देने वाली हो लाने के लिए कहा। हीरासिंह को सुन्दरिया तो

बेचनी ही थी क्योंकि गरीबी के कारण उसका पालन पोषण अच्छा नहीं हो रहा था इसलिये उसने उसी गाय की बात चलादी। सेठजी प्रसन्न होगए। उन्होंने हीरासिंह को गाय लाने के लिए दो सौ रुपये देकर गांव भेज दिया। हीरासिंह चार पांच दिन में गाय लेकर लौट आया। उसकी गाय बहुत ही सुन्दर थी। सेठजी का जी उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। हीरासिंह ने पूरा पन्द्रह सेर दूध गाय के थनों से निकाल कर सेठजी के हवाले कर दिया। सेठजी बहुत प्रसन्न थे। वे ऐसी ही सुन्दर, सुडौल और १५ सेर दूध की गाय चाहते थे। उन्होने उस गाय को घोसी को सम्हला दी। पहले तो गाय घोसी के साथ जाने में अड़ी किन्तु हीरासिंह ने समझा बुझा कर उसे भेज दिया। फिर वह दूध देने में अड़ती रही। कभी पाँच सेर दूध दे देती और कभी ६ सेर। सेठजी के पास गाय की शिकायतों पर शिकायतें आने लगीं और सेठजी हीरासिंह की ईमानदारी पर अविश्वास करके अन्ट सन्ट कहने लगे। हीरासिंह की आत्मा बहुत दुखी थी। एक तो सुन्दरिया जैसी गाय बेचने का दुःख, यह दुःख उसने सहा तो ताने सुनने का दुःख। वह बहुत परेशान था। एक दिन ड्योढ़ी में बहुत सारा दूध ढुला हुआ मिला। अनेक प्रकार की चर्चाएँ हुईं। दूसरे दिन आहट पाकर हीरासिंह जाग गया। उसने अपनी सुन्दरिया को वहाँ खड़ी हुई देखा। उसकी ममता से खिंच कर वह वहां आई थी। उसने सुन्दरिया को बहुत समझाया बुझाया कि अब वह उसका मालिक नहीं रहा है। सेठजी मालिक हो गए हैं क्योंकि उसने उसको खरीद लिया है किन्तु गाय के यह बात समझ में नहीं आई कि जो उसको इतना प्रेम करता है वह उसका मालिक क्यों नहीं है। हीरासिंह की ममता इतनी उफनी कि वह उस गाय से लिपट कर रो पड़ा। रात्रि को तो उसने गाय को समझा बुझा कर खूंटे पर भेज दिया किन्तु दिन निकलते ही उसने सेठजी से प्रार्थना की कि वे अपने रुपये उसके वेतन में से काटते रहें और गाय उसको वापस लौटा दें। सेठजी ने गाय दो सौ में खरीदी थी किन्तु अढ़ाई सौ रुपयों का कागज लिखा कर हीरासिंह को सम्हाल दी जिसे हीरासिंह तत्काल गांव की ओर लेकर चल पड़ा।

प्रश्न—भाव, भाषा एवं चरित्र चित्रण की दृष्टि से 'एक गौ' की आलोचना कीजिए।

उत्तर—"एक गौ" नामक कहानी के लेखक श्री जैनेन्द्र कुमार हैं। जैनेन्द्र कुमारजी हिन्दी कहानी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनके भाव,

इनकी भाषा एवं इनके चरित्र चित्रण का ढंग हिन्दी कहानी साहित्य की अमूल्य निधि है। "एक गौ" नामक कहानी में इन्होंने पशु की आत्मीयता का विश्लेषण बहुत ही मार्मिक ढंग से किया है। मानव अपनी गरीबी में संज्ञाशून्य सा हो जाता है। पेट का सवाल इस विश्व में सबसे बड़ा सवाल है। इस पेट के सवाल की समस्या को प्रत्येक मानव को अपने ढंग से सुलझानी पड़ती है और इस समस्या को सुलझाने में उसे अपनी भावनाओं को मसोसना पड़ता है, अपनी अभिलाषाओं को सीमित बनाना पड़ता है इतना सब कुछ करने पर भी यदि उसे कुछ ऐसा सुनना पड़े जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी अथवा ऐसा सहना पड़े जिसके बोझ से उसकी आत्मा ही घुट जाय तो वह निश्चित रूप से कराह उठता है। हीरासिंह गरीबी के कष्ट से मुक्ति पाने के लिए सेठ का ड्योढ़ीवान बना। अपनी पुत्रवत् पालित गाय को उसने बेचा। पूरी ईमानदारी के साथ सेठ की सेवा करना चाहा किन्तु प्रतिदान मे उसे जो कुछ मिला—वह था शंका एवं स्वार्थ का व्यवहार उससे उसकी आत्मा कराह उठी। कलाकार जैनेन्द्र कुमारजी ने इस कहानी की भाव व्यंजना इतनी मार्मिक एवं सूक्ष्म रखी है कि मानव के मानस की सुप्त व्यथा तिलमिला कर कराह उठती है। लेखक की भाव व्यंजना तीखी और हृदय को कुरेदने वाली है। पशु के वाणी नही होती यदि उसके वाणी हो तो वह अपने हृदय की व्यथा ठीक उसी ढंग से व्यक्त करे जिस ढंग से इस "गौ" के द्वारा लेखक ने करवाई है। पैसे और प्रेम का अन्तर मनुष्य ही नही जानता है पशु भी जानता है। यह बात दूसरी है कि वह उस अन्तर को बोल कर नहीं समझा सके किन्तु वह इसे समझाने का प्रयत्न अवश्य करता है, अपने हाव भावों के द्वारा समझाने का प्रयत्न करता है। सेठ ने गौ को कुछ चांदी के टुकड़ों में खरीद कर घोसी को इस प्रकार सम्हाल दी जिस प्रकार कोई हृदय हीन व्यक्ति भेड़ को किसी कसाई को सम्हाल देता है जिससे उसकी अधिक से अधिक ऊन उतारी जा सके। उस व्यक्ति का उद्देश्य केवल मात्र ऊन उतरवाना रहता है और कसाई का ध्येय केवल मात्र ऊन उतारना फिर भेड़ उछल कूद क्यों न करे? क्यों वह चुपचाप उनके उद्देश्यो को पूरा होने दे जिनसे उसे आत्मीयता एवं प्रेम नही मिला है। सुन्दरिया गाय को सेठ और घोसी से ऐसा क्या मिला था जिससे वह पावसती? उसने भी दूध नही दिया। वह दूध क्यों देती? उसकी इच्छा दूध देने की हुई ही नही। हीरासिह ने उसे बेच दिया था वह बिक गई थी इस

लिये सेठ के खूँटे से बँधी रहती थी किन्तु उसकी आत्मा तो अब भी हीरासिंह की सेवा और प्रेम से बँधी हुई थी। जब हीरासिंह ने उसे दुहा तो पूरा पन्द्रह सेर दूध हुआ और जब घोसी ने उसे दुहा तो दूध की मात्रा घट कर चार पांच सेर ही रह गई। सुन्दरिया के थनों से दूध उतरा ही नही। घोसी अनुनय विनय करके हार गया। डरा धमका कर हार गया और यहाँ तक कि मारपीट कर भी हार गया किन्तु सुन्दरिया की गादी का दूध वर्तन में नहीं उतार सका किन्तु हीरासिंह के हाथ लगते ही फिर पूरा तेरह सेर दूध सुन्दरिया की गादी से चू पड़ा। यह क्यों ? गाय भी दुभांत करती है ? गाय दुभांत क्यों न करे ? गाय के वाणी ही तो नही है, आत्मा तो उसके भी है। उसमें भी तो अनुभव की शक्ति है। वह भी तो अपने और पराये का अन्तर जानती है। वह भी उसी समय पावसती है जब उसकी आत्मा का अपनेश उभल पड़ता है और यह अपनेश भी अपनों के प्रति ही उभलता है अन्यों के प्रति नहीं। लेखक ने इन्हीं भावों की सृष्टि इस कहानी में की है। सुन्दरिया ने ड्योढ़ी में अपना दूध विखेर दिया किन्तु सेठ के प्रतिनिधि घोसी को उसने अंगूठा ही वताया। वह बिकी थी उसकी आत्मा थोड़े ही बिकी थी। आत्मा कभी विकती ही नहीं है। मानव की ही नही पशु की आत्मा भी नही बिकती है। लेखक ने पशु मनोविश्लेषण का भी इस कहानी में मार्मिक चित्र अंकित किया है।

मनुष्य केवल मात्र अपने स्वार्थो के प्रति जागरूक रहता है। जब कभी उसके स्वार्थो की पूर्ति में कोई व्यवधान उपस्थित होता है तो उसकी शंकालुवृत्ति मानवता की सीमा लांघ जाती है। सुन्दरिया गाय ने जब १५ सेर दूध नहीं दिया तो सेठजी की शंका इस रूप में जाग्रत हुई कि हीरासिंह ने कोई दवा पिला कर सुन्दरिया के थनों से १५ सेर दूध दिया था। यह उसकी रुपये ठगने की चाल थी। जब ड्योढ़ी मे दूध बिखरा हुआ मिला तो यह शंका और भी पक्की होगई और ईमानदार हीरासिंह वेईमान की कोटि में रख दिया गया। सेठजी की हीरासिंह के प्रति सद्भावना मिटने सी लग गई। यह क्यों ? क्या हीरासिंह ने सेठ से कोई छल किया था ? वह देहाती क्या छल करता ? अपने मालिक से छल करना महान् पाप होता है। हीरासिंह का देहाती मस्तिष्क यह वात खूब अच्छी तरह से जानता था। उसने तो सुन्दरिया गाय नही वेची थी अपनी आत्मा का एक अंश अपने मालिक सेठ को भेंट किया था। उसकी भावना पवित्र थी। किन्तु सेठजी ने दो सौ सात रुपये के वदले हीरासिंह से अढ़ाई सौ रुपयों का तावान भरवा कर

अपनी कुत्सित भावनाओं का परिचय दिया। यह उनके व्यक्तित्व का खोखलापन था। लेखक ने इन सभी भावों को एक लड़ी में गूंथ कर समाज की मनोवृत्ति का एक स्वस्थ चित्र पाठक के सामने उपस्थित किया है।

श्री जैनेन्द्र कुमारजी की भाषा विषयानुकूल हुआ करती है। आप अपनी भाषा में देशज एवं ग्रामीण शब्दों का प्रयोग भी खूब करते है। वैसे इनकी भाषा में तत्सन शब्दों का प्रयोग ही अधिक देखने को मिलता है किन्तु इन्हें तत्सम शब्दों का प्रयोग करने की धुन हो ऐसी बात भी नही है। इसी का यह परिणाम है कि इनकी भाषा में तद्भव शब्दों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। इन्होंने उर्दू, फारसी के शब्दों को भी अपनाया है। जहां कही इन्होने मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया है वहां पर इन्होने तद्भव एवं फारसी के शब्दो का ही सहारा लिया है। इनकी भाषा मंजी हुई अवश्य है। उस भाषा पर इनकी अपनी मोहर है। बात कहने का इनका अपना ढंग है उस अपने ढंग को यह भाषा के बल पर कायम रखते हैं। एक ही कहानी में इनकी भाषा के अनेक प्रकार के नमूने मिल सकते हैं। नीचे लिखे उदाहरण इस कथन की पुष्टि में दिये जाते हैं—

(क) ऐसे नाहक रार के बीज बढ़ जायेंगे और क्या ?

(ख) चुनांचे हीरासिंह भी अपने बाप दादों के समान जरूरी आदमी अब नही रह गया है।

(ग) ऐसी मन सुई बाते औरों से कहना।

(घ) सुन्दरिया तू मेरी असवाई क्यों कराती है।

जैनेन्द्रकुमार जी को अपने पात्रो के चरित्र चित्रण में सराहनीय सफलता मिली है। इनके पात्र लेखक की कठपुतली मात्र न रह कर अपना स्वाभाविक विकास करते हैं। जैनेन्द्र कुमारजी सभी पात्रों को अपने हृदय की सहानुभूति प्रदान करने की चेष्टा करते रहते हैं। यह चेष्टा पात्रों में सजीवता तो लाती ही है साथ साथ ही उनमे कृत्रिमता आने से रोकती है। इस "एक गौ" नामक कहानी के प्रमुख रूप से तीन ही पात्र है। ये पात्र हीरासिंह, सेठजी तथा सुन्दरिया गाय है। इन तीनो पात्रों के चरित्रों का चित्रण एक विशेष दृष्टिकोण को सामने रख कर किया है। सेठजी व्यापारी आदमी है। वे अपने इस व्यापारी फिरके का तो प्रतिनिधित्व करते ही है, साथ मे ही अपने संस्कारों का भी परिचय देते हैं। व्यापारी आदमी प्रत्येक वस्तु को अपने स्वार्थ की तुला पर तौलता है। सेठजी एक सुन्दर, स्वस्थ और १५ सेर दूध की गाय चाहते थे। हीरासिंह ने अपनी

गाय उन्हें बेचकर उनकी इस अभिलाषा को पूर्ण किया। गाय को और गाय के दूध को देखकर सेठजी का जी खुश हो गया। हीरासिंह उनकी दृष्टि में सच्चा और काम का आदमी जँचा किन्तु उनकी इस विचारधारा की मजबूती का खोखलापन उस समय हमारे सामने आया जब गाय के कम दूध देने की बात सेठजी के कानों में पड़ी। सेठजी का स्वाभाविक शंकालु स्वभाव स्पष्ट हो गया। वे व्यापारी जीव थे। उन्होंने व्यापारी दृष्टि से ही हीरासिंह को भी आंका—'यह तुम मुझे धोखा तो नहीं देना चाहते ? गाय के नीचे सवेरे पाँच सेर दूध तो नहीं उतरा। शाम को भी यही हाल रहा। मेरी आँख में तुम धूल झोंकना चाहते हो ?

हीरासिंह की आत्मा पर ठेस लगी। भला वह अपने मालिक को धोखा देगा ? उसने तो धोखे की बात सोची तक नहीं। इसीलिए उसने सहज भाव से उन्हें विश्वास दिलाना चाहा कि उसने तो पंद्रह सेर से भी ऊपर दूध दुह कर दिखा दिया था। हीरासिंह के इस प्रकार के विश्वास दिलाने पर भी सेठजी का अविश्वास कम नहीं हुआ क्योंकि उनका विश्वास अथवा अविश्वास मन की भावनाओं से सम्बन्धित ही कब था ? वह तो व्यापारी टाइप का था। अतः उन्होंने कहा—"दे दिया होगा। लेकिन अब क्या बात हो गई ? तो तुमने उसे कोई दवा खिला दी है ?" इतना ही नहीं ड्योढ़ी में दूध ढुला सुनकर उनका यह विश्वास पक्का हो गया कि यह सब चालाकी हीरासिंह की ही है। लेखक ने सेठजी का चरित्र चित्रण करने में संकेतों का भी सहारा लिया है तथा विश्लेषण का भी सहारा लिया है। सेठजी के संस्कार उनकी व्यापारी बुद्धि से बढ़े चढ़े थे। जब हीरासिंह ने गाय वापस मांगी तो उनके जन्मजात संस्कार प्रबल हो उठे—"हाँ ले जाओ, ले जाओ" पर पूरा ढ़ाई सौ रुपये का तावान भरवा ही लिया। क्यों नही भरवाते ? ब्याज पर ब्याज लेने के उनके जन्मजात संस्कार जो थे। दो सौ सात में गाय खरीदी और जब उसे वापस लौटाई तो पूरे ढ़ाई सौ वसूल कर लिए। सेठ लोगों के नीचे जब कोई दब जाता है तो उसे बख्शना वे जानते ही नही।

हीरासिंह देहली में नौकरी करने आया और करता रहा। वह अपने साथ देहात के शुद्ध वातावरण में विकसित हुई अपनी ईमानदारी तथा पशु-पक्षियों के साथ भी आत्मीयता का व्यवहार लेकर दिल्ली आया था। उसके स्वभाव की ये विशेषताएँ शहरी वातावरण के प्रभाव में भी मन्द नहीं पड़ीं। वह अपने मालिक के प्रति ईमानदार रहा एवं अपनी सुन्दरिया गाय के प्रति सम्वेदनशील रहा।

सेठजी का शंकालु स्वभाव उसके मानस पर वैसे ही चोट करता रहा जिस प्रकार एक निश्छल व्यक्ति पर किया करता है किन्तु फिर भी वह अपने कर्त्तव्य से हटा नहीं यह उसके स्वभाव की विशेषता थी। उसने दो सौ सात के स्थान पर पूरे ढाई सौ का तावान भर कर भी अपनी सुन्दरिया गाय को वापस लेना उचित समझा। उसकी सुन्दरिया की आत्मा का कष्ट वह कैसे बर्दास्त कर सकता था ? उसकी शुद्ध आत्मा मे उसके प्रति दर्द जो था। अपनी गरीबी को वह सहन कर सकता था किन्तु सुन्दरिया जैसी सुजीन गाय को कष्ट में नहीं देख सकता था। उसका यह कथन बहुत महत्वपूर्ण है—"जो कहो मैं वही करूँगा सुन्दरिया। रुपये का लेन देन है; लेकिन मेरी गौ, मैंने जान लिया कि उससे आगे भी कुछ है। शायद उससे आगे ही सब कुछ है। जो कहो वही करूँगा, मेरी सुन्दरिया।" हीरासिंह के इस कथन मे उसके मानवी हृदय का चरम विकास है। रुपया पैसा इस भौतिक जगत मे तुच्छ वस्तु है। केवलमात्र अपनेश एवं प्रेम ही इस विश्व की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। यह पाकर मानव अपने सुख दुख के क्षणों को शान्तिपूर्वक काट सकता है।

"गौ" का चरित्र चित्रण करके लेखक ने पशु मनोविश्लेषण का अद्‌भुत उदाहरण उपस्थित किया है। पशु के हृदय में भी प्रेम और अपनेश की भूख रहती है। वह न मिलने पर उसके व्यवहार में आकाश पाताल का अन्तर आ जाता है। मानव अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये उसका क्रय विक्रय करता है। उसका ध्यान ही इस तथ्य की ओर नहीं जाता कि पशु के भी आत्मा है। उस आत्मा में प्रेम और अपनेश भरा हुआ है। उसका यह प्रेम और अपनेश उसी के प्रति उभलता है जो अपने हृदय का प्रेम और अपनेश उसको देता है। हीरासिंह ने सुन्दरिया गाय को अपने बच्चो के समान पाला पोषा था किन्तु अत्यधिक गरीबी के कारण उसे बेचना पड़ा। गाय बिक गई किन्तु जब सेठ का घोसी उसे लेकर चलने लगा-तो वह अड़ गई। हीरासिंह ने उसे थपथपा कर जाने के लिये कहा तो उसने हीरासिंह की ओर इस प्रकार देखा मानो पूछ रही हो—"तो जाऊँ ? तुम कहते हो जाओ ?" गाय के यदि वाणी होती तो वह इस अवसर पर न जाने क्या क्या कहती किन्तु क्यो कि उसके वाणी नही थी इसलिये उसकी भाषा आँखों के मार्ग से बही। वह बिक गई है यह बात उसकी पशु बुद्धि ने भी जान ली इसलिए शान्तिपूर्वक सेठ के खूँटे से बंधी रही किन्तु उस खूँटे पर उसे

हीरासिंह जैसी आत्मीयता नहीं मिली। इसलिए उसकी गादी का दूध थनों में नहीं उतरा। घोसी ने सिर पटककर चार पाँच सेर दूध ही दूहा किन्तु यही दूध विना दुहे ही हीरासींह के निवास स्थान ड्योढ़ी में विखर गया। यह सब क्या था ? सुन्दरिया ड्योढ़ी में क्यों गई थी ? उसने अपना दूध वहाँ क्यों विखेरा ? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर हो सकता है। हीरासिंह को उसके प्रति आत्मीयता के सामने सेठ का वैभव उसे फीका लगा। लेखक ने गाय को मानववाणी में बुलाकर उसकी व्यथा को बताने का सफल प्रयत्न किया है। लेखक की यह अछूती कल्पना गाय के चरित्र चित्रण में अत्यधिक सफल हुई है। घोसी के चरित्र चित्रण में भी स्वाभाविकता है।

अतः भाषा, भाव एवं चरित्र चित्रण की दृष्टि से यह कहानी श्रेष्ठ है।

प्रश्न—'कहानीकार निरुद्देश्य कहानी नहीं लिखता तथा कहानी की बिखरी हुई कथावस्तु को समेटने के लिए कथोपकथनों का सहारा लेता है। क्या यह कथन सत्य है ? "एक गौ" नामक कहानी का उद्देश्य बताइये तथा यह भी बताइये कि कथोपकथनों की दृष्टि से यह कहानी कैसी है ?

उत्तर—कहानीकार साहित्य का अत्यधिक जागरूक सेनानी होता है। वह गागर मे सागर भरता है इसलिए वह निरुद्देश्य नहीं बन सकता है। वह जिस विद्या का रचयिता होता है वह विद्या ही कुछ ऐसी है कि उसमें शिथिलता को स्थान नहीं है। इसमे तो लेश मात्र भी सन्देह नहीं है कि कहानी का प्रमुख उद्देश्य मनोरंजन रहता है किन्तु केवल मात्र भी सन्देह नही है कि कहानी का प्रमुख उद्देश्य मनोरंजन रहता है किन्तु केवलमात्र मनोरंजन के लिए ही कहानीकार कहानी लिखता हो यह बात भी नही है। कहानीकार मानव जीवन से सम्बन्धित घटनाओं पर प्रकाश डालता है। अब वह युग तो नहीं रहा है जिस युग में हितोपदेश की कथाओं के समान कथा के साथ-साथ लेखक उपदेश भी देता चलता था, किन्तु अब भी कहानीकार निरुद्देश्य कहानी नहीं लिखता है। पहले प्रत्येक कहानी का अन्त शिक्षा में हुआ करता था किन्तु अब व्यंजना के सहारे कहानी का अन्त होता है इसलिए इस युग की कहानी का उद्देश्य व्यंजित ही होता है। कहानीकार आप कुछ नहीं कहता। वह तो पाठक को ऐसी अवस्था में ले जाकर छोड़ देता है जहाँ पाठक स्वयं कहानी का उद्देश्य ढूंढ़ निकालता है। आधुनिक युग की कहानियों में कथोपकथनों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में किया जाता है। इन कथोपकथनों की सहायता से लेखक कथानक की

बिखरी हुई घटनाओं को संगठित करके कथानक को गति प्रदान करता है। इसलिए यह कथन तथ्यपूर्ण है कि कहानीकार निरुद्देश्य कहानी नहीं लिखता तथा कहानी की बिखरी हुई कथावस्तु को कथोपकथनों की सहायता से समेटता रहता है।

"एक गौ" नामक कहानी के रचयिता श्री जैनेन्द्रकुमारजी है। जैनेन्द्रकुमारजी अपनी कहानियों में सूक्ष्म मनोविश्लेषण करने मे निपुण है। इस कहानी में भी उन्होंने मानव मनोविश्लेषण एवं पशु मनोविश्लेषण करने मे अत्यधिक निपुणता दिखाई है। सुन्दरिया गाय की मनःस्थिति दिखाकर उन्होंने ५६ पशुओं की रागात्मक वृत्ति का परिचय दिया है। अतः पशु की मानसिक स्थिति का विश्लेषण ही इस कहानी का उद्देश्य समझा जा सकता है। लेखक की यह अछूती कल्पना है। उसने जिस तह में घुस कर गाय के द्वारा जो कुछ कहलाया है वह प्रभावोत्पादक तो है ही, साथ ही मार्मिक भी है। लेखक ने मूक पशु की व्यथा को इस ढंग से कहानी मे बिखेरी है कि उसे पाठक की सहानुभूति मिले बिना नही रह सकती। इस प्रकार से यह बात निश्चयपूर्वक कही जा सकती है कि इस कहानी का प्रमुख उद्देश्य पशुमन की रहस्यमयी प्रवृत्तियों की व्याख्या करना है। इस व्याख्या के साथ ही लेखक ने संकेतात्मक ढंग से सेठजी की स्वार्थमयी प्रवृत्ति एवं हीरासिंह की निश्छल प्रवृत्ति का परिचय भी दिया है। ये प्रवृत्तियाँ केवल-मात्र दो व्यक्तियों की न समझी जाकर दो वर्गों—पूँजीपति एवं गरीब की भी समझी जा सकती है। एक मे कितना स्वार्थ एवं शंका है और दूसरे मे कितनी विनय एवं आत्मीयता है। ऐसी विनय एवं आत्मीयता कि पशु का अपनेश भी जिसके प्रति उलझा पड़ता है, किन्तु सेठ को इसमे भी छल की शका होती है।

इस कहानी मे कथोपकथनो का प्रयोग बहुत ही सफलतापूर्वक किया गया है। इन कथोपकथनो से लेखक ने दो काम लिये है। पहला काम उसने कथानक के विकास का लिया है। किसी भी कहानी मे प्रयुक्त कथोपकथनो का अनेक प्रकार से महत्व होता है किन्तु इन कथोपथनो की भी एक मर्यादा है। उस मर्यादा से बहार जाते ही ये कथोपकथन कथानक पर बोझा डालकर उसकी स्वाभाविकता को नष्ट कर देते है। लेखक वास्तव मे कथोपकनो का सहारा इसलिए लेता है कि वह कथानक को बिखरी हुई घटनाओ को समेट कर कथानक को गति दे सकेगा। इसलिए वह कथोपकथनो मे किसी निरर्थक वाक्य का समावेश नही करता है। प्रत्युत कहानी के कथोपकथन मर्मस्पर्शी, छोटे एवं प्रभावोत्पादक है। लेखक ने

कथोपकथनों के द्वारा ही कथानक का विकास करते हुए चरित्रों का विश्लेषण किया है। सेठजी, हीरासिंह, घोसी एवं सुन्दरिया गाय के चरित्रों का विश्लेषण इन्ही कथोपकथनों के माध्यम से किया है।

अतः इस कहानी के कथोपकथन सारगर्भित, मर्मस्पर्शी एवं कथानक को आगे बढ़ाने वाले रहे हैं। यह कहानी कथोपकथनों की दृष्टि से श्रेष्ठ है।

"शत्रु"

लेखक—अज्ञेयजी

प्रश्न—कहानीकार अज्ञेयजी की विशेषता बता कर उनकी "शत्रु" नामक कहानी को संक्षेप में लिखो।

उत्तर—अज्ञेयजी नवीनतम पाश्चात्य शैली में लिखने वाले लेखकों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। अज्ञेयजी का अध्ययन एवं मनन उच्च कोटि का है इसलिए इनकी कलम से स्वस्थ सामग्री निकलती है। अज्ञेयजी मानव मनोवृत्तियों का सूक्ष्म एवं तीखा चित्रण अपनी कहानियों में करते है। अज्ञेयजी आदर्श से अधिक महत्व यथार्थ को देते है। अज्ञेयजी अपनी इर्द गिर्द बिखरी घटनाओं को समेटकर कलात्मक ढंग से कहानी का रूप देने में बहुत ही सिद्धहस्त हैं। अज्ञेयजी देश-सेवी हैं एवं नये राष्ट्र एवं नये समाज की लड़ाई के दुर्दम सेनानी है इसलिए इनकी मनोवृत्ति सदैव ही रूढ़ियों के विरुद्ध रही है। अतः इनकी कहानियों में रूढ़िवाद के प्रति विद्रोह की चिनगारी रहती है। अज्ञेयजी की कहानियाँ मानव मानस पर सीधी चोट करती हैं। इनकी कहानियों में एक सन्देश रहता है, एक संघर्ष रहता है और एक दृष्टिकोण रहता है जिसका व्यक्तकरण लेखक की अपनी विशेषता है। अज्ञेयजी कहानी लेखकों की पुरानी एवं नई पीढ़ी के प्रभावशाली लेखक है। इनकी कहानियाँ बड़ी सजीव एवं निर्माणात्मक हैं।

कहानी-संक्षेप—ज्ञान नामक व्यक्ति को भगवान ने स्वप्न में दर्शन देकर अपना प्रतिनिधि बताया तथा संसार का पुनर्निर्माण करने के लिए कहा। ज्ञान ने लोगों से कहा कि वह भगवान का प्रतिनिधि है और विश्व को भगवान् का सन्देश सुनावेगा। लोगों ने उसे पागल करार दे दिया। ज्ञान के ध्यान में यह आया कि मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु धर्म है। इसलिए उसने उससे ही लड़ने की ठानी। उसे एक स्त्री भी मिली जिसने विधर्मी से विवाह कर लिया था और जिसके पति को लोगों ने मार डाला था, जिसका बच्चा भूख से मरणासन्न हो

रहा था। ज्ञान ने धर्म के धुरन्धरों के विरुद्ध आवाज उठाई किन्तु उसे समाज-च्युत कर दिया गया। इसलिये उसने समाज से लड़ने की ठानी किन्तु अंग्रेजी सरकार ने उसे तत्काल जेल में ठूंस दिया क्योंकि उसके भाषण मार्मिक फूट डालने वाले समझे गये। जेल से छूटने के पश्चात् उसने विदेशी सत्ता से लड़ने की ठानी किन्तु एक भूखे विदेशी से वार्तालाप करके वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि विदेशी शत्रु नहीं है। असली शत्रु है भूख। इसलिये इस भूख से लड़ने के लिये अमीरों से लड़ना आवश्यक था। अमीरों ने उसे पकड़ कर एक किले में बन्द करवा दिया और वहां उसे भूखा रखने लगे। ज्ञान को अपने जीवन से ग्लानि हुई और उसने किले की दीवार पर से कूद कर आत्म हत्या करना चाहा किन्तु नीचे खाई के जल में उसने अपना प्रतिविम्ब देखा जो पूछ रहा था—क्यों, अपने आप से लड़ चुके ? ज्ञान सहम गया। उसने समझ लिया कि असली शत्रु न धर्म है, न समाज है, न विदेशी सत्ता। असली शत्रु मनुष्य की वह मनोवृत्ति है जो कठिन को छोड़कर सरल को अपनाती है।

प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से शत्रु नामक कहानी की आलोचना कीजिए।

उत्तर—किसी भी कहानी की कहानी कला की दृष्टि से आलोचना करने का तात्पर्य होता है उसे कहानी के तत्वों पर कस कर देखना। कहानी के तत्वों पर खरी उतरने पर ही कहानी सफल कही जा सकती है। कहानी के तत्व छः माने गये हैं—

(१) कथावस्तु (२) पात्र (३) कथोपकथन (४) देशकाल (५) शैली एवं (६) उद्देश्य। अब हम शत्रु कहानी को इन्हीं तत्वों पर कस कर देखते हैं।

कथावस्तु—इस कहानी की कथावस्तु घटनाओं की संश्लिष्ट योजना एवं कार्य की एकता पर निर्भर रही है। ज्ञान को स्वप्न में जो कुछ प्रेरणा मिली—उसकी पूर्ति में अनेक प्रकार की रुकावटें मनुष्य के शत्रु के रूप में दृष्टिगोचर हुईं। वह उनसे जूझने लगा और एक घटना दूसरी घटना को जन्म देकर उसको उलझाती गई किन्तु अन्तिम उलझन उसके सामने जो आई वह चिरन्तन एवं स्थायी उलझन थी। मनुष्य की सदैव ही यह प्रवृत्ति रही कि वह सरलता की ओर झुकता रहा। उसका यह झुकाव ही उसकी वास्तविक उन्नति में बाधक रहा है। लेखक ने सम्पूर्ण घटनाओं को इस ढंग से सहेजा है कि कार्य कारण शृंखला बनती गई है जिससे कथावस्तु में प्राण आगये है। कथा की दृष्टि से इस कहानी

का कथानक बहुत छोटा है किन्तु प्रभावोत्पादन में बहुत बड़ा है। लेखक की कुशलता के कारण घटनाएँ एक सूत्र में बंध कर अत्यधिक प्रभावशाली बन गई है जो कथा प्रवाह को आगे बढ़ाने में भी पर्याप्त रूप से सहायक हुई है।

पात्र—कहानी में चरित्र चित्रण का अत्यधिक महत्व है। यह चरित्र चित्रण पात्रों का ही हुआ करता है इसलिए इस तत्व का दूसरा नाम चरित्र चित्रण भी है। चरित्र चित्रण की दृष्टि से यह कहानी बड़ी सबल है। लेखक ने इस कहानी में व्यक्ति एवं वर्ग दोनों का चरित्र चित्रण बड़ी सफलता से किया है। यह दुनियाँ कुछ वर्गों में बंटी हुई है। एक धर्माधिकारियों का वर्ग है, एक पूंजीपतियों का है, एक सत्ताधारियों का वर्ग है और एक उन मनुष्यों का वर्ग है जो इन सब वर्गों की इच्छाओं की चक्की मे पिसता रहता है। जो कोई व्यक्ति इनके विरुद्ध विद्रोह करता है उसे अनेक प्रकार की यातनाएँ सहना पड़ता है। इन यातनाओं के दुख से दुखी होकर वह आत्म-हत्या तक करने के लिए विवश हो जाता है किन्तु यह आत्म हत्या का विचार मानव का सबसे कच्चा और सरल विचार है जिसमें जीवन से पलायन है जीवन से होड़ नहीं है। बुराइयों को निर्मूल कर देने की सामर्थ्य नही है। मनुष्य को इस दुर्बलता का शिकार नही होना चाहिये। ज्ञान नामक व्यक्ति जो इस कहानी का प्रमुख पात्र है, सबलता से निर्बलता के किनारे पर आकर ठहर गया है जहाँ से उसे जीवन का सत्य स्पष्ट दिखलाई देता है। लेखक ने कहानी का अन्त पूर्णतः सांकेतिक रखा है। मनुष्य यदि निरन्तर आसानी की ओर बढ़ना बन्द कर दे तो वास्तव में वह बहुत कुछ कर सकता है। ज्ञान के हृदय में समाज के पुनर्निर्माण की अभिलाषा थी। वह मानव जाति को सद्पथ पर ले जाना चाहता था किन्तु उसको जिन कठिनाइयो का सामना करना पड़ा उन कठिनाइयों को निरन्तर सहते रहने की उसमें सामर्थ्य नही थी इसीलिए उसने आत्म हत्या करके अपने जीवन का अन्त करना चाहा किन्तु यह उसकी सबसे बड़ी दुर्बलता थी। लेखक ने ज्ञान के चरित्र चित्रण के मिस मानव मात्र का चरित्र चित्रण करने का सफल प्रयास किया है जो व्यक्ति अपने को भगवान का प्रतिनिधि कह कर भगवान् का संदेश सुनाने की चेष्टा करेगा उसे धर्म के ठेकेदार कैसे सहन कर सकेंगे। वे या तो उसे पागल कह कर उसकी खिल्ली उड़ायेंगे या विधर्मी कह कर उसे धर्मान्ध मनुष्यों की दृष्टि से गिरा देंगे। ज्ञान के साथ भी यही हुआ। जब उसने अपने को भगवान् का प्रतिनिधि कहा तो उस

पर पत्थर बरसे, उनने धार्मिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने की चेष्टा की तो उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया गया और जब वह समाज मे ही परिवर्तन लाने लगा तो विदेशी सत्ता ने उसका गला दबा दिया क्योंकि विदेशी सत्ता तो टिक ही सामाजिक फूट पर रही थी । बांट दो और राज्य करो का सिद्धान्त ही उनका सिद्धान्त था। ज्ञान ने गरीबी और अमीरी की दीवारें ढाह कर महानता की एक नींव लगानी चाही तो वे पूँजीपति बौखला उठे जो दूसरो की गरीबी के कारण अपनी अमीरी बनाये हुए थे । उन्होंने सारे झगड़ों की जड़ ज्ञान को विनश बना डाला। लेखक ने बहुत ही कुशलता से प्रत्येक वर्ग अथवा टाइप का चरित्र चित्रण किया है। हिन्दी कहानी साहित्य मे यह अपने ढंग का एक सफल प्रयोग है। मानव एवं मानवता के अनेक शत्रु हैं इन सबका अन्त हुए बिना मानव एवं मानवता का उद्धार सम्भव नही है ।

कथोपकथन—इस कहानी मे कथोपकथन अल्प है किन्तु इसका अल्प होना ही इस कहानी की विशेषता है । मनोवृत्तियों के चित्रण मे विश्लेषणात्मक ढंग अपनाया जाता है । अज्ञेयजी ने इस कहानी मे मानव मनोवृत्तियों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है । अतः अधिक कथोपकथनो की गुंजाइश ही नही थी; केवल मात्र दो स्थानो पर ही कथोपकथनों का प्रयोग हुआ है । एक तो वहाँ जहाँ ज्ञान को धार्मिक भावना से पीड़ित स्त्री से जानकारी प्राप्त हुई है तथा दूसरी जगह वहाँ जहाँ उसने भूखे व्यक्ति की कठिनाई को जाना है । ये कथोपकथन बहुत ही छोटे है किन्तु अत्यधिक सारगर्भित हैं तथा कथावस्तु की घटनाओं को संगठित करके उसमे गति उत्पन्न करने में सहायक हुए हैं ।

देशकाल—इस कहानी मे देशकाल का अच्छा निर्वाह हुआ है । लेखक जिस युग में रह रहा है उसी युग की प्रमुख प्रवृत्तियों का चित्रण उसने किया है । इस कहानी मे परतन्त्र भारत की मूल वृत्तियो का चित्रण हुआ है । धार्मिक कट्टर भावना, इस कट्टरता को समाप्त करने की चेष्टा भी अपराध तथा पूँजी-पतियों की शोषण की मनोवृत्ति ही उस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ रही हैं। लेखक ने इस कहानी मे इन सब प्रवृत्तियो का समावेश किया है । भारत की तत्कालीन अवस्था की झांकी इस कहानी में मिलती है ।

शैली—अज्ञेयजी भाषा के कुशल शिल्पी है । आपकी वर्णन शैली अपनी विशेषता रखती है । आपकी शैली मे वर्णन शक्ति एवं विवरण शक्ति दोनों ही परिपक्वावस्था में विद्यमान हैं । अज्ञेयजी की वर्णन शैली की यह विशेषता है

वह विषय के अनुसार परिवर्तित हो जाती है जिससे उसमें प्रवाह एवं प्रभाव दोनों गुण आ जाते हैं। अज्ञेयजी पर पाश्चात्य शैली का पर्याप्त प्रभाव है इसलिए इनकी कहानियों में पाश्चात्य शैली का भी पर्याप्त विकास हुआ है। इस कहानी की शैली वर्णनात्मक ही कही जायगी।

उद्देश्य—इस कहानी का उद्देश्य स्पष्ट है। धर्मान्धता, परतन्त्रता, गरीबी और इस गरीबी को जन्म देने वाले पूँजीपति तो मानव के शत्रु हैं ही किन्तु इनसे भी अधिक शक्तिशाली एक शत्रु है मानव की अपनी-अपनी मनोवृत्ति जो उसे अपने से नहीं जूझने देती। यह वह मनोवृत्ति है जो मानव को कठोरता से हटाकर सरलता की ओर ले जाती है। यदि मानव अपनी इस दुर्बल मनोवृत्ति पर विजय पाले तो वह समाज का पुनर्निर्माण कर सकता है। इस कहानी का अन्त अत्यधिक प्रभावशाली है। लेखक ने इस कहानी के उद्देश्य को भी प्रभावशाली बनाने की चेष्टा की है। इसलिए अंत को सांकेतिक भी रखा है तथा स्पष्ट भी किया है।

कहानी कला की दृष्टि से यह एक सफल कहानी है।

प्रश्न—शीर्षक का कहानी में क्या महत्व है? अज्ञेयजी की कहानी शत्रु के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

उत्तर—कहानी का शीर्षक कहानी का महत्वपूर्ण अंग होता है। कुशल लेखक शीर्षक का चुनाव बहुत ही सार्थकता से करता है। कहानी का अधिकांश सौंदर्य ही शीर्षक में निहित होता है। सम्पूर्ण कहानी का सार शीर्षक में भर देना ही कुशल कहानी शिल्पी की विशेषता है। शीर्षक को हम कहानी की कुंजी भी कह सकते हैं क्योंकि शीर्षक यदि सार्थक हुआ तो कहानी जिस प्रभाव को उत्पन्न करने के लिए लिखी जाती है वह प्रभाव तत्काल उत्पन्न होता है। कहानी साहित्य के अध्ययन करने से यह बात पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है कि लेखक कहानी के रहस्य को शीर्षक में केन्द्रित करने का प्रयास करता है। वह इस शीर्षक के द्वारा पाठक को चमत्कृत भी करता है एवं कहानी की ओर आकृष्ट भी करता है। जैसे-जैसे कहानी की टेकनीक बदलती जा रही है वैसे वैसे ही शीर्षक का महत्व बढ़ता जा रहा है। कुछ लेखक तो कहानियों के शीर्षक ऐसे सार्थक रखते है कि उनके अतिरिक्त दूसरे शीर्षक उस मर्म को स्पष्ट ही नही कर सकते जिसका स्पष्टीकरण लेखक करना चाहता है। श्री अज्ञेयजी इसी कोटि के लेखकों मे से है।

शत्रु कहानी का शीर्षक "शत्रु" इतना सारगर्भित एवं मार्मिक है कि इसके अतिरिक्त दूसरा शीर्षक हो ही नही सकता था । कहानी समीक्षको के मतानुसार कहानी का डंक उसकी पूँछ मे चमकता है। साधारण शब्दो मे इसकी व्याख्या इस प्रकार होगी कि कहानी का सम्पूर्ण रहस्य कहानी के अन्त मे रहता है। कला की दृष्टि से वह कहानी ही श्रेष्ठ कहलाती है जिसका अन्त ऐसा होता है कि पाठक उससे पूर्व उसकी कल्पना भी नही कर पाता है। उसके सामने सहसा एक रहस्य खुलता है जो सम्पूर्ण कहानी पर छा जाता है। शत्रु कहानी का कथानक जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाता है। पाठक की रुचि यह जानने के लिए जागृत होती जाती है कि अब मनुष्य का कौनसा शत्रु सामने आवेगा। यह बात उसके ध्यान में भी नही आती कि मनुष्य का वास्तविक शत्रु उसकी वह मनोवृत्ति है जो कठोर से हट कर आसान पर टिकती है। अतः मानव अपने में ही अपने शत्रु को लिए फिरता है। अज्ञेयजी मानव-मनोवृत्तियों का सूक्ष्म एवं मार्मिक विश्लेपण करने में सिद्धहस्त है। इस कहानी मे भी उन्होने मानव की मनोवृत्तियो का सूक्ष्म एवं मार्मिक विश्लेषण किया है। इस विश्लेपण का जो निष्कर्ष के रूप मे कहानीकार ने अपनाया है। इसलिए इस शीर्षक का मनोवैज्ञानिक आधार तो है ही साथ ही कलात्मक आधार भी है। यह शीर्षक इस कहानी के सम्पूर्ण रहस्य को अपने में छिपाए हुए है। इसलिए पूर्णतया सार्थक है।

प्रायश्चित

लेखक—श्री भगवती चरण वर्मा

प्रश्न—श्री भगवती चरण वर्मा का संक्षिप्त साहित्यिक परिचय देकर प्रायश्चित कहानी को संक्षेप में लिखो।

उत्तर—श्री भगवतीचरण वर्मा एक साथ ही उपन्यास लेखक, कहानी लेखक, एकांकी नाटक लेखक एवं कवि है इसलिए आपका व्यक्तित्व हिन्दी साहित्य मे महत्वपूर्ण है। आप यथार्थवाद के कुशल चितेरे है। आप की प्रतिभा सर्वतोमुखी है इसलिए साहित्य के जिस अंग को हाथ मे लेते है उसी पर अपनी मोहर लगा देते हैं। आपको कथा साहित्य में अधिक सफलता मिली है हास्य और व्यंग आपकी कहानियों में अत्यन्त स्वाभाविक रूप से उतरा है। आपकी कहानियां अधिकांश में प्रभाव प्रधान होती है। आपने रहस्य और व्यंग का पुट देकर मानव जीवन के शाश्वत् सत्य का उद्घाटन किया है। वर्मा जी के पात्र व्यक्ति-

गत रूप लेकर भी हमारे सामने आते हैं और अपनी वर्गगत विशेषताओं को भी स्पष्ट करते हैं। विभिन्न घटनाओं एवं परिस्थितियों के द्वारा उनके पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ स्वतः ही स्पष्ट हो जाती हैं। वर्मा जी के वर्णन भी बड़े सजीव होते हैं। थोड़े से शब्दों में ही पात्र की पूरी तस्वीर हमारे सामने खिंच जाती है। उनकी कहानियाँ सामाजिक असंतोष एवं विद्रोह की भावना से भरी होती हैं। आपकी भाषा चुभती हुई एवं विषय को हृदयंगम कराने वाली है। क्योंकि हास्य एवं व्यंग में वर्माजी बड़े निपुण हैं इसलिए इनकी भाषा भी उसी हास्य एवं व्यंग के साँचे में ढली है।

कहानी-संक्षेप—रामू की वहू पहली बार ससुराल आई थी। नई वहू को जितना लाड़ प्यार मिलता है उससे कहीं अधिक लाड़ प्यार इसे मिला किन्तु दुर्भाग्य से कबरी बिल्ली उसके पीछे पड़ गई। वह अनेक प्रकार का नुकसान करती रहती और रामू की वहू को सास की मीठी झिड़कियाँ सहनी पड़ती थी। राम की बहू की आयु लगभग १४,१५ वर्ष की तो थी ही उससे कभी कोई चीज बिना ढके रह जाती कभी रसोई घर के किवाड़ खुले रह जाते और कभी भण्डार गृह में घी उघड़ा रह जाता। ऐसे अवसरों पर कबरी बिल्ली के दाव लग जाते। एक दिन उसने ताक पर की खीर पर हाथ मार दिया। रामू की वहू की आँखों में खून उतर आया। दूसरे दिन उसने मौका पाकर के पूरी ताकत से पाटे की मार दी जिससे वह जहाँ की तहाँ ही लेट गई। बिल्ली का गिरना था कि घर में हँगामा मच गया। बिल्ली की हत्या का महापाप समझा गया और तत्काल पंडितजी को बुलाकर उस पाप के शमन का उपाय सोचा जाने लगा। पण्डित परमसुख ने शास्त्रों के पृष्ठ पर पृष्ठ उलटे और यह निष्कर्ष निकाला कि बिल्ली की हत्या ब्रह्म मुहूर्त में हुई है इसलिए रामू की वहू को कुम्भी पाक नरक मिलेगा। यह सुनते ही उसकी सासजी, मिसरानी, किसनू की मां एवं बन्नू की दादी ने इस पाप के शमन की क्रिया पूछी। पंडितजी ने २१ तोला सोना की बिल्ली दान करने एवं पूजा पाठ करा कर ५ ब्राह्मणों को २१ दिन भोजन कराने की विधि बताई जिसे सुनकर रामू की मां भौंचक्की रह गई। उसने पंडितजी से खर्च कम करने की प्रार्थना की तो पण्डित बिगड़ खड़े हुए। रामू की मां ने क्षमा मांगी और इस कुम्भीपाक नरक से वहू को छुटकारा दिलाने की प्रार्थना की। पंडित प्रसन्नचित होकर २१ तोला सोना मांगने लगे। इसी समय महरी ने आकर सूचना दी कि बिल्ली तो उठ कर चली गई है। पण्डित जी अवाक रह गये।

प्रश्न—चरित्र चित्रण, कथोपकथन एवं उद्देश्य की दृष्टि से प्रायश्चित नामक कहानी की आलोचना कीजिए।

उत्तर—श्री भगवती चरण वर्मा को पात्रों के चरित्र चित्रण में प्रशंसनीय सफलता मिली है। इस सफलता का भी एक रहस्य है। वर्माजी का अध्ययन एव निरीक्षण शक्ति दोनों ही उच्च कोटि के हैं। इसलिए इनकी मंजी हुई कलम से स्वस्थ सामग्री ही निकलती है। इस कहानी के प्रमुख पात्र रामू की वहू, कवरी विल्ली, पंडित परमसुख एवं रामू की मां हैं। मिसरानी, महरी, किसनू की मां एवं धन्नू की दादी गौण पात्र हैं। वर्माजी ने प्रमुख एवं गौण पात्रों का ऐसा चरित्र चित्रण इस ढंग से किया है कि ये पात्र अपनी व्यक्तिगत विशेपता भी रखते हैं एवं वर्गगत विशेपता भी रखते हैं। ये दोनो प्रकार की विशेपताएँ परिस्थितिनुकूल स्पष्ट होती है। रामू की वहू नई आई हुई १५ वर्षीय लडकी है। वह प्रत्येक काम को सम्हाल कर करने की पूरी चेष्टा करती है किन्तु फिर भी उससे भूल हो ही जाती है; यह भूल हमें उस समय अधिक महंगी पड़ती है जब कवरी विल्ली नुकसान पर नुसान करती जाती है। रामू की वहू का इस बिल्ली पर खीजना, उससे सतर्क रहना, उससे पीछा छुड़ाने का प्रयत्न करना और अन्त मे उसे मार डालने की सोचना विल्कुल स्वाभाविक है। लेखक ने रामू की वहू का चरित्र विश्लेपण बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है। बिल्ली के मर जाने की घटना से तो वह इतनी आतंकित हो उठी है कि अपना सिर तक ऊपर नही उठा सकती। उसके मन में पश्चाताप होता है किन्तु उसने नये खून के जोश मे जो कुछ कर दिया वह कर ही दिया। अब पछताने का महत्व भी क्या था किन्तु फिर भी वह पछता रही थी।

कवरी बिल्ली का चित्रण तो लेखक ने इतना स्वाभाविक एवं प्रभावपूर्ण किया है कि उसमे पूर्णतया सचाई टपकती है। लेखक को बिल्ली के स्वभाव, उसके दाव-घात एवं चालाकी का पूरा ज्ञान है। बिल्ली दवे पांव आती है और घी, दूध, रोटी और खीर खाकर नौ दो ग्यारह हो जाती है। यह घटना केवल मात्र रामू की वहू के घर ही नही है सब ही घरों मे बिल्ली के यह उत्पात होते ही रहते हैं। बिल्ली को तो मौका मिलना चाहिए फिर वह नही चूकती। वह चालाक इतनी होती है कि आसानी से चोट के नीचे नही आती। कवरी बिल्ली में ये सब गुण हैं। वह चुपके से आती है और नुकसान करके फुर्र हो जाती

है। लेखक को पशु मनोविज्ञान का सूक्ष्म ज्ञान है इसलिए उसने कबरी बिल्ली की छोटी से छोटी हरकत पर भी नजर डाली है। उसके स्वभाव का सांगोपांग विश्लेषण किया है। यदि बिल्ली को खाने को नहीं मिले तो वह खाने की चीज को बिखेरने से भी बाज नहीं आ ी और यदि मौका मिले तो वह उस बिखेरी हुई चीज को स्वाद ले लेकर खाय। कबरी बिल्ली यह सब कुछ करती है। बिल्ली सहज में ही पकड़ में नहीं आती। कबरी बिल्ली भी अनेक प्रलोभनों के द्वारा भी पकड़ाई में नहीं आई अतः कबरी बिल्ली का चरित्र चित्रण बहुत ही मार्मिक एवं स्वाभाविक रहा है।

पण्डित परमसुख का चरित्र चित्रण करने में लेखक ने अत्यधिक कौशल से काम लिया है। पण्डितजी व्यक्ति के रूप में तथा अपने वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में चित्रित किए गए हैं। उनका डील डौल एवं उनकी खुराक चौबे टाइप है। उनका व्यवहार कर्मकाण्डी ब्राह्मण टाइप है। पण्डितजी दान-पुन्य, पूजा पाठ एवं प्रायश्चित आदि अवसरों की टोह में लगे रहते थे। जब ऐसा अवसर आता तो उनके निजी पूजा पाठ गौण हो जाते और वे कस कर हाथ मारने की चेष्टा करते जिससे जजमान चारों खाने चित्त आता ही दीखता रामू की मां का बुलावा आते ही वे दौड़े हुए पहुँचे कि रामू की बहू से घोर पाप होगया है जिसका प्राय-श्चित करना आवश्यक है अन्यथा वह कुम्भीपाक नरक में जायगी। यह बात कहते समय उन्होंने जो मुद्रा बनाई, आनन पर जो भाव लाये और जो गंभीर वातावरण बनाया उसमें ही उनकी विशेषता थी। दान पुण्य और धर्म-दक्षिणा तो मनुष्य डर कर करता है। यदि रामू की मां डरती नहीं तो वह पण्डितजी के चंगुल में कैसे फंसती। पण्डित परमसुख के मिस लेखक ने पुरोहित समाज का जीवित चित्र उपस्थित किया है। यह समाज माल बनाने में कभी नहीं चूकता फिर पण्डितजी क्यों चूकते। उन्होंने २१ तोले सोने की बिल्ली का दान कराने की सम्मत्ति दी और यह भी इसलिए कि यह कलियुग था अन्यथा ठीक बिल्ली के तोल की सोने की बिल्ली बन कर दान होती। पण्डितजी २१ दिन तक पूजा पाठ का विधान बता कर पाँच ब्राह्मणों को भोजन कराने की बात कह कर स्वयं यह कह देते हैं कि यदि पाँच ब्राह्मणों को भोजन न करा सको तो दोनों जून मुझे भोजन करा देना। यह कथन उनके लालची स्वभाव का दूसरा उदाहरण है। रामू की मा पर उनका तमकना मौके का फायदा उठाना मात्र था अन्यथा वे इतने पागल कहां थे कि मुंह आए ग्रास को छोड़ कर चल देते। लेखक ने पण्डित

जी के चरित्र चित्रण मे हास्य एवं व्यंग दोनों से काम लिया है। महरी ने जब आकर सूचना दी होगी कि बिल्ली तो उठकर भाग गई उस समय पण्डितजी को जो हार्दिक वेदना हुई होगी उसका अनुमान हम उनकी लालची मनोवृत्ति से खूब अच्छी तरह से लगा सकते हैं। निश्चय ही पण्डितजी का ग्रास ओष्ठों तक आकर छूटा था। यह क्या कम व्यथा थी। लेखक ने पुरोहित पन्थी ब्राह्मणों के लालच की अच्छी तरह से कलई खोली है। उनके आडम्बरी व्यक्तित्व पर व्यंग कसा है। उसने यह बताने का सफल प्रयास किया है कि प्रायश्चित करने में ही जाने वाली दान की मात्रा भी वे लोग घर के अनुसार ही बताते है। रामू की माँ का घर भरा पूरा था इसलिए उनके लिए दान पुण्य की बात भी वैसी ही बताई गयी। लेखक ने इस तथ्य के द्वारा इस रहस्य का उद्घाटन किया है कि पुरोहित लोग अवसरानुकूल लाभ उठाया करते है।

गौण पात्रो मे मिसरानी, रामू की माँ, धन्नू की दादी एवं किसनू की माँ है। इनका चरित्र चित्रण इनके वर्ग की विशेपताओं पर आधारित है। स्त्रियाँ प्रायः अधर्म के भय से ही चौंक जाती है और उस अधर्म को धर्म मे बदलने के लिए कुछ ऐसी फुर्ती, ऐसी व्यवस्था एवं ऐसा चौकन्नापना दिखाती है कि वे तत्काल ठग ली जाती है। कबरी बिल्ली के मरते ही मिसरानी ने भोजन बनाने से इन्कार कर दिया। रामू की मां स्तब्ध रह गई, रामू की बहू अपराधिन के रूप मे सिर झुका कर खड़ी हो गई। किसनू की मां एवं धन्नू की दादी ने दान पुंण्य करके इस हत्या से पीछा छुड़ाने पर पूरा बल दे दिया मानो बिल्ली की हत्या उन सब पर ही लग रही थी। उनके स्त्रियोचित धर्म और स्वभाव का चित्रण बहुत ही स्वाभाविक है।

कथोपकथन—कथोपकथनों को कहानी का सबसे श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण अंग कहा जाता है क्योंकि कथोपकथन पात्रों के स्वभाव एवं आचरण का स्पष्टीकरण करते हैं एवं कहानी के प्रभाव की वृद्धि करते है। कथोपकथनो के द्वारा रस की उत्पत्ति भी होती है जिससे पाठक ऊबते नही हैं। कथोपकथन मनोरंजन में भी वृद्धि करते है। इस कहानी के कथोपकथन बहुत सुन्दर हैं। इन कथोपकथनों से पात्रों का चरित्र चित्रण भी हुआ है और रस की उत्पत्ति भी हुई है। इस कहानी के कथोपकथन कथानक की बिखरी हुई घटनाओं को समेटकर कथानक को गति देने में सहायक हुए है। कथोपकथनो के सम्बन्ध में एक ध्यान यह भी रखा जाता है कि इनकी भाषा पात्रानुकूल हो। इस कहानी

के कथोपकथनों की भाषा पात्रोनुकूल ही है। इस कहानी के कथोपकथन छोटे एवं सारगर्भित हैं; इसलिए प्रभावोत्पादक हैं। इस कहानी में प्रयुक्त कथोपकथनों का कोई भी वाक्य निरर्थक नही है। लेखक ने कथोपकथनों के द्वारा कथानक का विकास किया है तथा चरित्रों का विश्लेषण किया है। नीचे लिखे कथोपकथनों के उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जायगी—

पण्डित परमसुख मुस्कराये—"रामू की मां, चिन्ता की कौनसी बात है हम पुरोहित फिर कौन दिन के लिये हैं। शास्त्रों में प्रायश्चित का विधान है सो प्रायश्चित से सब कुछ ठीक हो जायगा।"

रामू की मां ने कहा—"पण्डितजी इसी लिए तो आपको बुलवाया था, अब आगे बतलाओ कि क्या किया जाय ?"

"क्या किया जाय—यही एक सोने की बिल्ली बनवाकर बहू से दान करवा दी जाय—जब तक बिल्ली न दे दी जायगी तब तक तो घर अपवित्र रहेगा, बिल्ली दान देने के बाद इक्कीस दिन का पाठ हो जाय।"

उद्देश्य—कहानीकार अपनी कहानी में जिस लक्ष्य की ओर संकेत करता है वह ही कहानी का उद्देश्य होता है। यह बात निश्चित है कि कहानी में कल्पना ही होती है किन्तु कहानी के उद्देश्य के सम्बन्ध में जब विचार किया जाता है तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कहानीकार किसी सत्य अथवा आदर्श की व्यंजना करता है और उस निश्चित उद्देश्य को लेकर कहानी लिखना आरम्भ करता है और उस निश्चित उद्देश्य की ओर संकेत करके अपनी कहानी समाप्त कर देता है। मोटे रूप से कहानी का उद्देश्य मनोरंजन कहा जा सकता है किन्तु वास्तव में मनोरंजन के साथ मानव जीवन की अनुभूतियों का मार्मिक एवं सार-गर्भित चित्र भी उपस्थित किया जाता है। इस कहानी के उद्देश्य पर यदि विचार करके देखा जाय तो इसका उद्देश्य भी मनोरंजन तो है किन्तु इस मनोरंजन के साथ ही—पुरोहित की लालसा वृत्ति का भी मार्मिक चित्रण मिलता है। लेखक का शायद मूल उद्देश्य भी पुरोहित पन्थी ब्राह्मणों के क्रिया कलापों की ओर संकेत करना रहा है। पण्डित परमसुखजी ने प्रायश्चित का जो लम्बा चौड़ा जाल फैलाया उसमे सब बातें उन्हीं के हित की थी। रामू की बहू के पाप धोने का तो बहाना मात्र था। वह कुम्भीपाक नरक में जाने से बचती या नही बचती पण्डित परमसुख के भावी दिन तो सुख से अवश्य कटते। कहानी के अन्त में महरी से यह सूचना दिलाकर कि "मांजी बिल्ली तो उठकर भाग गई" लेखक ने

हास्य एवं व्यंग का एक साथ प्रयोग किया है। स्त्रियों के धर्म भीरु स्वभाव एवं पुरोहितो के हथकंडो को दिखाना ही इस कहानी का प्रमुख उद्देश्य समझा जावेगा।

अतः यह कहानी चरित्र-चित्रण, कथोपकथन एवं उद्देश्य की दृष्टि से बहुत सुन्दर बन पड़ी है।

प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से "प्रायश्चित" कहानी की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—कहानीकार भगवतीचरण वर्मा कुशल लेखक है। उनका रचनातन्त्र अद्भुत है। यह प्रायश्चित नामक कहानी भी उन्हीं की रचना है। इसमे कहानी कला के सभी तत्वों का सुन्दर सामंजस्य है।

कथावस्तु—कथावस्तु का कहानी में बहुत महत्व है। यदि कहने के लिए कोई कथा ही नहीं हो तो आगे कुछ चलेगा ही कैसे ? इस कहानी की कथावस्तु का चयन सुन्दर ढंग से किया गया है। कबरी बिल्ली रामू की बहू को इतना तंग करती है कि रामू की बहू उसका प्राणान्त करने के लिए झल्लाकर उस पर पाटा डाल देती है। उस चोट से कबरी बिल्ली वहां ही गिर जाती है। कबरी बिल्ली की हत्या का दोष रामू की बहू पर लग जाता है। घर भर मे हंगामा मच जाता है। पण्डित जी को बुलाया जाता है। पण्डित जी बिल्ली को ब्रह्म मुहूर्त में मरी बताकर रामू की बहू को कुम्भीपाक नरक की भागी बताते हैं किन्तु साथ में ही यह सान्त्वना दे देते है कि इस पाप का प्रायश्चित भी हो सकता है। वे २१ तोले सोने की बिल्ली दान करने का सुझाव देते हैं। इस दान के साथ ही २१ दिन तक पाठ कराने के लिए कहते है। प्रायश्चित का यह विशाल विधान सुनते ही रामू की माँ दग रह जाती है किन्तु पाप का प्रायश्चित तो आवश्यक ही था। दुख सुख पाकर उसे हाँ भरनी पड़ती है। पण्डित जी के आनन पर आभा आ जाती है किन्तु इसी समय महरी सूचना देती है कि बिल्ली तो उठ कर भाग गई। यहाँ ही कथावस्तु का अन्त है। इस प्रकार से इस कहानी का कथानक दो भागों में बँटा हुआ है। कबरी बिल्ली की करतूतो से लेकर उस पर पाटा गिरता हे तब तक कथानक का एक भाग समाप्त हो जाता है। कबरी बिल्ली की हत्या से लेकर उस पाप के प्रायश्चित की बात तय होने तक दूसरा कथानक चलता है किन्तु इन दोनों कथानको की शृंखला टूटती नही है। इसलिए कथावस्तु प्रभावशाली बन गई है।

चरित्र चित्रण—चरित्र चित्रण कहानी का प्राण होता है इस कहानी में

चरित्र चित्रण पर पूरा ध्यान दिया गया है। इसमें वर्णित पात्र व्यक्तिगत रूप से भी कार्य क्षेत्र में उतरे हैं एवं अपनी वर्गगत विशेषताओं का भी चित्र उपस्थित करते हैं। लेखक की व्यंजना शक्ति बड़ी प्रबल है इसलिए कहानी का अक्षुण्ण प्रभाव बना रहता है। कबरी बिल्ली का चरित्र चित्रण अत्यधिक स्वाभाविक ढंग से हुआ है। पण्डित परमसुख का व्यक्तिगत एवं वर्गगत व्यक्तित्व कुशलता से चित्रित किया गया हैं। रामू की बहू की अल्हड़ता एवं जागरूकता दोनों ही आयु के अनुसार हैं। मिसरानी, महरी, किसनू की मां, रामू की माँ एवं घन्नू की दादी स्त्रियोचित धर्मभीरू स्वभाव की स्त्रियाँ हैं। पण्डित परमसुख चौबे टाइप तो हैं ही साथ ही पुरोहित टाइप भी है। जो धर्म का जाला मत्र फैलाकर धर्मभीरू प्राणियों को भयभीत करने में पूर्णतया सिद्ध-हस्त हैं। उनका लालची स्वभाव एवं बनावटी क्रोध दोनों ही यथार्थ रूप में चित्रित हुए हैं। लेखक ने चरित्र-चित्रण के द्वारा ही कहानी में प्रभाव उत्पन्न किया है। उसने अनुभव एवं निरीक्षण से इस कहानी के चरित्रों का वास्तविक रंग भरा है जिससे यह कहानी कहानी सी न लग कर वास्तविक घटना सी लगती है। यह लेखक की निपुणता का ही फल है।

कथोपकथन—कथोपकथन बड़े सजीव एवं सारगर्भित हैं। कथोपकथनों का कोई भी वाक्य निरर्थक नहीं है। इन कथोपकथनों के द्वारा ही इस कहानी के प्रमुख पात्रों के चरित्रों का विश्लेषण किया गया है। ये कथोपकथन कहानी के बीच बीच में बिखरे हुए हैं इसलिए कहानी मे लेशमात्र भी शिथिलता नहीं आने पाई है। इन कथोपकथनों की एक विशेपता यह भी है कि पात्रों के मनोभावों के अनुसार ही इनमें आरोह एवं अवरोह हुआ है। इसमें तो कोई संदेह ही नही है कि इस कहानी के कथोपकथन कथानक के विकास में पूर्णतया सहायक हुए हैं तथा कहानी को प्रभावपूर्ण बनाने में योग दिया है। लेखक की हास्य एवं व्यंग की प्रवृत्ति इन्ही कथोपकथनों मे स्पष्ट हुई है जिसके कारण कहानी प्रभावपूर्ण बन सकी है। कथोपकथन के निम्नलिखित उदाहरणों से इस कथन की पुष्टि हो जायगी।

एक ठंडी सास लेते हुए रामू की माँ ने कहा—"अब तो जो नाच नचाओगे नाचना ही पड़ेगा।"

पण्डित परमसुख जरा कुछ बिगड़ कर बोले—"रामू की मां! यह तो खुशी की बात है, अगर तुम्हे अखरता है तो न करो—मैं चला।"

"अरे पण्डितजी, रामू की माँ को कुछ नहीं अखरता—बेचारी को कितना दुख है! बिगड़ो ना" मिसरानी, छन्नू की दादी और किसनू की माँ ने एक स्वर में कहा।

देश काल—कहानी में देशकाल का ध्यान भी पूरा रखा जाता है। इस कहानी में भी देशकाल का ध्यान रखा गया है। स्त्रियों का धर्मभीरु स्वभाव एवं पुरोहितों की मनमानी भारतवर्ष की जलवायु की प्रमुख देन है। पशु पक्षी को मारने से भी यहां हत्या लगती रही है और उस हत्या का प्रायश्चित भी होता रहा है। कहानीकार ने सजग रह कर अपनी कहानी का निर्माण किया है जिससे तत्कालीन सामाजिक मनोवृत्ति पूर्णतया प्रतिबिम्बित हो सकी है। पण्डित परमसुख का आडम्बर, रामू की माँ की धर्म भीरु प्रवृत्ति, रामू की बहू की कबरी बिल्ली पर झल्लाहट इन सब का वर्णन औचित्य की सीमा में ही रहा है। इसलिए देशकाल की दृष्टि से भी यह कहानी सफल है।

शैली—श्री भगवतीचरण वर्मा की वर्णन शैली हास्य एवं व्यंग से पुष्ट होने के कारण मानव के मानस को गुदगुदा देने की सामर्थ्य रखती है। इनका बात कहने का ढंग रोचक है। इनके विचार प्रगतिशील है इसलिए इनकी शैली पर भी उन विचारो की छाप देखने को मिलती है इनकी शैली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वर्णन के द्वारा जो प्रभाव यह उत्पन्न करना चाहते है, कर देते हैं। इन्होने दैनिक जीवन की घटनाओं को लेकर बहुत कुछ लिखा है इसलिए इनकी शैली में तीखापन खूब पनपा है। इनकी भाषा मुहावरेदार है। इसलिए उर्दू फारसी के शब्दों का प्रयोग भी इन्होंने बिना हिचकिचाहट से किया है। यह साफ बात भी कहते है और समय-समय पर चुटकी भी लेते है। इस प्रकार इनकी शैली में यथार्थवाद का ही अधिक पुट रहता है। जिससे प्रभावोत्पादन मे सहायता मिलती है।

उद्देश्य—इस कहानी का उद्देश्य स्पष्ट है। लेखक स्त्रियों के धर्मभीरू स्वभाव की व्याख्या करके पुरोहितों के प्रभाव का विवरण देना चाहता है। रामू की बहू से कबरी बिल्ली की हत्या हो गई और पण्डित परमसुख जी का भाग्य खुल गया। भारत मे प्रायः ऐसा ही होना आया है। धर्मभीरू समाज पुरोहितो के हाथ कठपुतली रहा है। वे जी में आता है वैसा नाच नचाते हैं किन्तु कभी-कभी उनके समीप आया हुआ ग्रास भी छूट कर जमीन पर गिर जाया करता है जैसा इस कहानी में हुआ। पण्डित परमसुख जी के सारे स्वप्न इस

सूचना से टूट गये कि कबरी बिल्ली तो उठकर भाग गई। लेखक ने इस कहानी का अन्त नाट्कीय ढंग से किया है और इस अन्त के साथ ही लेखक का उद्देश्य भी पूरा हो जाता है।

अतः यह कहानी कला की दृष्टि से श्रेष्ठ है। इसमें कहानी के सभी तत्वों का सुन्दर ढंग से समावेश हुआ है।

प्रश्न—कहानी में शीर्षक का महत्व बताते हुए "प्रायश्चित" कहानी के शीर्षक की उपयोगिता बताइये।

उत्तर—शीर्षक कहानी का महत्वपूर्ण अंश होता है। आकर्षणहीन शीर्षक कहानी के सौंदर्य को नष्ट कर देता है। तथा ऊँट पटाँग ढंग से रखा हुआ शीर्षक कहानीकार की अज्ञानता का द्योतक होता है। शीर्षक में पाठक को आकृष्ट करने की क्षमता होनी चाहिए। प्रायः शीर्षक से ही पाठकगण कहानी का अन्दाज लगा लिया करते हैं। शीर्षक में विशिष्टता होनी आवश्यक है। सामान्य शीर्षक मन पर उतना प्रभाव नही डालता जितना प्रभाव उसे डालना चाहिए। इसलिए कुशल कहानी लेखक कहानी का शीर्षक चुनने में बड़े जागरूक रहते हैं। शीर्षक रखने के कोई विशेष नियम तो नहीं हो सकते फिर भी लेखकगण प्रायः या तो प्रमुख पात्र के नाम पर शीर्षक रखते हैं। यदि पात्र के नाम पर शीर्षक नहीं रखा गया हो तो फिर निम्नलिखित प्रकार से शीर्षक की सृष्टि की जाती है—

(क) कहानी के प्रधान भाव, रस अथवा विषय के आधार पर।

(ख) कहानी की प्रमुख घटना के आधार पर।

(ग) स्थान विशेष के नाम के आधार पर।

(घ) मुख्य कथानक के सूत्र के आधार पर।

इन उपर्युक्त आधारों के अतिरिक्त भी शीर्षक रखे जाते हैं। शीर्षक का प्रयोग कहानीकार की अपनी बुद्धिमत्ता का भी द्योतक है क्योंकि कभी कभी शीर्षक ही कहानी के प्रति आकर्षण के भाव तथा आकर्षण हीनता के भाव जागृत कर देता है।

प्रायश्चित कहानी का शीर्षक "प्रायश्चित" बहुत उपयोगी है। इस शीर्षक में सम्पूर्ण कथानक का सार तो निहित है ही, इसके अतिरिक्त इसमें आकर्षण भी है। कहानी हाथ मे लेते ही पाठक के हृदय में अनेक प्रकार के प्रश्न उत्पन्न होने लगते है। किस पाप का प्रायश्चित, किसके द्वारा प्रायश्चित, क्यों प्रायश्चित, कैसे प्रायश्चित ये सब प्रश्न उसके हृदय मे एक साथ उठते हैं और वह इनका समाधान

करने के लिए तत्काल कहानी पर डालना चाहता है। कहानी का कथानक ज्यों ज्यों आगे बढ़ता जाता है प्रायश्चित का रूप भी सामने आता जाता है। इस प्रायश्चित में धर्म भीरु नारी के स्वभाव एवं पुरोहितों के आडम्बर का सूक्ष्म विश्लेषण होता जाता है। एक हत्या के पाप के बोझ से दबी जा रही है और दूसरा अपना कमाई का अवसर पाकर मन ही मन प्रसन्न होता जाता है। एक के सिर पर बोझ है दूसरे की पोथी पत्रों में चाँदी छिपी हुई है प्रायश्चित करवाने वाला अधिक से अधिक अपनी पाकिट में रख लेना चाहता है। लेखक पाठक के मन और मस्तिष्क पर एक प्रभाव छोड़ना चाहता है। इसलिए उसने हास्य एवं व्यंग का सहारा लेकर जो कथानक तैयार किया है वह करारी चोट करने वाला बनाया गया है। इस करारी चोट को कहानी के शीर्षक 'प्रायश्चित' ने और भी सबल बनाया है। रामू की बहू ने कबरी बिल्ली को मार डाला। निश्चय ही उसने पाप किया किन्तु यह पाप धुल भी सकता है। शास्त्रो मे पाप के धोने के भी विधान है, होना चाहिए पैसा। पैसा तो जजमान का खर्च होगा ही किन्तु पण्डित जी ऐसा उपाय अवश्य बता देंगे जिससे कुम्भीपाक नरक का पाप भी धुल सके। पाप धुले या न धुले उनके पास अधिक से अधिक मात्रा मे धन आ सके। कहानीकार प्रगतिशील प्राणी है। इसलिए उसने धर्मभीरू नारी एवं अवसरवादी पंडित जी के स्वभाव का चित्रण करके एक ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास किया है जो रूढ़िवाद पर करारी चोट करने वाला हो। कहानी की संपूर्ण कथावस्तु केवल मात्र कबरी बिल्ली की हत्या से सम्बन्धित रखी गई है इसलिए इसका सम्पूर्ण प्रभाव प्रायश्चित मे केन्द्रित हो गया है। कहानीकार ने इसका शीर्षक प्रायश्चित रख कर कहानी के सम्पूर्ण रहस्य को इस शीर्षक में निहित कर दिया है। अतः यह शीर्षक ही इस कहानी के रहस्योद्घाटन की एक मात्र कुंजी है। कबरी बिल्ली की हत्या हो गई थी इसलिए प्रायश्चित की तैयारियाँ आरम्भ हुई थी किन्तु कहानी के अन्त में पता लगता है कि वह बिल्ली वास्तव में मरी नही थी मूर्छित हो गई थी इसलिए दो घण्टो में उठकर दौड़ गई। उसके दौड़ते ही प्रायश्चित का प्रश्न ही समाप्त हो गया। इस प्रश्न की समाप्ति में

की माँ का सौख्य एवं पंडित परमसुख का दुख निहित है। पंडित जी के से शिकार ही निकल गया जिसका क्या कम पश्चात्ताप उनको हुआ होगा वे तो घर पर पण्डिताइन को भोजन बनाने के लिए भी मना कर आए थे—

माल मिलने की सम्भावना जो थी। किन्तु प्रायश्चित अपनी तैयारी तक आकर नहीं हुआ। जब पाप ही नहीं रहा तो प्रायश्चित किस बात का होता? कहानीकार ने पण्डित परमसुख जी की लालची वृत्ति दिखा कर प्रायश्चित की विडम्बना बताना चाहा है और उसमें वह सफल हुआ है। यह शीर्षक ही इस कहानी के लिए उपयुक्त हो सकता था। इसमें जितना बल एवं सार है उतना बल एवं सार इस कहानी के कथानक के दूसरे शीर्षक में हो ही नहीं सकता है। अतः यह "प्रायश्चित" शीर्षक बहुत ही महत्वपूर्ण है।

कोटर और कुटीर

प्रश्न—संक्षेप में श्री सियारामशरण गुप्त का परिचय देकर 'कोटर एवं कुटीर' नामक कहानी को संक्षेप में लिखो।

उत्तर—श्री सियारामशरण गुप्त कवि होने के साथ ही उपन्यासकार एवं कहानी लेखक भी हैं। आप आदर्शवादी हैं। इसलिए आपकी रचनाओं में भी आदर्शवाद खूब पनपा है। आपने ऐसे पात्रों की कल्पना की है जिनकी आत्माएँ पवित्र एवं उच्च कोटि की हैं। इनकी रचनाओं में प्रेमचन्दजी की भाँति देहाती समाज एवं देहाती वातावरण का सफल चित्रण हुआ है। इन्होंने अपनी कल्पना के सहारे देहाती समाज के भिन्न-भिन्न चित्र खींचे हैं वे बहुत ही भावपूर्ण हैं। कहानीकार के रूप में भी गुप्तजी को अत्यधिक सफलता मिली है। इनकी कहानियाँ कलापूर्ण एवं मर्मस्पर्शी हैं। इन्होंने अपनी कहानियों में पात्रों का चरित्र चित्रण बहुत ही सफलतापूर्वक किया है। उनके सभी पात्रों में प्रेम एवं स्नेह है। इस प्रेम एवं स्नेह के कारण कभी पात्रों का उत्थान होता है और कभी पतन होता है। गुप्तजी ने साधारण ग्रामवासियों की अंध भक्ति, विश्वास और भावनाओं का सुन्दर चित्र खींचा है।

कहानी का संक्षेप—एक दिन दोपहर में प्यासे चातक पुत्र ने अपने पिता से कहा कि प्यास के मारे दम घुटता जा रहा है। अब यह प्यास बर्दाश्त नहीं होगी। आप वर्षा की प्रतीक्षा करते रहें, मैं तो कहीं न कहीं से जल ग्रहण करूँगा। चातक ने अपने पुत्र को समझाना चाहा कि अपने कुल की मर्यादा ही यह है कि हम स्वाति जल ग्रहण करते हैं। चातक पुत्र के यह बात समझ में नहीं आई। वह क्यों ऐसा कठोर व्रत रखे? मनुष्य ने जब से मेघों पर अविश्वास करके कृषि की रक्षा के लिए अनेक प्रकार के उपाय कर लिए हैं, तो वह मेघों के अतिरिक्त दूसरा जल ग्रहण क्यों न करे? उसने कहा कि—

से गंगा का जल ग्रहण करूँगा। इसलिए वह बाद गंगा का जल ग्रहण करने के लिए उड़ गया। उसने जल नहीं पाया थी। इसलिए तीसरी उड़ान की थकान मिटाने के लिए चातक पुत्र बुद्धन के आँगन के नीम के वृक्ष पर जा कर बैठा। बुद्धन के घर की दीवारें सीलीं पोली थीं। बुद्धन नीम के पेड़ के नीचे ही लेट रहा था। वह लगभग पचास वर्ष का था, तथा पक्षाघात से पीड़ित था। उसका एक मात्र सहारा उसका पुत्र गोकुल था जिसकी आयु १५-१६ वर्ष के लगभग थी। वह मेहनत मजदूरी करके घर का खर्च चलाता था उस दिन जब चातक पुत्र नीम के पेड़ पर बैठा था, गोकुल रात्रि में बहुत देर से आया और उसने अपने पिता बुद्धन को सूचना दी कि आज मजदूरी नही मिली। गोकुल ने बताया कि आज इंजीनियर साहब ओवरसियर साहब को फटकार गये, जिसकी जलन उन्होंने मजदूरों पर निकाली। वह मजदूरी पर से लौट रहा था तो उसे एक बटुआ मिला। इसको उसने उठा लिया और उस आदमी को लौटाने दौड़ा जो बैलगाड़ी मे बैठा उधर से गया था बटुआ पाकर बटुआ का मालिक अत्यधिक प्रसन्न हुआ था। उसने गोकुल को दो रुपये इनाम के रूप मे देना चाहा था, किन्तु उसने उन्हे ग्रहण नही किया। गोकुल ने बुद्धन को बताया कि उसने उन दो रुपयो को यह कहकर लेने से इन्कार किया था कि मेरे बप्पा ने किसी से भीख लेने के लिए मुझे मना कर रखा है। इस वृत्तान्त को सुनकर बुद्धन गद्गद् हो गया। उसने गोकुल से कहा कि बेटा जिस प्रकार चातक प्राण देकर भी मेघ के सिवा किसी दूसरे जल लेने का व्रत नही तोड़ता, उसी तरह तू भी ईमानदारी की टेट न छोड़ना। चातक पुत्र की आँख में से आँसू आ आगे। वह दूसरे दिन वापस अपने कोटर की ओर लौट पड़ा। दूसरे दिन से ही मेघों की झड़ी लग गई थी। इसलिए उसे वापस कोटर पर पहुँचने में सात दिन लग गये।

प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से 'कोटर और कुटीर' कहानी की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—इस कहानी के लेखक श्री सियारामशरण गुप्त है। आपकी कहानियों मे गहरी अनुभूति, भावनता तथा मर्यादा पालन के भाव व्यक्त होते है। इस कहानी मे भी इन गुणों का समावेश हुआ है। यह कहानी इनकी बहुत ही सुन्दर रचना है। अब हम इसे कहानी कला के तत्त्वों पर कसकर इसका मूल्यांकन करते है :

कथावस्तु—इस कहानी की कथावस्तु का चयन सुन्दर एवं शिक्षाप्रद है।

चातक के लिए यह प्रसिद्ध है कि यह मेघों के अतिरिक्त अन्य जल ग्रहण नहीं करता है। लेखक ने चातक पुत्र की चातक से वार्तालाप करवाकर इस मर्यादा का महत्व वतलाने का प्रयास किया है। इस कहानी की कथावस्तु को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम भाग चातक एवं चातक पुत्र के वार्तालाप का है, तथा दूसरा भाग बुद्धन एवं उसके पुत्र गोकुल के वार्तालाप का है। कथानक के इस प्रकार के संगठन में इस कहानी का शीर्षक 'कोटर और कुटीर' पूर्णतः सार्थक वन गया है। चातक पुत्र प्यास के कष्ट मे अत्यधिक दुःखी हो जाता है और मेघों के जल के अतिरिक्त अन्य जल ग्रहण न करने की कुल की मर्यादा को तोड़कर अन्य जल ग्रहण करने के लिए कोटर से उड़ जाता है। वह कुल मर्यादा को निरर्थक समझता है। वह उड़ता हुआ थककर बुद्धन के आंगन के नीम पर जा वैठता है। बुद्धन ने अपने पुत्र गोकुल को ईमानदारी की शिक्षा दी थी। गोकुल ने जव महतो को उसका वटुआ वापस लौटाकर अपनी ईमानदारी का परिचय दिया तो बुद्धन की आत्मा अत्यधिक प्रसन्न हुई। उसने गोकुल से फिर आग्रह किया कि जैसे चातक अपने व्रत पर स्थिर रहता है उसी प्रकार वह ईमानदारी के व्रत पर सदैव स्थिर रहे। चातक पुत्र को भी बुद्धन के इस कथन से अपने कुल की मर्यादा रखने की प्रेरणा मिलती है और वह वापस अपने कोटर की ओर लौट जाता है। इस प्रकार से इस कहानी की कथावस्तु में मर्यादा पालन की प्रेरणा एवं आदर्शों की रक्षा का आग्रह है। जो हृदय पर गहरा प्रभाव डालती है।

चरित्र चित्रण—कहानीकार ने चरित्र चित्रण पर काफी ध्यान दिया है। इस कहानी मे कुल चार ही पात्र हैं—(१) चातक (२) चातक पुत्र (३) बुद्धन एवं (४) गोकुल। इन सभी पात्रों में सजीवता है। चातक पुत्र के चरित्र का विकास वहुत अच्छा हुआ है। चातक अपने कुल की मर्यादा को महत्व देता है। उसका ऐसा विश्वास है कि उसकी प्रतीक्षा की रक्षा करने के लिए मेघों को जल वृष्टि करनी पड़ती है। अतः उस जल वृष्टि से पृथ्वी भी हरी भरी हो जाती है तथा अपने अन्य व्यक्तियों की आशा पूर्ण होती है। व्रत में कष्ट तो होता ही है किन्तु उसका फल भी मधुर ही मिलता है। लेखक ने चातक के वास्तविकत्व का अच्छा विश्लेषण किया है। चातक पुत्र के हृदय में विश्वास नही है। वह केवल मेघों के जल से प्यास बुझाने के व्रत को इस जमाने के अनुकूल नही

समझता। उसकी दृष्टि में यह अन्ध विश्वास मात्र है। मनुष्यों को ही जब मेघों पर विश्वास नहीं रहा तो चातक पक्षी मेघो का विश्वास करके प्यासा क्यों मरे इसलिए वह अपने पिता की मान्यताओं के विरुद्ध विद्रोह करके गंगा का जल ग्रहण करने के लिए उड़ जाता है। बुद्धन के मुँह से जब चातक के व्रत की प्रशंसा सुनता है तो उसे ज्ञान होता है कि व्रत अथवा प्रतिज्ञा का बहुत महत्व है। कुल की मर्यादा के लिए प्राण देना गौरव की बात है। उसके चरित्र को निपुणता से चित्रित किया है। गोकुल चरित्र सर्वाधिक प्रभावशाली एवं प्राण-वान है। लेखक ने उसका चित्रण भी मर्मस्पर्शी किया है। वह भूखा रह सकता है किन्तु अपनी नीयत नहीं डिगा सकता। बिना परिश्रम से प्राप्त धन को वह भिक्षा समझता है, चाहे वह उसे भेंट स्वरूप ही मिले और भिक्षा लेना उसके स्वभाव एवं संस्कार के प्रतिकूल है। इसलिए उसने महती से इनाम के दो रुपये नहीं लिए बुद्धन के चरित्र में प्रेरणा है। इस विश्व का वैभव अस्थायी है किन्तु मनुष्य की निश्छल मनोवृत्ति मानवता की स्थायी सम्पत्ति है। मनुष्य को इसी सम्पत्ति का अर्जन करना चाहिए। बुद्धन के चरित्र से लेखक ने इसी सत्य का उदघाटन किया है। बुद्धन ने ही गोकुल मे अच्छे संस्कार डाले थे। उन संस्कारों को फलता-फूलता देखकर उसे प्रसन्न ही होना चाहिए था। जब उसने गोकुल के मुँह से सुना कि महती का रुपयो से भरा हुआ बटुआ लौटा दिया तथा पुरस्कार के दो रुपये स्वीकार नही किये, तो बुद्धन की आत्मा मुखरित हो उठी। वह अपनी भूख की ज्वाला को भी इस प्रसन्नता मे सहन कर गया तथा गोकुल को आर्शीवाद दिया कि वह अपने ईमानदारी के व्रत को सदैव स्थिर रखे। इस प्रकार बुद्धन एवं गोकुल तथा चातक का आदर्श चरित्र हमारे सामने आया है और चातक पुत्र का चंचल-स्वभाव का चित्रण हुआ है। चातक पुत्र को भी बुद्धन के कथन से कुल की मर्यादा पर प्राण देने की प्रेरणा मिली है और उसके चरित्र में सहसा परिर्वतन आया है जो स्वाभाविक है। चरित्र चित्रण की दृष्टि से भी यह कहानी सफल है।

कथोपकथन—इस कहानी के कथोपकथन मार्मिक एवं प्रभावशाली हैं। लेखक की गहरी अनुभूति इन कथोपकथनो में टपकती है। कथोपकथन स्वाभाविक पात्रानुकूल एवं सजीव है। इन कथोपकथनों के कथानक में गति उत्पन्न हुई है तथा कला का विकास हुआ है। इन कथोपथकनों का सबसे अधिक महत्व इसलिए भी है कि इसके द्वारा सिद्धान्तों का प्रतिपादन हुआ है किन्तु

फिर भी कथोपकथन अरुचिकर अथवा अधिक लम्बे नहीं होने पाये हैं। कथानक की विखरी हुई घटनाओं को इन कथोपकथनों की सहायता से संगठित किया गया है। कथोपकथनों का कोई भी वाक्य निरर्थक नहीं है इसलिए कला की दृष्टि से कहानी उच्च कोटि की वन सकी है। इस कहानी के कथोपकथनों में स्वाभाविकता का निर्वाह खूब अच्छा हुआ है चातक एवं चातक पुत्र का वार्तालाप तो जरा देखिए—

चातक ने अपनी चोंच कुमार की पीठ पर फेरते हुए प्यार से पूछा—"क्या है वेटा ?"

"है और क्या ? प्यास के मारे चोंच तक प्राण आगये हैं।"

"वेटा अधीर न हो। समय सदा एकसा नहीं रहता।"

"तो यही मैं भी कहता हूँ—समय सदा एकसा नहीं रहता। पुरानी वातें पुराने समय के लिए थीं। आप अव भी उन्हें इस तरह छाती से चिपकाये हुए हैं जिस तरह वानरी मरे वच्चे को चिपकाये रहती है। घनश्याम की वाट आप जोहते रहिये। अव मुझ से वह नहीं सध सकता।"

इस प्रकार कथोपकथनों से चरित्र विश्लेषण भी सुन्दर ढंग से हो सका है। लेखक ने इन्हीं कथोपकथनों की सहायता से वातावरण की भी सृष्टि की है।

देशकाल—इस कहानी में देशकाल का भी अच्छा निर्वाह हुआ है। अविश्वास इस युग की देन है। चातक पुत्र को इस मान्यता में ही अविश्वास हो रहा है कि मेघों को चातकों की प्यास वुझाने के लिए आना ही पड़ता है। इस युग मे चातक पुत्र की दलीलें सारगर्भित हुए विना नही रह सकती हैं। क्यों कि यह युग पुरानी प्रथाओं को छोड़ने एवं नई प्रथाएँ अपनाने पर वल देता है। अव प्रत्येक वात चाहे वह धार्मिक विश्वास हो अथवा सामाजिक प्रणाली, तर्क के आधार पर आँकी जाती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखी जाती है इसलिए चातक पुत्र की शंकाओं को इस विश्वास के साथ ग्रहण करते हैं। वुद्धन का मकान पूर्णतया एक देहाती का मकान है जिस पर न तो पूरा सा छप्पर है और जिसमें न पूरे से उजालदान हैं। वुद्धन का शरीर भी जीर्ण है किन्तु उसमें स्वस्थ आत्मा है जो प्रेरणा दे सकती है। गोकुल को उसी से प्रेरणा मिलती रहती है और भटके हुए चातक पुत्र को भी उसी से मर्यादा की प्रेरणा मिली है। गोकुल की ईमानदारी उसके समान संस्कार वाले व्यक्ति की ईमानदारी है जो प्रायः भारतीय व्यक्तियो में देखी जाती है। गरीव व्यक्ति अपनी नीयत को प्रायः नही डिगने देते।

शैली—इस कहानी की शैली प्रभावोत्पादक है। छोटे-छोटे वाक्यों से सारगर्भित तथ्यों का स्पष्टीकरण किया गया है। भाषा में न दुरूहता है और न पाण्डित्यपने की छाप। सीधी सादी बात सीधे सादे ढंग से कही गई है। लेखक ने इस बात का आग्रह भी नहीं रखा है कि केवल तत्सम शब्दों का ही प्रयोग किया जाए। इसलिए शैली में भी दुरूहता नहीं आने पाई है। कहानीकार अपनी कहानी सुनाता चलता है और पाठक उसके मर्म को समझते चलते हैं। उन्हें रुककर सोचने एवं समझने के लिए प्रयास नहीं करना पड़ता। स्थान एवं पात्र के अनुसार शब्दावली का प्रयोग हुआ है। इस शैली में व्यंग नहीं है, विश्लेषण है। गुप्त जी आदर्शवादी जीव हैं इसलिए उनकी शैली भी आदर्श चरित्रों के निर्माण में अधिक निखरी है।

उद्देश्य—इस कहानी का उद्देश्य मर्यादा-पालन की प्रेरणा देना है। चातक पुत्र मर्यादा को प्राचीन विश्वास कहकर छोड़ देता है गोकुल का आदर्श उसके जब सामने आता है और बुद्धन के मुँह मे चातक कुल की मर्यादा की प्रतिष्ठा सुनता है तो वह अपनी भूल अनुभव करता है और अपने कुल की मर्यादा स्थिर रखने का दृढ निश्चय करता है। गोकुल के चरित्र के द्वारा मानवता का महत्व दिखाना भी कहानी के उद्देश्य मे ही सम्मिलित है।

यह कहानी, कहानी कला की दृष्टि से पूर्णतः सफल है एवं कहानी जगत में अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

प्रश्न—अच्छी कहानी की प्रमुख विशेषताएँ बताकर 'कोटर और कुटीर' नामक कहानी को उन विशेषताओं की दृष्टि से आँकिए।

उत्तर—विद्वानो ने अच्छी कहानी की विशेषताएँ निम्नलिखित बताई हैं—

(१) अच्छी कहानी की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि वह ऐसी होनी चाहिए कि एक ही बैठक मे पढी जा सके।

(२) उसका आरम्भ और अन्त सहसा होना चाहिए।

(३) जीवन की किसी एक ही घटना पर प्रकाश डालने वाली होनी चाहिए।

(४) पात्रों की अल्पता होनी चाहिए।

(५) १००० से ३००० तक की ही शब्द संख्या होनी।

(६) कथानक जटिल नही होना चाहिए।

(७) कार्य की एकता होनी चाहिए।

(८) संवेदना की एकता होनी चाहिए।

(९) किसी एक निश्चित लक्ष्य अथवा प्रभाव को लेकर लिखी गई होनी चाहिए।

(१०) इसका कोई मनोवैज्ञानिक आधार होना चाहिए।

अच्छी कहानी के सम्बन्ध मे लगभग सभी विद्वानों के मतों का सार उपर्युक्त सिद्धान्तों में अन्तर्निहित है। इसलिए इन्हें ही अच्छी कहानी की विशेषता अथवा गुण कहा जा सकता है। यदि उपर्युक्त नियमों को ध्यान में रखकर श्री सियाराम शरण गुप्त की—कोटर और कुटीर कहानी पर विचार करें तो हमें उसके अच्छी अथवा बुरी होने के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करने का आधार मिल जायगा।

कोटर और कुटीर कहानी को हम एक ही बैठक में पढ़ सकते हैं क्योंकि इसका आकार बड़ा नही है। इस कहानी का आरम्भ एवं अन्त भी सहसा ही हुआ है। लेखक ने लम्बी चौड़ी भूमिका बाँधने का प्रयास नही किया है प्रत्युत अपनी बात शीघ्रता से कहना आरम्भ कर दिया है। यही हाल कहानी के अन्त में रखा है। चरम सीमा पर पहुँचते ही कहानी का अन्त हो गया है। कुल-मर्यादा-पालन की एक घटना को ही प्रमुखता दी गई है और इस घटना मे बहुत कम पात्रों को सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार कुल मिलाकर पांच पात्र ही इस कहानी के है। चातक, चातकपुत्र, बुद्धन, गोकुल एवं महतो। महतो केवल गोकुल की महत्ता बताने के लिए आवश्यक हो गया था, अन्यथा केवल चार पात्र ही इस कहानी में प्रमुख है। अतः इस कहानी में पात्रों की अल्पता है। कहानी के लिए जो १००० से ३००० तक शब्दों की पाबदी लगाई गई है उसका अभिप्राय स्पष्ट रूप से यह है कि वह आकार में बड़ी न हो जाय। इस कहानी में लगभग २००० शब्द ही हैं। इसलिए इसका आकार भी बड़ा नहीं हुआ है। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि इस कहानी का कथानक जटिल नहीं है। जिस मर्यादा पालन का आग्रह चातक अपने पुत्र से करता है वही आग्रह बुद्धन अपने पुत्र गोकुल से करता है एवं मर्यादा पालन की शिक्षा चातक पक्षी से लेने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार विभिन्न घटनाओं को एक ही दिशा मे प्रवाहित करके कार्य की एकता स्थिर रखी गई है। इस कार्य की एकता का प्रभाव यह हुआ है कि समवेदना केन्द्रित होगई है जिससे पाठक पर एक ही प्रभाव पड़ता है और वह प्रभाव मर्यादा पालन का है। लेखक मर्यादा पालन के महत्व को स्पष्ट करना चाहता है। इसी

शैली—इस कहानी की शैली प्रभावोत्पादक है। छोटे-छोटे वाक्यों से सारगर्भित तथ्यों का स्पष्टीकरण किया गया है। भाषा में न दुरूहता है और न पाण्डित्यपन की छाप। सीधी सादी बात सीधे सादे ढंग से कही गई है। लेखक ने इस बात का आग्रह भी नहीं रखा है कि केवल तत्सम शब्दों का ही प्रयोग किया जाए। इसलिए शैली में भी दुरूहता नहीं आने पाई है। कहानीकार अपनी कहानी सुनता चलता है और पाठक उसके मर्म को समझते चलते हैं। उन्हें रुककर सोचने एवं समझने के लिए प्रयास नहीं करना पड़ता। स्थान एवं पात्र के अनुसार शब्दावली का प्रयोग हुआ है। इस शैली में व्यंग नहीं है, विश्लेषण है। गुप्त जी आदर्शवादी जीव हैं इसलिए उनकी शैली भी आदर्श चरित्रों के चित्रण में अधिक निखरी है।

उद्देश्य—उक्त कहानी का उद्देश्य मर्यादा-पालन की प्रेरणा देना है। चातक पुत्र मर्यादा को प्राचीन विश्वास कहकर छोड़ देता है गोकुल का आदर्श उसके जब सामने आता है और बुद्धन के मुँह से चातक कुल की मर्यादा की प्रतिष्ठा सुनता है तो वह अपनी भूल अनुभव करता है और अपने कुल की मर्यादा स्थिर रखने का दृढ़ निश्चय करता है। गोकुल के चरित्र के द्वारा मानवता का महत्व दिखाना भी कहानी के उद्देश्य में ही सम्मिलित है।

यह कहानी, कहानी कला की दृष्टि से पूर्णतः सफल है एवं कहानी जगत में अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

प्रश्न—अच्छी कहानी की प्रमुख विशेषताएँ बताकर 'कोटर और कुटीर' नामक कहानी को उन विशेषताओं की दृष्टि से आँकिए।

उत्तर—विद्वानों ने अच्छी कहानी की विशेषताएँ निम्नलिखित बताई है—

(१) अच्छी कहानी की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि वह ऐसी होनी चाहिए कि एक ही बैठक में पढ़ी जा सके।

(२) उसका आरम्भ और अन्त सहसा होना चाहिए।

(३) जीवन की किसी एक ही घटना पर प्रकाश डालने वाली होनी चाहिए।

(४) पात्रों की अल्पता होनी चाहिए।

(५) १००० से ३००० तक की ही शब्द संख्या होनी।

(६) कथानक जटिल नहीं होना चाहिए।

(७) कार्य की एकता होनी चाहिए।

(८) संवेदना की एकता होनी चाहिए।

(९) किसी एक निश्चित लक्ष्य अथवा प्रभाव को लेकर लिखी गई होनी चाहिए।

(१०) इसका कोई मनोवैज्ञानिक आधार होना चाहिए।

अच्छी कहानी के सम्बन्ध में लगभग सभी विद्वानों के मतों का सार उपर्युक्त सिद्धान्तों में अन्तर्निहित है। इसलिए इन्हें ही अच्छी कहानी की विशेषता अथवा गुण कहा जा सकता है। यदि उपर्युक्त नियमों को ध्यान में रखकर श्री सियाराम शरण गुप्त की—कोटर और कुटीर कहानी पर विचार करें तो हमें उसके अच्छी अथवा बुरी होने के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करने का आधार मिल जायगा।

कोटर और कुटीर कहानी को हम एक ही बैठक में पढ़ सकते हैं क्योंकि इसका आकार बड़ा नहीं है। इस कहानी का आरम्भ एवं अन्त भी सहसा ही हुआ है। लेखक ने लम्बी चौड़ी भूमिका बाँधने का प्रयास नही किया है प्रत्युत अपनी बात शीघ्रता से कहना आरम्भ कर दिया है। यही हाल कहानी के अन्त में रखा है। चरम सीमा पर पहुँचते ही कहानी का अन्त हो गया है। कुल-मर्यादा-पालन की एक घटना को ही प्रमुखता दी गई है और इस घटना मे बहुत कम पात्रों को सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार कुल मिलाकर पांच पात्र ही इस कहानी के है। चातक, चातकपुत्र, बुद्धन, गोकुल एवं महतो। महतो केवल गोकुल की महत्ता बताने के लिए आवश्यक हो गया था, अन्यथा केवल चार पात्र ही इस कहानी में प्रमुख हैं। अतः इस कहानी में पात्रों की अल्पता है। कहानी के लिए जो १००० से ३००० तक शब्दों की पाबदी लगाई गई है उसका अभिप्राय स्पष्ट रूप से यह है कि वह आकार में बड़ी न हो जाय। इस कहानी में लगभग २००० शब्द ही हैं। इसलिए इसका आकार भी बड़ा नहीं हुआ है। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि इस कहानी का कथानक जटिल नहीं है। जिस मर्यादा पालन का आग्रह चातक अपने पुत्र से करता है वही आग्रह बुद्धन अपने पुत्र गोकुल से करता है एवं मर्यादा पालन की शिक्षा चातक पक्षी से लेने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार विभिन्न घटनाओं को एक ही दिशा में प्रवाहित करके कार्य की एकता स्थिर रखी गई है। इस कार्य की एकता का प्रभाव यह हुआ है कि समवेदना केन्द्रित होगई है जिससे पाठक पर एक ही प्रभाव पड़ता है और वह प्रभाव मर्यादा पालन का है। लेखक मर्यादा पालन के महत्व को स्पष्ट करना चाहता है। इसी

लक्ष्य को ध्यान में रखकर उसने अपनी कहानी का आरम्भ किया है और अन्त में इसी लक्ष्य की पूर्ति हो जाती है। चातक पुत्र प्यास से पीड़ित होकर मेघों के अतिरिक्त गंगा का जल ग्रहण करने उड़ा था किन्तु मार्ग में बुद्धन के मुंह से कुल मर्यादा के पालन की बात के साथ ही चातक कुल की मर्यादा-पालन की निष्ठा का उदाहरण सुनकर अपनी गंगा जल ग्रहण की इच्छा छोड़कर अपने कुल की मर्यादा बनाये रखने के हेतु मेघों का जल ग्रहण करना ही अपना कर्त्तव्य समझता है तथा पुनः अपने कुटीर की ओर लौट आता है। इस प्रकार लेखक ने एक ही लक्ष्य को लेकर यह कहानी लिखी है। इस कहानी का आधार भी पूर्णतः मनोवैज्ञानिक है। नये युग के साथ नई विचार धारा ने अवश्य जन्म लिया है। इस विचार धारा में आदर्शवाद कम एवं बुद्धिवाद अधिक है। किन्तु कुल की मर्यादा का पालन भी एक तपस्या है और तपस्या में कष्ट होता ही है। जिसमें कष्ट नही होता वह तपस्या नही कही जा सकती। चातक केवल मेघों का जल ही ग्रहण करता है। अतः मेघो से जल प्राप्त करने के लिए उसे लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ती है। यह लम्बी प्रतीक्षा कठोर तपस्या ही तो है। आज के बुद्धिवादी युग मे प्रत्येक प्राचीन परम्परा को रूढिवाद कहकर त्याग देना साधारण सी घटना है। चातक पुत्र भी मेघों से प्राप्त जल को ही ग्रहण करना रूढिवाद एवं अनर्गल विश्वास समझ कर गंगा का जल ग्रहण करने के लिए उड़ान भरता है किन्तु मार्ग मे बुद्धन की बात सुनकर उसे ध्यान आता है कि केवल मात्र मेघों का जल ग्रहण करने से चातक कुल का एक आदर्श स्थापित हो गया है। उस आदर्श का लोगों के द्वारा सम्मान होता है। तपस्या कभी निरर्थक नही जाती। अतः वह स्वयं अपना जीवन तपस्या एवं त्याग का बनाने का निश्चय कर लेता है।

कोटर और कुटीर कहानी में वे सब गुण विद्यमान है जो एक अच्छी कहानी में होने चाहिए। अतः यह निश्चित रूप से एक अच्छी कहानी है।

प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) "तो यही तो मैं भी कहता हूँ—समय सदा एकसा नही रहता। पुरानी बातें पुराने समय के लिए थी। आप अब भी उन्हें इस तरह छाती से चिपकाये हुए है, जिस तरह वानरी मरे बच्चे को चिपकाये रहती है। घनश्याम की बाट आप जोहते रहिए। अब मुझ से वह नही सध सकता।"

उत्तर—ये पंक्तियां सियाराम शरण गुप्त कृत कोटर और कुटीर कहानी में से उद्धृत की गई है। लेखक ने कुशलता पूर्वक चातक पुत्र के चरित्र का

विश्लेषण किया है। चातक पुत्र प्यास से पीड़ित होकर अपने पिता से कह रहा है—

यह विश्व परिवर्तनशील है। समय के साथ वस्तु में भी परिवर्तन आता है तथा तत्सम्बन्धी मान्यताएँ भी बदलती हैं। कोई भी वस्तु अथवा आदर्श सर्वदा एकसा नहीं रहता है किन्तु एक आप हैं कि पुरानी मान्यताओं को उतना ही महत्व देते चले जा रहे हैं। जितना महत्व उन्हें अतीत काल में मिलता था। वह समय ही दूसरा था, यह समय ही दूसरा है। उस समय की बातें उस समय गईं। इस समय की बातें इस समय रहेंगी। पहले ऐसा होता होगा कि मेघ भी चातक पक्षी के व्रत का ध्यान रखते होंगे। इसलिए जल्दी जल्दी बरस जाते होंगे। क्योंकि मेघ जल्दी जल्दी जल की वृष्टि कर देते थे, इसलिए चातक पक्षियों का उनसे ही जल ग्रहण करने का व्रत निभता चलता था, किन्तु अब जब मेघों ने जलवृष्टि ही कम कर दी है तो उस पुरानी प्रथा से चिपके रहने से क्या लाभ है। आप चाहें तो केवल मेघों से जल ग्रहण करने की टेक पर अड़े रहें मैं तो ऐसा नहीं कर सकता हूँ। मुझे चातक कुल के इस व्रत में कोई सार दृष्टिगोचर नहीं होता है।

विशेष—लेखक को लौकिक ज्ञान का अच्छा परिचय प्राप्त है। वानरी का अपने मरे हुए बच्चे को भी अपनी छाती से चिपकाये रहने का मोह विख्यात है। वास्तव मे जो मर चुका हो उसको छाती से चिपकाये रखना केवल मात्र मोह ही हो सकता है। यहाँ लेखक ने वानरी का उदाहरण देकर यह स्पष्ट किया है कि चातक का मेघो से जल ग्रहण के करने लिए प्यास की पीड़ा सहना प्राचीनता के लिपटे रहने का मोह ही है।

(ख) "घनश्याम के सिवा हम और किसी का जल ग्रहण नहीं करते, यही हमारे कुल का व्रत है। इस व्रत के कारण अपने गोत्र में न तो किसी की मृत्यु हुई और न कोई दूसरा अनर्थ।"

ये पंक्तियाँ सियाराम शरण कृत कोटर और कुटीर कहानी से उद्धृत की गई हैं। चातक पुत्र केवल मेघो से ही जल ग्रहण करने की प्रथा को अनावश्यक समझ कर अपने पिता से उसे छोड़ने के लिए आग्रह करता है तथा कहता है कि केवल मेघों का जल ग्रहण करना प्यासे मरना है। मेघों का क्या वे जल वृष्टि करें और न करें, फिर निरर्थक अपने प्राण गंवाने से क्या लाभ है किन्तु चातक मेघो से जल ग्रहण करने की आवश्यकता बताता हुआ कहता है—

हमारे कुल का यह व्रत है कि हम केवल मेघो से प्राप्त होने वाला जल ही

पीते है। आसमान की ओर से शुद्ध जल वर्षा के रूप में गिरता है और हम उस गिरते हुए जल को पीकर अपनी प्यास बुझाते है। हम पृथ्वी पर पड़ा हुआ जल नहीं पीते। हमें इस प्रकार जल के लिए लम्बी प्रतीक्षा अवश्य करनी पड़ती है, किन्तु इस लम्बी प्रतीक्षा मे आज तक कोई दुर्घटना नहीं घटी है। कोई चातक केवल प्यास की पीड़ा से दुखी होकर आज तक नहीं मरा है। मरना तो दूर रहा मूर्छित तक नहीं हुआ है। मेघो को हमारे व्रत का ध्यान है इसलिए वे अवश्य आते है तथा जल वृष्टि करते है। इसलिए तुम निश्चित रहो मेघ अवश्य आवेंगे तथा जल वृष्टि करेंगे। उस समय तुम अघाकर जल पान करना।

(ग) "वेटा पृथ्वी का यह निर्जीव उपवास है। इसी पुण्य से उसे जीवन दान मिलेगा। भोजन का पूरा स्वाद और तृप्ति पाने के लिए थोड़ी सी क्षुधा सहन करना अनिवार्य ही नही आवश्यक भी है।"

ये पंक्तिया सियाराम शरण गुप्त की कहानी कोटर और कुटीर मे से उद्धृत की गई है। चातक अपने पुत्र को मेघो का जल ग्रहण के महत्व को वताकर उसे अपने व्रत का महत्व समझाता है—

वेटा ! मेघो से जल प्राप्त करने की अभिलापा में अन्य जल ग्रहण न करना तथा अन्य जल ग्रहण करने की इच्छा न रखना इन्द्रियों का निग्रह है। यह इन्द्रियो का निग्रह उपवास के नाम से विख्यात है। इस उपवास का इतना प्रभाव होता है कि मेघों को जलवृष्टि करना पड़ता है। जलवृष्टि से सम्पूर्ण पृथ्वी मुखरित हो उठती है। उसके सूखे जीवन में नवीन जीवन आ जाता है। चारों तरफ हरियाली हो जाती है। लम्वी प्रतीक्षा के पश्चात् इस धरती पर वर्षा की झड़ी लगती है। वर्षा की यह झड़ी गरमी से झुलसी हुई प्रकृति को जीवनदान देती है। क्योकि वर्षा के लिए लम्वी प्रतीक्षा करनी पड़ती है इसलिएं जव वर्षा आरम्भ होती है तो पृथ्वी का प्रत्येक उपकरण खिल उठता है यदि यह वर्षा निरन्तर ही होती रहे तो इसके सम्बन्ध मे जो अभिलापा रहती है वह ही नष्ट हो जाय। इसलिए वर्षा का महत्व अनुभव करने के लिए आवश्यक है कि प्रतीक्षा करनी पड़े। अतः यह प्रतीक्षा हमारे व्रत की परीक्षा है। जितना हमें इस व्रत के पालन में कष्ट होता है उससे ही अधिक प्रसन्नता हमे तब होती है जब मेघ जलवृष्टि करते है और हमारा व्रत पूरा होता है। जिस प्रकार भोजन का वास्तविक स्वाद एवं तृप्ति पाने के लिए भूख की पीड़ा सहना स्वास्थ्यप्रद होता है उसी प्रकार मेघो के जल का स्वाद एवं महत्व जानने के लिए प्यासे रहना श्रेयस्कर है।

(घ) "एक क्षण में ही जीवन और मृत्यु का द्वन्द्व सा हो गया मानो बिजली के खटके से प्रकाश बुझाकर घर फिर से उद्दीप्त कर दिया गया हो। महतो ने कहा—भगवान तुझे सुखी रखे भैया ! इसे कहाँ पाया ?

ये पंक्तियाँ सियाराम शरण कृत कोटर और कुटीर कहानी में से उद्धृत की गई है। गोकुल रास्ते मे पड़े बटुए को लेकर महतो के पास पहुँचा। उसने उन्हें स्मरण कराया कि आपकी कोई वस्तु गिर तो नहीं गई। महतो अपनी जेब में बटुआ न पाकर उद्विग्न हो गये। इसी समय गोकुल ने उन्हें बटुआ दिखाकर पूछा कि वह उनका तो नहीं है ? बटुआ देखने पर जो महतो की अवस्था हुई उसी का यह वर्णन है—

महतो अपनी जेब में बटुआ न पाकर संज्ञा शून्य सा हो गया था किन्तु वही बटुआ गोकुल के हाथ में देखकर चमकृत होना जीवन एवं मृत्यु के द्वन्द्व के समान था। महतो को बटुआ न मिलने पर घोर निराशा हुई थी, किन्तु बटुआ मिलते ही अत्यधिक प्रसन्नता हुई। उसकी यह निराशा एवं प्रसन्नता ठीक उसी प्रकार की थी, जिस प्रकार बिजली के बटन दबाने मात्र से अन्धेरे को प्रकाश में बदल दिया गया हो। बटुआ देखते ही महतो के मुँह से गोकुल के लिए आशीर्वाद के शब्द निकल पड़े। महतो की मुखरित आत्मा को गोकुल के प्रति अपनेश सा अनुभव हुआ। महतो की जिज्ञासा जागृत हो गई। इसलिए उसने गोकुल से पूछ ही लिया कि यह बटुआ उसे कहाँ मिला था।

कुत्ते की पूँछ

लेखक—यशपालजी

प्रश्न—कहानीकार यशपाल की विशेषताएँ बता कर उनकी कुत्ते की पूंछ नामक कहानी का सारांश लिखो।

उत्तर—कहानीकार यशपाल नवीन कहानी लेखकों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनकी कहानियों में आधुनिक समाज का जीवित चित्र अंकित हुआ है। यशपाल जी पर रूसी साम्यवाद का अत्यधिक प्रभाव है इसलिए समाज की असमान प्रवृत्तियों पर इन्होने खुलकर कलम चलाई है। समाज मे व्याप्त परम्परागत रूढ़ियों अन्ध विश्वासों एवं उन रूढ़ियों तथा अन्ध विश्वासों से विकृतियाँ आई हैं उनका हृदय विदारक दृश्य इन्होने अपनी कहानियों मे अंकित किया है। इनका दृष्टिकोण प्रगतिवादी है। इसलिये आप प्रगतिवादी कहानी लेखको में अपना प्रभावशाली व्यक्तित्व रखते हैं। इनकी प्रतिभा कहानी जगत में स्वस्थ

सामग्री जुटाने में पूर्णतः व्यस्त है। इनका कहानी की कथावस्तु चुनने का अपना ढंग है। कथावस्तु सजीव एवं प्रभावशाली होती है। इनकी आरम्भिक कहानियाँ अत्यन्त कलापूर्ण होती हैं। जैसा कि अभी बताया गया है कि आप पर रूसी साम्यवाद का प्रभाव है, इस प्रभाव के कारण जहां कहीं इन्होंने केवल मात्र सिद्धान्त प्रतिपादन का प्रयास किया है वहां इनकी कहानियों में अस्वाभाविकता आगई है, किन्तु जहाँ यह अपने सिद्धान्तों से ऊपर उठ कर मानव भावनाओं के विश्लेषण में व्यस्त हुए हैं वहां इनकी कहानियों में कला अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई है तथा इनकी कहानियां अत्यधिक प्राणवान बन गई है। यशपालजी का व्यक्तिगत अनुभव विशाल है। इन्हे अनेक प्रकार की जानकारी है। अनेक प्रान्तों के रीतिरिवाजों, आचार, विचारों एवं सामाजिक भावनाओं को जानने एवं समझने का इन्होंने प्रयास किया है। इसलिए जब कभी यह अपनी कहानियों में अपनी जानकारी के बल पर प्रसंगानुसार कुछ टीका टिप्पणी करते है तो वह टीका टिप्पणी बहुत ही स्वाभाविक होती है। उससे एक विशेष प्रकार के वातावरण की सृष्टि होती है। इनकी कहानियों मे पुरुषों एवं स्त्रियों के स्वभाव एवं भावनाओं का सफल चित्रण मिलता है। इनका विश्लेषण का ढंग बहुत ही मार्मिक है। इनकी भाषा-शैली परिपक्वावस्था में है तथा कहानियों के उपयुक्त होने के कारण प्रभावशाली है। इनकी कहानियो का जनमानस पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

कहानी का-सारांश—इस कहानी लेखक की पत्नी ने "उल्टीबयार" नामक फिल्म देखने का आग्रह किया किन्तु लेखक को आफिस के कार्य से अवकाश नहीं मिल रहा था। इसलिए वह सुनी अनसुनी करता रहा। जब यह फिल्म तीसरे हफ्ते में भी चलने लगी तो इसे देखने लायक फिल्म समझ कर नौ से बारह वाले शो मे अपनी पत्नी सहित गया ही। सिनेमा देखकर लौटते समय लेखक की पत्नी अमोलख कला पर बहस करती हुई लौट रही थी कि उसका ध्यान एक हलवाई की दुकान पर जा टिका जहां हलवाई बैठा ऊंघ रहा था और एक बालक बहुत बड़ी कढ़ाई को साफ करता ऊंघ गया था। लेखक की पत्नी को यह सरासर अन्याय प्रतीत हुआ कि हलवाई इस नाजुक बच्चे से इतनी रात गए इतनी बड़ी कढ़ाई साफ करवा रहा है एवं स्वयं आराम कर रहा है। उसने उस लड़के को वहा से उठाकर अपने साथ कर लिया। लेखक ने अपनी पत्नी को मना भी किया

किन्तु वह नहीं मानी। दूसरे दिन हलवाई ने आकर लेखक को बताया कि इस लड़के के पिता ने उसके साठ रुपये लिये थे। वह रुपये लौटाने से पहले ही मर गया इसलिए उसे उसकी परवरिश और करनी पड़ रही है। अतः या तो उसे साठ रुपये दे दिये जावें अथवा लड़का वापिस लौटा दिया जावे। लेखक ने उसे कानूनी बात बताकर वहाँ से टाल दिया। इस पर उसकी पत्नी को बहुत प्रसन्नता हुई।

लेखक की पत्नी ने इस लड़के के वास्तविक नाम हरूआ को बदलकर हरीश रख लिया तथा इसे नहला धुला कर पुत्र विशू की पोशाक पहना दी तथा इसे विशू के समान ही मानने लगी तथा उसकी उसी प्रकार सम्भाल भी करने लगी। लेखक तटस्थ था। विशू चार ही वर्ष का था किन्तु अपना सनेह बँटता देखकर अनमनाः हो रहा था। हरीश शर्माया शर्माया एवं दबा दबा रहता था। लेखक की पत्नी को यह बात अखरती थी और वह उससे समानता का व्यवहार करने के लिए व्यग्र रहती थी। वह अपने पति पर व्यंग कस कर यह भी कहती थी— "पुरुष सिद्धान्त और तर्क की लम्बी बातें कर सकते है, परन्तु हृदय को खोलकर फैला देना उनके लिए कठिन है, किन्तु लेखक प्रायः चुप ही रहता। इन्हीं दिनों लेखक को शमस्तीपुर जाना पड़ा। वहाँ उसे लगभग चार मास लग गये। इस अवधि में पहले तो उसकी पत्नी के जो पत्र आते थे उन पत्रों में हरीश के सम्बन्ध में ख़ूब लिखा रहता था क़िन्तु यह प्रवृत्ति शनैः-शनैः हरीश की शिकायत में बदल गई और जब लेखक घर लौटा तो उसने अपनी पत्नी के मुँह से अनेक शिकायतें सुनीं जैसे वह पढ़ता नही है। दिन भर आवारा लड़कों से लड़ता रहता है। कोई काम बताओ तो आँख चुरा जाता है। इसकी भूख कभी बुझती ही नहीं है। यह मेरे लडके को खाने के समय घूर घूर कर देखता है। इसकी सोहबत में विशू क्या सीखेगा। लेखक ने अपनी पत्नी के चुटकी लेते हुए कहा—जानवर को आदमी बनाना बहुत कठिन है। उसे पुचकार कर पास बुलाने में बुरा नहीं मालुम होता है; क्योंकि उसमें हमें दया करने का सन्तोष होता है। परन्तु जानवर स्वयं ही पंजे गोद में रख मुँह चाटने का यत्न करने लगता है तब अपना अपमान जान पड़ने लगता है। पत्नी चौंकी! तो लेखक ने अपने कथन का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया—"यही सरकार मजदूरों की भलाई के लिये कानून पास करती है और जव मजदूरो का हौसला बढ़ जाता है तो वे खुद ही सुधार माँगने लगते हैं तब सरकार को उसको दवाने की जरूरत महसूस होने लगती है।"

पत्नी ने लेखक का आशय नहीं समझा। इसलिए कुछ भी नहीं हुई। वह अपनी रौ में कहती गई—"तभी तो कहते है कुत्ते की पूँछ बारह वर्ष तक नली मे रखी, पर सीधी नही हुई।" पत्नी के इस कथन का तात्पर्य यह था कि हरीश को वहाँ से निकाल दिया जाय किन्तु यह अब सम्भव भी तो नही था क्योंकि किसी को मनुष्यता का चसका लगाकर उसे जानवर बनाये रखने की कोई भी करतूत अनुचित ही थी।

प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से "कुत्ते की पूँछ" नामक कहानी का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर—इस कहानी के लेखक यशपालजी है। आप हिन्दी साहित्य के आधुनिक कहानीकारो में अपना विशिष्ट स्थान रखते है। इनकी सूझबूझ निराली है। इनका व्यवहारिक ज्ञान उच्च कोटि का है। इनकी कहानियो में मानव मन का विश्लेषण मर्मस्पर्शी होता है। इस कहानी में भी इन्होंने मानव-मनोदशा का सुन्दर विश्लेषण किया है।

कथावस्तु—इस कहानी की कथावस्तु प्राणवान एवं सारगर्भित है। मनुष्य जिस तत्परता से कोई काम हाथ में लेता है उस तत्परता से उसे पूरा नहीं करता। इसका प्रमुख कारण यह है कि वह अपने जन्मजात संस्कारों को अपनी विचारधारा के बल पर ही नही मिटा सकता है। इस कहानी मे कहानीकार की पत्नी हरूआ को हरीश बनाने का प्रयास अवश्य करती है किन्तु उसके जन्मजात संस्कार उसे पूर्णतः हरीश नही बनाने देते। नारी हृदय तरल ही नही होता उसमें विरलता भी होती हैं। वह बहुत समय तक अथवा यों कहिये कि अन्त तक अपने निर्णय पर टिके रहने में असमर्थ रहती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि वह कोई भी निर्णय भावनाओ मे बह लेती है। इसलिए वह निर्णय भी तत्काल लिया हुआ होता है। उसमें बुद्धि की मात्रा कम एवं हृदय की मात्रा अधिक रहती है। लेखक की पत्नी को हरूआ पर दया आगई थी। अतः वह उसे अपने साथ ले आई। उसे नहलाया धुलाया एवं अपने बच्चे बिशू के समान ही रखना चाहा किन्तु जब उसकी इच्छा के विरुद्ध कार्य करने लगा तो उसके यह बात ध्यान में जम गई कि हरूआ (हरीश) नीच जाति का लड़का है इसलिए वह उस प्रकार से अच्छा नही बन सकता है जिस प्रकार कुत्ते की दुम को बारह वर्ष तक नलिया में रखने पर भी वह सीधी नही हो सकती है। लेखक के इन्ही तरल एवं विरल विचारों के विश्लेषण को कथानक का रूप दे दिया गया है। इस कहानी का

शीर्षक "कुत्ते की पूँछ" भी बहुत ही सांकेतिक एवं सार्थक रहा है। साधारण व्यक्ति अच्छा आदमी नहीं बन सकता अथवा बड़े आदमी अपनी वह मनोवृत्ति नहीं छोड़ सकते जिसके कारण वे छोटे को छोटा एवं नीच ही समझते हैं। ये दोनों ही बातें इस कथावस्तु में उलझी हुई है और इन्हीं का अच्छा विश्लेषण भी हुआ है।

पात्र (चरित्र चित्रण)—इस कहानी के पात्र प्रमुख रूप से स्वयं लेखक, उसकी पत्नी एवं हरीश ही हैं। लेखक की यह पात्र कल्पना साभिप्राय है। इन पात्रों का चरित्र चित्रण भी बहुत ही मार्मिक एवं स्वाभाविक रूप से हुआ है। लेखक की पत्नी साम्यवादी विचारधारा रखती है। वह गरीबी एवं अमीरी को समान स्तर पर लाने की बात सोचती है। अपनी इस विचारधारा को क्रियात्मक रूप भी देती है। इसलिए हरूआ को हरीश बनाने का प्रयास करती है किन्तु उसके स्वयं के व्यक्तित्व मे कमियाँ हैं। वह शनैः शनैः हरीश से चिढ़ने लगती है। उसके मस्तिष्क में यह विचार जड़ जमाता-चलता है कि हरीश नीच जाति का लड़का है इसलिए इसे ऊँचा उठाया ही नहीं जा सकता। पढ़ाने पर पढ़ता नहीं है और कोई काम में मन नहीं लगता है। इसकी आँख सदैव खाने पर ही लगी रहती है। इसकी भूख न जाने किस प्रकार की है जो शान्त ही नहीं होती। लेखक की पत्नी जब हरी को अपने पुत्र विशू की खाने की चीजों की ओर ताकते देखती है तो क्रुद्ध हो जाती है। शायद उसके इस क्रोध में नारीजन्य वह विश्वास रहता है कि विशू यदि इन चीजों को खावेगा तो उसके नजर लग जावेगी। लेखक ने अपनी पत्नी के मिस नारी-स्वभाव, प्रकृति एवं विश्वास का मार्मिक विश्लेषण किया है। नारी का हृदय कोमल होता है उसे दया भी आती है और क्रोध भी आता है। दुखी एवं दलितों के प्रति उसका सहानुभूति का हाथ तत्काल बढ़ जाता है एवं उसके हृदय का अपनेश रिस उठता है किन्तु जिस प्रकार दूध का उफान तत्काल आकर तत्काल बैठ जाता है उसी प्रकार नारी की सहानुभूति होती है। वह जागृत होती है किन्तु स्थिर नहीं रहती है। यही तो कारण है कि जिस तत्परता से वह हरूआ को हलवाई की दूकान से काम में पिलते देखकर उठा लाई थी उसी तत्परता से उसे वापस लौटा देना चाहती है क्योंकि उसे हरूआ में कोई सुधार दृष्टिगोचर नही हुआ।

दूसरा चरित्र हरूआ उर्फ हरीश है। वह बहुत ही दलितावस्था में हलवाई की दूकान से लाया गया था। उसे ऊँचा उठाने का प्रयास भी लेखक की पत्नी

ने वहन किया । उसके रहन सहन खान पान एवं शिक्षा दीक्षा में पर्याप्त परिव-र्तन करने का प्रयास किया गया है किन्तु पहले तो उसके अपने को हेय समझने की प्रवृत्ति का अन्त नहीं हुआ और जब इस प्रवृत्ति का अन्त होने लगता तो उसमें आलस्य एवं उद्दंडता आने लग गई जिसमें लेखक की पत्नी की उसके प्रति स्नेह-भावना घृणा भावना के रूप में परिवर्तन होने लगी । हरीश का पढ़ने में रुचि न दिखाना, पढ़ने न जाकर गली के बच्चों में खेलते रहना, कार्य करने में लापरवाही दिखाना यह सब अवगुण उसके व्यक्तित्व को दबाने मे सहायक सिद्ध हुए और इसी कारण से लेखक की पत्नी की सहानुभूति का लोप हुआ ।

तीसरा चरित्र स्वयं लेखक का है । इस चरित्र का चित्रण भी अच्छा हुआ है । लेखक के मिस 'पुरुष हृदय स्पष्ट हुआ है । पुरुष अपनी पत्नी से विभिन्न परिस्थितियों में जो व्यवहार करता है उसमें उसकी अपनी सूझ बूझ रहती है । पुरुष को अपनी कमियों एवं विशेषताओं का ध्यान प्रत्येक परिस्थिति में रहता है क्योंकि वह बुद्धि प्रधान जीव है किन्तु नारी हृदय-प्रधान व्यक्ति होने के कारण भावना मे अधिक बहती है । लेखक अपनी पत्नी के सम्बन्ध में यही विचारधारा रखता है किन्तु पत्नी का स्वभाव थोड़ा गर्म है इसलिह वह अपनी इस विचारधारा को पत्नी के कथन का प्रतिपादन करने मे व्यक्त नही करता । वह तो शान्त होकर किसी भी कार्य एवं घटना के परिणाम पर दृष्टि रखता है । एक प्रकार से उसका स्वभाव दब्बू एवं अवसरवादी भी है । इसलिए वह अपनी पत्नी के विचारों में दृढ़ता लाने के सम्बन्ध में कोई ठोस कार्य करता हुआ प्रतीत नही होता । वह उसे उसी दिशा मे बहने देता है जिस दिशा में वह बह चलती है । यह बात अवश्य है कि पत्नी उसके सामने बहुत ही सम्हल कर बातचीत करती है और वह नहीं चाहती कि उसके अस्थिर विचारों की मजाक उड़ाई जाय । लेखक भी इस सम्बन्ध मे जागरूक प्रतीत होता है वह तो उसकी मजाक उड़ाने का साहस नहीं रखता था और आवश्यक नही समझता है । उसकी विचारधारा अपने एक खास ढर्रे पर चलती है । "ओवर एक्टिंग" करना उसके स्वभाव मे नही है । इसलिए वह बनने का प्रयास नही करता । वह तो एक दर्शक की भांति सब घटनाओ को देखता है, श्रोता की भांति सब घटनाओं को सुनता है और तटस्थ व्यक्ति के समान अपना जीवन व्यतीत करता है । यदि कभी कुछ कहता भी है तो यों ही दबी जबान मे कह देता है जिसका रत्ती मात्र भी प्रभाव उसकी पत्नी पर नहीं

होता। वह उसी कार्य को करती है जिसे वह करना विचार लेती है और यह सब इसलिए होता है कि लेखक क्रियात्मक रूप से प्रतिवाद नहीं करता। विशू का चरित्र चित्रण बहुत ही स्वाभाविक हुआ है। छोटे बच्चे में उस समय अवश्य रूठने की, मचलने की, जिद्द करने की एवं उदास रहने की आदत होती है। जब वह उसे मिलने वाले स्नेह को बँटता हुआ देखता है। बाल मनोविज्ञान के पंडित इस तथ्य को विमाता ग्रन्थि कहते हैं जिसका बनने का कारण इसी प्रकार के अवसर होते हैं। विशू जब अपनी मां का ध्यान हरीश पर केन्द्रित पाता है तो उसके हृदय में हरीश के प्रति जलन एवं अपनी माँ के प्रति क्रोध के भाव जागरित होते हैं। इस प्रकार इस कहानी में पात्रों का चरित्र चित्रण मार्मिक एवं स्वाभाविक हुआ है।

कथोपकथन—इस कहानी में प्रयुक्त कथोपकथन कथानक की बिखरी हुई घटनाओं को समेट कर कथानक को गति देने में सहायक हुए हैं पात्रों के चरित्र चित्रण में भी कथोपकथनों का पर्याप्त योग रहा है। कथोपकथनों के द्वारा ही लेखक ने अपनी पत्नी का चरित्र-चित्रण किया है। उसके व्यक्तित्व की कमियों एवं विशेषताओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। कथोपकथन सारगर्भित हैं तथा कथानक को लक्ष्य विशेष की ओर लेकर बढ़ने में सहायक हुए हैं। यह कहानी उत्तम पुरुष में लिखी गई है किन्तु फिर भी लेखक ने इसमें कथोपकथनों का पुट दिया जिससे कथावस्तु में निखार आ जाय। लेखक अपने इस ध्येय में सफल ही हुआ है। यदि वह स्वयं ही सब कुछ कहता चलता और पत्नी से कुछ न कहलाता तो भी कहानी में वह सौन्दर्य नहीं आता जो आया है तथा केवल पत्नी को ही कहने देता तो भी वही बात होती। इसलिए कहीं उसने टोका है, कहीं बढ़ावा दिया है और कहीं उसकी बात शान्ति से सुनी है और अपने मन में ही उस पर टीका टिप्पणी की है। कथोपकथनों का ढग लेखक ने जिस प्रकार का अपनाया है वह भी निराला है। उदाहरणस्वरूप निम्नलिखित उदाहरण इस कथन की पुष्टि में सहायक होंगे—

सहसा आवाज गर्म करते हुए श्रीमती जी बोलीं—तो मैं कब कहती हूँ....

उन्हें बात पूरी न करने दी। बात पूरी करने देता तो जाने कितना लम्बा वर्णन और जिरह सुननी पड़ती, इसलिए झट से बात काट कर कहा—"ओहो तुम्हारी बात नहीं, मैं बात कर रहा हूँ यह सरकार और मजदूरों के झगड़े की।"

मन में भर गए क्रोध की एक लम्बी फुफकार उन्होंने जानना चाहा, मैं

बहाना तो नहीं कर रहा। उसने पूछा—"सो कैसे ?"

उत्तर दिया—"यहाँ सरकार मजदूरों की भलाई के लिए कानून पास करती है और जब मजदूरों का हौसला बढ़ जाता है तो वे खुद ही सुधार माँगने लगते हैं तब सरकार को उनका आन्दोलन दबाने की जरूरत होने लगती है।"

"......................तभी तो कहते हैं कुत्ते की पूंछ बारह बरस तक नली में रखी पर सीधी नहीं हुई......................"

देशकाल—इस कहानी में देशकाल का अच्छा निर्वाह हुआ है। आधुनिक युग में साम्यवादी विचारधारा जोर पकड़ रही है किन्तु इस विचारधारा का क्रियात्मक रूप भारत में बहुत कम देखा जाता है। केवल महलों में रह कर तथा अपना जीवन ऐश आराम का रख कर समानता की बात सोची अवश्य जा सकती है किन्तु अपने जीवन में जब उसे उतारने का अवसर आता है तो मानव तत्काल पीछे हट जाता है। उसकी वही जुगुप्सा विचारधारा उस पर छा जाती है। लेखक ने इसी तथ्य को स्पष्ट किया है। हम आये दिन जो सुनते और देखते रहते हैं उसमे हृदय एवं मस्तिष्क का कितना योग रखता है यह हम से छिपा हुआ नहीं है। लेखक की पत्नी मानव को समान स्तर पर तो अवश्य देखना चाहती है। इस सम्बन्ध मे थोड़ा कार्य भी करती है किन्तु उसके संस्कार उसकी विचारधारा से कहीं अधिक सम्बन्धित है इसलिए वह दूसरे के प्रति हीनता के भावों को उत्पन्न होने से नहीं रोक पाती। यही कारण था कि हरीश उनकी दृष्टि में आगे चल कर हीन व्यक्ति ही जँचा। आज के युग मे पति पत्नी सम्बन्ध भी पाश्चात्य प्रणाली का रूप ले रहा है। पत्नी अपने विचारों की स्वतन्त्र सत्ता रखना चाहती है। पति उससे इस झक झक में न पड़ कर अपना जीवन व्यतीत करने का एक तटस्थ क्रम बना लेना चाहता है। भारतीय समाज व्यवस्था का इस कहानी में अच्छा एवं व्यंगात्मक चित्रण भी हुआ है।

शैली—यशपाल जी की शैली रोचक एवं प्रभावमयी तो है ही साथ ही प्रभावपूर्ण भी है। लेखक जो कुछ कहना चाहता है उसको मीठे एवं तीखे दोनों प्रकारो से कह सकने मे समर्थ होता है। वह अपनी शैली में लक्षण एवं व्यंजना का भी उपयोग करता है। इस कहानी मे भी वर्णन का ऐसा ही ढंग अपनाया गया है। अपनी पत्नी के स्वभाव का चित्रण तो उसने इस खूबी के साथ किया है कि उसका चित्र सा उपस्थित हो जाता है। यह लेखक का वर्णन ही है। इनकी भाषा मे संस्कृत, उर्दू, फारसी, देशज एवं अंग्रेजी शब्दों का पुट मिलता है।

फिर भी इनकी भाषा शैली में शुद्धता एवं स्वाभाविकता है जो इनकी कहानी को देखते हुए उपयुक्त है ।

उद्देश्य—कहानीकार ने उस व्यक्तित्व पर व्यंग कसा है जो विचारधारा के रूप मे तो साम्यवादी है किन्तु क्रियात्मक रूप से वही पूँजीपती टाइप का है। शायद लेखक का ध्येय भी इसी विचारधारा का खोखलापन दिखाना रहा है। इस उद्देश्य में लेखक को पर्याप्त सफलता भी मिली है। उसकी पत्नी का व्यक्तित्व कुछ इसी प्रकार का रहा है इस कहानी का उद्देश्य निम्नलिखित दो उद्धरणों से स्पष्ट हो जाता है। लेखक ने अपनी पत्नी पर व्यंग कसते हुए कहा है—

"(१) जानवर को आदमी बनाना बहुत कठिन है। उसे पुचकार कर पास बुलाने में बुरा नहीं मालूम होता है, क्योंकि उसमें हमें दया करने का सन्तोष होता है। परन्तु जानवर जब स्वयं ही पंजे गोद में रख मुंह चाटने का यत्न करने लगता है तब अपना अपमान जान पड़ने लगता है।"

(२) "यही सरकार मजदूरों की भलाई के लिए कानून पास करती है और जब मजदूरों का हौसला बढ़ जाता है तो वे खुद ही सुधार मांगने लगते हैं। तब सरकार को उसका आन्दोलन दबाने की जरूरत महसूस होने लगती है।"

इन दोनों उद्धरणों से स्पष्ट है कि मनुष्य में जो संस्कार प्रबल होते हैं वह इधर उधर घूम कर भी उन्हीं पर स्थिर रहता है।

प्रश्न—कुत्ते की पूंछ कहानी का शीर्षक कहाँ तक उपयुक्त है ?

उत्तर—कुत्ते की पूंछ नामक कहानी का शीर्षक अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस कहाणी को पढ़ने पर अपने आप ही प्रश्न होता है कि कुत्ते की पूंछ से क्या तात्पर्य है ? लेखक की पत्नी हरीश को बड़ी आशा और विश्वास से अपने साथ लाई थी। उसने हरीश को अपने घर का पूर्णतः अधिकार प्राप्त सदस्य बनाने का भरसक प्रयास किया किन्तु वह हरीश को ऐसा नहीं बना सकी जैसा वह बनाना चाहती थी। उसकी यह धारणा दृढ़ हो गई कि निम्न कोटि के मनुष्य में सुधार नहीं किया जा सकता है। अतः एक प्रकार से तो हरीश ही कुत्ते की पूंछ के समान हुआ। जैसे कुत्ते की पूंछ का बल कभी नहीं जाता है वैसे ही हरीश भी नही सुधरा। इसलिए "कुत्ते की पूंछ" एक मुहावरे की भांति इस कहानी में प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ होता है यथावत रहना।

किन्तु सम्पूर्ण कहानी पढ़ लेने पर एक दूसरा विश्वास और प्रबल होता है वह विश्वास स्वयं लेखक की पत्नी के सम्बन्ध में तो है ही साथ ही वर्गगत भी

सिक सफलता मिली है। वातावरण प्रधान कहानियों मे इन्होंने वातावरण की सृष्टि करने मे कौशल से काम लिया है। सूक्ष्म से सूक्ष्म परिस्थितियों का भी सम्यक् ध्यान रखा है। अश्क जी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अपनी कहानियों मे कम से कम पात्रों की सृष्टि करते है। इनके पात्रों का जीवन ठीक वैसा ही होता है जैसा हम अपने आस पास के लोगों का जीवन देखते है। वे परिस्थितियों के अनुसार सुख-दुख से संघर्ष करते हुए अपनी जिन्दगी जीते रहते है। इनकी कहानियों के पात्रों मे जीवन की सरलता रहती है। वे महत्वकांक्षी नहीं होते। अश्क जी की कहानियो मे सजीवता एवं आकर्षण रहता है। अश्क जी उर्दू से हिन्दी में आये है इसलिए इनकी भाषा मे उर्दू फारसी के शब्दो का बाहुल्य है और इनकी भाषा शैली भी प्रेमचन्दजी तथा सुदर्शनजी जैसी ही है, इनका पात्रानु-कूल भाषा का प्रयोग कहानियो मे जीवन ला देता है तथा स्वाभाविकता बनाये रखता है। अश्कजी को जीवन की वास्तविकता से प्रेम है। इसलिए वे आदर्शवाद से प्रभावित होकर ऐसे पात्रो की सृष्टि नही करते जो जीवन से दूर है।

कहानी सक्षेप—एक दिन वाकर ने चौधरी नन्दू से अपनी मन पसन्द सांडनी १४०) रुपयों में खरीद ली। वह उस दिन अच्छी सी सांडनी खरीदने ही गया था। वह डाची (साँडनी) उसने अपनी एक मात्र पुत्री रजिया को प्रसन्न करने के लिये अपनी गाढी कमाई से खरीदी थी। वह डाची को खरीदते ही अपने गांव की ओर चल पड़ा। उसके हृदय मे बहुत उल्लास था। दिन ढलता जा रहा था और वह भांति भांति की कल्पनाओं मे डूबा हुआ अपने गांव की ओर बढ़ता जा रहा था। वह रजिया के सोने से पहले घर पहुँच जाना चाहता था जिससे रजिया उस डाची को देखकर प्रसन्न हो सके। वाकर की पत्नी जब तक जीवित थी वाकर बहुत कम काम किया करता था। सारा काम वह ही किया करती थी किन्तु जब वह मरने लगी तो अपनी पुत्री रजिया को वाकर के सुपुर्द करके उसने कहा था—"इसकी देखभाल अच्छी तरह से करना।" वाकर ने अपनी पत्नी के आग्रह को नही टाला। उसकी उम्र भी अधिक नही थी, लोगो ने उस पर दवाव भी बहुत डाला था किन्तु उसने दूसरी शादी नही की। अपनी विधवा बहिन को उसके सुसराल से ले आया और कसकर मेहनत मजदूरी करने लगा। वह मण्डी मे से रजिया के लिए मिठाई एवं खिलौने लाया करता था। एक दिन उसकी लड़की रजिया ने मशीरमल को अपनी लड़की सहित साँडनी पर बैठा देख लिया

था। जबसे उसने वाकर से सांडनी लाने के लिए वहुत आग्रह किया था। वाकर रजिया को प्रसन्न रखना चाहता था। इसलिए वह मेहनत मजदूरी में जुट गया और छः आने रोज बचाने लगा। उसको इतनी कड़ी मेहनत करते देखकर उसकी बहिन भी टोकती थी किन्तु उसने किसी की कुछ नहीं सुनी और पूरे डेढ़ वर्ष के पश्चात् आज उसने सुन्दर डाची (साँडनी) खरीद ली थी।

उसके गाँव के बीच में मशीरमल की घाटी पड़ती थी। वहीं वह मण्डी जाने से पूर्व नानक नामक व्यक्ति को डाँची का गदरा बनाने का सामान दे गया था। वह यहाँ रुका और गदरा लेना चाहा किन्तु नानक कहीं बाहर चला गया था इसलिए उसने मशीरमल से ही फटा पुराना गदरा लेना चाहा जिससे यदि रजिया जिद्द करे तो उसे डाची पर बैठा तो सके। मशीरमल रिटायर्ड व्यक्ति था। अब वह यहाँ खेती बाड़ी करवाता था और आनन्द से रहता था। वाकर ने जाकर उसे सलाम की। मशीरमल को वाकर की डांची पसन्द आ गई इसलिए उसने १५०) के १६५) रुपये तय करके डाची की नकेल अपने नौकर को दिलवादी और ६०) के नोट निकाल कर वाकर के हाथ में रख दिये। वाकर हाँ, हुँ करता रहा किन्तु उसने कुछ नही सुनी। वाकर हतप्रभ सा अपनी घाट से थोड़ी दूर पर एक फोग की झाड़ी के नीचे बैठा यह प्रतीक्षा करने लगा कि रात अधिक हो जिससे रजिया सो जाय और वह घर में चुपचाप जाकर सो जाय।

प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से डाची नामक कहानी की आलोचना कीजिए।

उत्तर—अश्कजी प्रगतिशील लेखक हैं इसलिए इनकी कहानियों में यथार्थवाद का सुन्दर चित्रण होता है। इस कहानी में भी अश्कजी ने वाकर की मनोदशा का सुन्दर विश्लेषण किया है। किसी भी कहानी की कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा करने के लिए उसको कहानी के तत्वों पर कस कर देखना आवश्यक होता है। अतः इस कहानी की भी कहानी के छः तत्वों—वस्तु पात्र, कथोपकथन, देशकाल, उद्देश्य एवं शैली पर कस कर इसका मूल्यांकन किया जाता है—

कथावस्तु—इस कहानी की कथावस्तु का चयन वहुत सुन्दर है। लेखक ने वाकर की पत्नी की मृत्यु के वाद की घटनाओं का समावेश करके कथानक को मार्मिक बना दिया है। वाकर जो कि पूरा आलसी था अपनी पत्नी की मृत्यु के पश्चात् अपनी पुत्री रजिया को प्रसन्न रखने की भरसक कोशिश करता है। वह उस बच्ची की इच्छाओं की पूर्ति के लिए कठोर परिश्रम करके पैसे कमाता है।

उन को पत्नी ने मृत्यु से पूर्व। पर पहिले ही उसने मैंओ से रजिया की पूरी सम्हाल का भार बाकर को सौंप दिया था। बाकर ने इस भार को सहर्ष स्वीकार किया एवं उसको ढोने में पुरुषार्थ एवं सफलता का परिचय दिया। स्वयं बाकर की बहिन को बाकर के कठोर परिश्रम पर आश्चर्य होता था किन्तु बाकर के सामने कठोर परिश्रम का लक्ष्य था। कहानीकार ने मानव की ममता का सुन्दर चित्र इस कहानी में उपस्थित किया है। बाकर अपनी गाढ़ी कमाई से रजिया के लिए मंडी में से एक सुन्दर दानी (सांडनी) खरीदता है और घर की ओर तीव्र गति से चल पड़ता है जिससे रजिया को उस पर बिठा सके किन्तु मार्ग में मशीरमल से भेंट होने के कारण स्वयं मशीरमल उस दानी को १५) अधिक देकर खरीद लेता है। बाकर हतप्रभ सा हो जाता है। वह स्वयं अपना चाव भी पूरा नहीं कर सका। कहानीकार ने बाकर से मशीरमल का प्रतिवादन करा कर बाकर के देहाती व्यक्तित्व को स्पष्ट किया है। देहाती व्यक्तियों के स्वभाव की यह विशेषता है कि वे स्वयं घुट लेते हैं किन्तु अपने से बड़े व्यक्ति का प्रतिवाद नही करते। उससे बहस नहीं छेड़ते। बाकर पूर्णतया ग्रामीण व्यक्ति है। इस प्रकार से इस कहानी की कथावस्तु सजीव एवं प्रभावशाली है।

पात्र—कहानीकार 'अश्क' जी की यह विशेपता है कि वे अपनी कहानियों मे दो तीन पात्रो की सृष्टि करके ही प्रभावशाली कहानी लिख देते है। इनकी दूसरी विशेपता यह है कि इनकी कहानियो के पात्र इसी ससार के हमारे इर्द गिर्द चलने फिरने वाले व्यक्ति होते है जो परिस्थितियो के अनुसार सुख दुख का सामना करते हुए जीवन संग्राम मे जुटे रहते है। इसलिए इनके पात्र निरे आदर्शवादी नही बनते, यथार्थवादी बने रहते है। इस कहानी प्रमुख पात्र बाकर है। लेखक ने बाकर का चरित्र चित्रण बहुत ही स्वाभाविक ढंग से किया है। जब तक उसकी पत्नी जीवित थी वह पूरा आलसी था क्योकि उसको अपनी पत्नी का पूरा सहारा था। किन्तु पत्नी की मृत्यु के पश्चात् वह कठोर परिश्रमी बन गया। उसके इस कठोर परिश्रमी बनने का भी एक रहस्य था। वह अपनी पुत्री रजिया को प्रसन्न रखना चाहता था। वह उसके लिए मिठाई लाता, खिलौने लाता और भी वह जो कहती उसे पूरा करता था। यह सब कुछ उसी समय सम्भव था जब उससे पास पैसे होते। अतः उसने पैसे कमाने के लिए कठोर श्रम किया। एक तो उस पर उसकी पत्नी ने रजिया की सम्हाल की जुम्मेदारी डाल दी थी।

दूसरे उसकी स्वयं की ममता रजिया के प्रति थी। इन दोनों ही कारणों से बाकर कठोर परिश्रम करके पैसे कमाता था। बाकर उस मानव का प्रतीक है जो कर्त्तव्य एवं ममता से बँधा रहता है। मण्डी में से डाची खरीदकर वह अत्यधिक प्रसन्न हुआ था। इस प्रसन्नता में उसकी अपनी पुत्री के प्रति ममता छलक रही थी, किन्तु जब मशीरमल ने बीच में ही उससे डाची ले ली तो वह उस व्यक्ति के समान हो गया जिसका उमड़ता हुआ आह्लाद किसी दुर्घटना का शिकार हो जाता है। वह फोग की झाड़ी के नीचे बैठ कर उन क्षणों की प्रतीक्षा करने लगा जिनमें रात्रि गहरी हो जाती है और घर के बच्चे दिन भर की थकान के पश्चात् गहरी निद्रा में सो जाया करते हैं। कुछ ही समय पहले वह रजिया को डाची पर बिठा कर सैर कराने की बात सोच रहा था और अब उसके सो जाने की कामना कर रहा था। मनुष्य कितना विवश होता है ? उसकी विवशता भी एक प्रकार से उसके व्यक्तित्व की परीक्षा ही हुआ करती है। बाकर के चरित्र में हमें इन्हीं तथ्यो का विश्लेषण मिलता है।

रजिया का चरित्र पूर्णतः शिशुओ के समान ही चित्रित किया है। वह बाल सुलभ स्वभाव वाली चपल बालिका है। अपने पिता से भाँति भाँति के आग्रह किया करती है। वह मिठाई और खिलौने पाकर प्रसन्न हो जाया करती है। उसने सम्पूर्ण घर में आह्लाद का वातावरण बना रखा है। उसमे बालको की सी ही वह प्रवृत्ति पाई जाती है जिसे स्पर्धा कहा जाता है। उसने मशीरमल की छोटी लड़की को डाची पर बैठे देखा था इसलिए वह बाकर से लिपट कर डाची के लिए आग्रह करने लगी—"अब्बा हम तो डाची लेंगे, अब्बा हमे डाची ले दो" उसके इस आग्रह में स्पर्धा की भावना थी। कोई भी बच्चा किसी दूसरे बच्चे से किसी हालत मे भी पीछे नही रहना चाहता। यह प्रवृति हम रजिया के डाची के आग्रह से पाते है। चौधरी नन्दू का चरित्र पूर्णतः एक व्यापारी का चरित्र है जो अपने माल की प्रशंसा सुनकर प्रसन्न हो जाता है और ग्राहक से अपनी वस्तु का अधिक मूल्य लेकर भी उस पर एहसान थोपने से बाज नही आता है। उसने अपनी डाची का पूरा मूल्य लेकर भी बाकर पर दस रुपयों की छूट का एहसान थोपा ही। मशीरमल का चरित्र एक स्वार्थी जमीदार का चरित्र है जो अपने स्वार्थ के अतिरिक्त और कुछ सोचना ही नही जानता। उसने बाकर की भावनाओ का विचार किए बिना ही उसके हाथ मे ऊँटनी की नकेल अपने नौकर

को दिलवा दी थी क्योंकि वह उसे पसन्द आ गई थी। उसने यह भी तो जानने का प्रयास नहीं किया कि बाकर क्यों उस डाची को खरीदकर लाया था ?

कथोपकथन—इस कहानी के कथोपकथन स्वाभाविक एवं प्राणवान है। इन कथोपकथनों से पात्रों का चरित्र चित्रण भी हुआ है तथा कथानक की बिखरी हुई घटनाओं का संगठन भी हुआ है, जिससे कथानक में गति उत्पन्न हुई है। इन कथोपकथनों का कोई भी वाक्य निरर्थक नहीं है। कथोपकथनों में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करके कहानीकार ने कहानी का सौन्दर्य बढ़ा दिया है। इस कहानी के कथोपकथन रोचक एवं प्रभावशाली है तथा चरित्रों एवं कथानक के मर्म को स्पष्ट करने में सहायक हुए है। इन कथोपकथनों मे आए हुए मारवाड़ी एवं उर्दू फारसी के शब्द कहानी की रोचकता बढाने में पर्याप्त सफल हुए है। निम्नलिखित उद्धरणों से इस कथन की पुष्टि हो जायगी—

धीरे से बाकर ने पूछा—"बेचोगे इसे ?"

नन्दू ने कहा—"बेचने लई तो मण्डी मा आऊँ हूँ।"

"तो फिर बताओ कितने को दोगे ?" बाकर ने पूछा।

नन्दू ने नख शिख तक बाकर पर एक निगाह डाली और हंसते हुए बोला—"तने चाही जै का तेरे धनी बेई मोल ले सी ?"

"मुझे चाहिए" बाकर ने दृढता से कहा।

देशकाल—इस कहानी मे देशकाल का भी अच्छा निर्वाह हुआ है। कहानी के आरम्भ मे ही हमे ऐसा लगता है कि हम किसी रेगिस्तान की मण्डी में पहुँच गए हैं जहाँ चारो तरफ धूल उड़ रही है और पशुओं का क्रय विक्रय हो रहा है। नन्दू चौधरी एवं बाकर के वार्तालाप में ऐसी स्वाभाविकता आई है कि हमें ऐसा अनुभव होता है कि हम उसी स्थान पर खड़े उसी वातावरण मे विभिन्न घटनाओं का अवलोकन वास्तविक व्यक्तियो के बीच कर रहे है। नन्दू चौधरी एवं बाकर की बातचीत, डाची का सौदा, डाची को लेकर अपनी घाट की ओर बढ़ते हुए बाकर की मनोदशा, नन्दू चौधरी की वह मनोदशा जब उसने अपनी पाली पोसी डाची की नकेल बाकर के हाथ में थमाई एवं बाहर से उसकी सम्हाल रखने का आग्रह किया—इन सब घटनाओ में देशकाल का स्पष्ट रूप सामने आता है। मशीरमल का बाकर की डाची की ओर आकृष्ट होना तथा बाकर की डाची को अपने उपयोग के लिए ले लेना भी देशकाल के स्पष्टीकरण में सहायक हुआ है।

शैली—अश्कजी पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करने में सदैव ही सफल रहते

हैं । इस कहानी में भी उन्हें इस दिशा में सफलता मिली है । अश्कजी उर्दू क्षेत्र से हिन्दी की ओर आये है इसलिए आपकी कहानियों में भी उर्दू फारसी के शब्दों का बाहुल्य रहता है। आप प्रादेशिक शब्दों का प्रयोग भी खूब करते हैं। इस कहानी में भी ऐसा हुआ है । आपकी शैली चलती हुई है । अश्कजी चरित्र और घटना का सुन्दर एवं विश्वसनीय वर्णन करने में सफल होते हैं । इस कहानी में भी उन्हें इस दिशा में पर्याप्त सफलता मिली है ।

उद्देश्य—इस कहानी का उद्देश्य मनोरंजन करना तो है साथ ही मानव मनोविश्लेषण करना भी है । किन किन परिस्थितियों में मनुष्य क्या क्या सोचता है एवं करता है; इसी तथ्य का विश्लेषण इस कहानी में हुआ है। मानव में क्यों और कब किस प्रकार का परिवर्तन आता है अथवा आ सकता है इस सम्बन्ध में भी लेखक ने सकेत किया है । बाकर का चरित्र विश्लेषण भी इस कहानी का प्रमुख उद्देश्य है किन्तु यह लेखक की अपनी प्रतिभा है कि उसने व्यक्ति विशेष के चरित्र को व्यक्ति से समष्टि की ओर ले जाने का सफल प्रयास किया है ।

प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या करो—

(क) एक निमिष के लिए बाकर के थके हुए व्यथित चेहरे पर आह्लाद की रेखा भी झलक उठी। उसे डर था कि चौधरी कहीं ऐसा मूल्य न बतादे जो उसकी बिसात से बाहर हो..........

ये पंक्तियाँ उपेन्द्रनाथ अश्क कृत "डाची" नामक कहानी से उद्धृत की गई है । बहावलपुर मण्डी में चन्दू चौधरी एवं बाकर घाट में एक डाची के मूल्य के सम्बन्ध मे बातें होनी थीं । बाकर की फटी पुरानी पोषाक देखकर नन्दू चौधरी ने उपेक्षा की थी । बाकर ने डाची की कीमत पूछी और जो कीमत उसने सुनी उसी समय का यह वर्णन है ।

डाची का मूल्य सुन कर बाकर सहसा प्रसन्न हो उठा । उसके आनन पर प्रसन्नता के भावों की स्पष्ट रेखा अंकित हो गई । इस प्रसन्नता का रहस्य यह था कि डाची का मूल्य सुनने से पहले बाकर इस असमंजस मे था कि न जाने डाची का मूल्य क्या होगा । वह उस मूल्य को दे सकेगा अथवा नहीं ? क्योंकि उसकी जेब में तो एक निश्चित रकम थी जो उसने कठोर परिश्रम से पूरे डेढ़ वर्ष मे एकत्र की थी । इसलिए मूल्य सुनने से पहले वह इस आशंका से भयभीत था कि कही डाची का इतना मूल्य न हो कि वह उसका भुगतान कर ही न सके । मूल्य देने सम्बन्धी उसकी सामर्थ्य जेब में पड़े रुपयों के अनुसार सीमित ही थी ।

किन्तु जब टानी का मूल्य केवल (६०) ही सुना तो उसका प्रसन्न होना स्वाभाविक था क्योंकि (५०) रु० तो उसकी जेब में उसी क्षण मौजूद थे। केवल (१०) रुपयों का ही प्रश्न शेष रह गया था जिसकी पूर्ति वह आसानी से कर सकता था।

माँ

लेखिका—होमवतीदेवी

प्रश्न—कहानीकार होमवतीदेवी का परिचय दीजिए तथा 'माँ' नामक कहानी का सारांश लिखिए।

उत्तर—महिला कहानीकारो मे होमवतीदेवी अपना विशिष्ट स्थान रखती है। इनकी कल्पना, शैशव एवं वस्तु सौष्ठव उत्तम कोटि का है। मनुष्य के हृदय का मर्मस्पर्शी विश्लेषण करने मे उन्हें अत्यधिक सफलता मिलती है। इनकी कहानियो की यह विशेषता है कि समाज में चलते फिरते व्यक्तियो के जीवन का विश्लेषण ही उनमें मिलता है। इस प्रकार होमवतीजी यथार्थवाद की व्यंजना करने मे कुशल हैं। इनके भाव, भाषा एव शैली मे एक प्रकार का सौन्दर्य रहता है। इनमे पुरुष एवं नारी हृदय का सूक्ष्म निरीक्षण करने की अनुपम शक्ति है। आप मनोवैज्ञानिक सत्य का उद्घाटन करने मे भी कुशल है। आप अपनी कहानियो में मानव जीवन के उन रहस्यों का उद्घाटन करती है जिनसे हम थोडे बहुत परिचित होते हैं इसलिए इनकी कल्पना पाठक के हृदय पर वास्तविक घटना के रूप मे प्रभाव डालती हैं।

कहानी का सारांश—बाबू कृपाशंकर की पत्नी अपने पीछे एक पुत्र छोड़ कर असमय मे ही चल बसी। उस समय उस लडके की आयु लगभग दो ढाई वर्ष की थी। इसका नाम अनुराग था। बाबू कृपाशंकर को अपनी पत्नी शकुन्तला की मृत्यु का बहुत दुख हुआ। तेरह दिन तक तो सम्पूर्ण घर मे ही शोक छाया रहा। तेरह दिन समाप्त होते ही कृपाशंकर के पिता बनवारीलाल ने उसे दूसरी शादी करने की सलाह दी। स्वयं कृपाशंकर को मां की मृत्यु हो जाने के कारण विमाता की छत्र छाया में अनेक कष्ट झेलने पड़े थे इसलिए दूसरा विवाह करके पुत्र अनुराग के लिए दुख की सृष्टि करना नही चाहते थे किन्तु परिस्थितिवश उन्हे दूसरी शादी करनी ही पड़ी और वह भी पहली पत्नी की मृत्यु के सवा महीने के भीतर ही। कृपाशंकर के विवाह की धूमधाम मे अबोध अनुराग भी हँसता खेलता इधर उधर फुदकता रहा। यदि कोई उससे पूछता कि किसकी शादी है तो वह तत्काल उत्तर देता—बाबूजी की। कृपाशंकर की नई पत्नी भामा शकुन्तला से भी सुन्दर

थी। उसने आते ही घर गृहस्थी का काम सम्हाल लिया। कृपाशंकर के पिता बनवारीलाल जी ने वकालत छोड़ कर कानपुर में ठेकेदारी का काम आरम्भ कर दिया।

अनुराग में सहसा परिवर्तन आ गया। उसकी उछल-कूद सब बन्द हो गई। वह दिन भर घर में ही रहने लगा। वह अपनी आयु से बहुत अधिक गंभीर रहने लगा। दो वर्ष बाद भामा के पुत्र उत्पन्न हुआ। घर मे खुशियाँ मनाई गई। अनुराग अब घर से बाहर निकलने लगा। शनैः-शनैः ऐसा हो गया कि वह दिन भर घर से बाहर ही रहता और जब कृपाशंकर कचहरी से लौटते तो नौकर चाकर उसे कहीं से ढूँढ़ कर लाते। वह लगभग चार वर्ष का हो गया था और उसकी गंभीरता दिनों दिन बढ़ती जाती थी। होली के दिन अनुराग की नई मां भामा ने सन्तोष की बुआ को कहानी सुनने के लिए बुलाया। कहानी कह कर सन्तोष की बुआ ने पूछा—तुमने पारसाल तो तागा बांधा नहीं? नई ग्रहिणी भामा ने गोद के शिशु की ओर इशारा करते हुए कहा—तब यह कहाँ था?

उसी रात अनुराग को तेज बुखार चढ़ा। वह बुरी तरह विलाप करने लगा। कृपाशंकर बेचैन होकर कभी उसकी नाड़ी देखते थे और कभी उसके दिल की धड़कन को सम्हालते थे किन्तु उनकी पत्नी भामा अपने बच्चों को लेकर आंगन में गहरी निंद्रा में सोती रही। जब वह माँ, माँ कह कर अधिक विलाप करने लगा तो कृपाशंकर अत्यधिक बेचैन हो गए। उन्होंने अपनी नई पत्नी भामा को झकझोर कर जगाया और कहा—अनुराग की हालत बिगड़ती जा रही है। वह अम्मा, अम्मा पुकार रहा है। तुम जरा उसे सम्हालो मैं डाक्टर के जाता हूँ।" किन्तु भामा ने पेट में दर्द बताकर उठने से इन्कार कर दिया। कृपाशंकर की भावनाओं में संघर्ष मच गया। वह सोचने लगा—यह माँ अवश्य है किन्तु अनुराग की माँ नहीं है इसलिए उसके हृदय में दर्द नहीं है।

प्रश्न—मां कहानी की कहानी कला की दृष्टि से आलोचना कीजिए।

उत्तर—श्रीमती होमवतीदेवीजी सफल कहानीकार हैं। आपकी कहानियों में दर्द रहता है। आपको पारिवारिक वातावरण के व्यक्तिकरण में अद्भुत सफलता मिली है। इस कहानी में भी आपने चरित्रों का मर्मस्पर्शी विश्लेषण किया है। यह कहानी इनकी उत्तम कृतियों में से एक है। कहानी कला की दृष्टि से इसका मूल्यांकन करने के लिए हम इसे कहानी के तत्वों पर कस कर देखते हैं। विद्वानों ने कहानी के छः तत्व माने हैं इन्ही तत्वों पर खरी उतरने पर कहानी

नहीं उठाया । यह सब उस समय भी नारी किया जब उसकी गोद सूनी थी । उसके स्वयं के पुत्र होने के पश्चात तो उसने यह भी ध्यान नहीं दिया कि अनुराग मरता है या जीता है। जब कि अनुराग जैसे निरीह शिशु के प्रति पिशाच का भी हृदय द्रवित हो सकता था किन्तु न जाने विमाता का हृदय इतना कठोर एवं क्रूर क्यों हो जाता है कि उसमें नारी का सहानुभूतिमय हृदय ही मर जाता है। भामा के चरित्र में भी हम इसी तथ्य को अनुभव करते हैं। मरणासन्न अनुराग के विलाप से भी जिस नारी का हृदय नहीं पसीजा वह क्रूर ही कही जायगी। अतः इस कहानी के पात्र अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं के साथ अपनी वर्गगत विशेषताएँ भी रखते हैं और लेखिका ने इन दोनों ही प्रकारो के व्यक्तित्वो का विश्लेषण किया है। उसका यह प्रयास प्रशंसनीय है।

कथोपकथन—इस कहानी के कथोपकथन मार्मिक एवं स्वाभाविक हैं। कथोपकथनो से पात्रों की मनः स्थिति पूर्णतः स्पष्ट हुई है। इसलिए जहाँ ये कथोपकथन कथानक की घटनाओं को संगठित करने में सहायक हुए हैं वहाँ पात्रों के चरित्रों का विश्लेषण करने मे भी उपयोगी सिद्ध हुए है। इन कथोपकथनों से कहानी मे सजीवता आती रही है। इन कथोपकथनों से परिस्थिति एवं वातावरण भी स्पष्ट होता गया है। कथोपकथनों के कुछ अंश तो बहुत ही मार्मिक एवं सारगर्भित हैं जिनका हृदय पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। कृपाशंकर की बहू ने ब्याही आने के २ वर्ष पश्चात् होली के दिन संतोष की बुआ को कहानी सुनाकर तागा, बांधने के लिये बुलाया था। उसने कहानी पूरी करके पूछा—तुमने पारसाल तो तागा बांधा नही ?

नई गृहणी ने गोद के शिशु की ओर इशारा करते हुए कहा—"तब यह कहां था ?"

यह कथोपकथन अपने में सम्पूर्ण कहानी का रहस्य समेटे हुए है। अनुराग भी उसी ही के पति का पुत्र था और उसकी गोद में जो बच्चा था वह भी उसी पति का बच्चा था किन्तु क्योकि यह स्वयं उसकी कोख से हुआ था इसलिए इसके सब शकुन विचारना उसका कर्त्तव्य था . और अनुराग के शकुन वह क्यों विचारती क्योकि वह उसकी कोख से उत्पन्न नही हुआ था। माता एवं विमाता का लेखिका ने कथोपकथन की सहायता से स्पष्ट अन्तर बता दिया है। इस कहानी के कथोपकथन चुभते हुए भी हैं।

देशकाल—इस कहानी मे देशकाल का निर्वाह सुन्दर हुआ है। भारतीय समाज एवं उसकी विकृतियो का यथार्थ चित्र इस कहानी मे विद्यमान है। लेखिका

ने कुशलता से उन प्रथाओं, मान्यताओं एवं क्रिया कलापों का चित्रण इस कहानी में किया है जिनका विवरण हम पढ़ते रहते है, सुनते रहते है और देखते रहते हैं। किसी व्यक्ति की पत्नी मरणासन्न अवस्था में पड़ी है और लड़की वाले उस लड़के पर आंख लगाये रहते हैं। कब वह मरे और कब अपनी लड़की की शादी उस लड़के साथ कर दें। यही उनकी एक मात्र इच्छा रहती है। ठिकाने का लड़का एक क्षण भी खाली नहीं रह सकता है। उसकी पत्नी का देहान्त होते ही बीस लड़की वाले उसको अपना दामाद बनाने के लिए उत्सुकता से उस घर की देहरी को घिसना आरम्भ कर देते हैं। लड़के के घर का शोक भी समाप्त नहीं होने पाता कि उसमें विवाह के बाजे बजने आरम्भ हो जाते हैं—ये नित्यप्रति की घटनाएँ हैं। विवाह तो होता ही है किन्तु शोक की भी एक लहर उस घर पर मंड़राया करती है। आगे चलकर ऐसे विवाहों का परिणाम भी सामने आता ही है। इस कहानी में भी कृपाशंकर की पत्नी शकुन्तला का मरना, दूसरी बहू भामा का आना, पहली वाली पत्नी से उत्पन्न अनुराग की दुर्दशा होना, भामा का अपने पुत्र के लिए शकुन विचारना आदि घटनाएँ देशकाल के पूर्णतः अनुकूल हैं।

शैली—होमवती की शैली व्याख्यात्मक है। उसमें व्यंग का करारापन नही है। उपदेश की मात्रा अधिक है। इनकी भाषा प्रांजल है एवं विचार सुलझे हुए हैं। इनकी शैली में वास्तविकता का पुट अधिक रहता है जो हृदय पर गहरा प्रभाव करता है। इनकी शैली में चरित्र एवं घटनाओं के सुन्दर वर्णन की सामर्थ्य है। जहाँ इन्होंने मानवी भावों का विश्लेषण किया है वहाँ इनकी शैली और भी निखर गई हैं। इनकी शैली साहित्यक है तथा भावात्मक स्थलों के वर्णनों में भी मर्म को छू लेती है।

उद्देश्य—इस कहानी का उद्देश्य भारतीय समाज का विश्लेषण करना है। भारतीय समाज में पुरुषों को यह सुविधा है कि एक पत्नी की मृत्यु के पश्चात् दूसरी शादी कर सकते हैं। दूसरी पत्नी की मृत्यु के बाद तीसरी शादी कर सकते हैं। तीसरी के बाद चौथी, पाँचवी, छटी, सातवी, आठवीं जितनी शादियाँ करना चाहें कर सकते हैं। वे यदि न भी करना चाहे तो परिजन दबाव डाल कर करा देते हैं। लड़की वाले पीछे पड़ कर करा देते हैं। किन्तु इन शादियों का परिणाम प्रायः अच्छा नही होता। घर में कलह एवं अशान्ति का वातावरण बन जाता है। बच्चों का विकास रुक जाता है, उनकी अकाल मृत्यु तक हो जाती है। विमाता का हृदय उनके लिए प्रायः नहीं पसीजता है। इसलिए अनेक दुर्घटनाएँ घटती

रहती है। इस कहानी में भी अनुराग को माँ का वियोग इतना खटका है कि वह उसकी याद में कलपता हुआ विलाप करता है, किन्तु विमाता भामा के कान पर जूँ तक नही रेंगती। उसे अपने बच्चे से प्रेम है। अनुराग जीओ अथवा मरो। यह बात एक मात्र भामा में ही हो ऐसी बात नही है। प्रायः विमाताएँ ऐसी ही भावनाएँ हृदय पर रखती हैं। लेखिका ने इस कहानी में इसी तथ्य को स्पष्ट किया है। यही इस कहानी का उद्देश्य भी था।

प्रश्न—'माँ' कहानी के शीर्षक पर अपने विचार प्रगट कीजिए।

उत्तर—'माँ' कहानी का शीर्षक अनेक प्रकार से महत्वपूर्ण है। पहला महत्व इस शीर्षक का यह है कि यह आकर्षक है। कहानी हाथ में लेते ही पाठक इस शीर्षक को देख कर कहानी पढ़ने में रुचि दिखाता है। दूसरा महत्व इस शीर्षक का यह है कि सम्पूर्ण कहानी का रहस्य इसी शीर्षक में छिपा हुआ है। माँ का महत्व इस विश्व के किसी भी प्राणी से छिपा हुआ नही है। माँ और विमाता में आकाश पाताल का अन्तर है। यह अन्तर विचारों में भी है तथा भावों में भी है। यही कारण है कि माँ और विमाता का व्यवहार भी एक ही परिस्थिति में भिन्न भिन्न होता है। माँ जिस कार्य को अपना कर्त्तव्य समझती है विमाता के लिए वह बोझ होता है जिसको वह लोक लाज के कारण ढोती तो है किन्तु वहुत ही लापरवाही से और अच्छे बुरे फल का ध्यान किये विना। अनुराग की माँ शकुन्तला का देहान्त उस समय हो गया जव जह केवल दो ढाई वर्ष का निरीह शिशु था। उसकी माँ की अरथी सजाई जा रही थी तो भी वह उस घटना को देख रहा था। वह मृत्यु और जीवन में अन्तर ही नहो कर सकता था। ऐसा अबोध शिशु था। उसके पिता कृपाशंकर ने दूसरा विवाह कर लिया। उनकी नई पत्नी और अनुराग की नई माँ भामा घर में आई। जो स्नेह एवं प्यार अनुराग को मिलना चाहिए था वह उसे नही मिला इसलिए उसके स्वभाव में सहसा गंभीरता आगई। उसकी यह गंभीरता बढ़ने लगी। पहले तो उसने घर से बाहर निकलना ही वन्द कर दिया और जव घर से निकलने लगा तो घर में आना ही बहुत कम कर दिया किन्तु उसकी इन दोनो ही क्रियाओं के प्रति विमाता भामा की सहानु-भूति उसे नही मिली उसका बाल हृदय कुन्द होता ही गया। भामा ने अपने गोद के बालक के शकुन के लिए होली की कहानी सुनी और तागा बँधवाया किन्तु दो वर्ष तक वह केवल मात्र अनुराग की ही माँ रही थी। उस समय उसने अनुराग के लिए इस प्रकार का कोई शकुन नही मनाया। क्यों? क्योंकि वह माँ नहीं थी

विमाता थी। अनुराग उसकी कोख से उत्पन्न नहीं हुआ था उसके पति की पहली पत्नी से उत्पन्न हुआ था फिर उसे अनुराग का दर्द क्यों आता ?

अनुराग तेज ज्वर में पड़ा माँ, अम्मा की रट लगाता रहा किन्तु भामा ने उसे नहीं सम्हाला। वह क्यों सम्हालती ? वह उसकी माँ नहीं थी। वह जिसकी माँ थी उसे अपने गले से चिपकाये दालान में सो रही थी। लेखिका ने सम्पूर्ण कहानी का रहस्य अन्त में कृपाशंकर के शब्दों में इस प्रकार खोला है—"मां है यह ? हां अम्मा। पर अनुराग की नहीं। "लेखिका के यह शब्द भी महत्वपूर्ण हैं-"और फिर सहसा उनकी आंख युवती के पास पड़े शिशु पर जाकर ठहर गई।" लेखिका ने स्पष्ट ही संकेत किया है कि भामा तो इस नवजात शिशु की माँ है—माँ है तो उसकी पूरी सम्हाल भी रखे हुए है। वह अनुराग की मां नहीं है। अनुराग मरता है अथवा जीवित रहता है, इसकी उसे चिन्ता क्यों हो ? माँ का हृदय तो अपनी सन्तान के लिए दुखता है, अन्य की सन्तान के लिए उसमें दर्द क्यों हो ? इस कहानी का शीर्षक मां रख कर लेखिका ने सम्पूर्ण कथावस्तु के रहस्य को इसमें केन्द्रित किया है। इस शीर्षक के अतिरिक्त कोई दूसरा शीर्षक इतना सारगभित हो ही नहीं सकता था। इसका शीर्षक विमाता भी नहीं हो सकता क्योंकि विमाता भामा का चरित्र-विश्लेषण ही लेखिका का उद्देश्य नहीं है। वह तो माँ की अनुपस्थिति में बालक को मनोदशा एवं उसकी रुकती हुई प्रगति की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहती है। माँ के बिना बालक का जीवन कितना निराशाजनक एवं अविकसित रह जाता है। इसी तथ्य को खोल कर रखने का लेखिका ने प्रयास किया है। अतः इस तथ्य के विश्लेषण के लिए इस कहानी का शीर्षक भी माँ ही हो सकता था। यदि इस कहानी का शीर्षक दूसरी शादी भी रखा जाता तो भी उसमें वह सौन्दर्य एवं सार नहीं रहता जो प्रस्तुत शीर्षक मां मे है। एक बात और भी है कहानी का सम्पूर्ण वातावरण अनुराग की मनोदशा को स्पष्ट करने में व्यस्त है। वह प्रत्यक्ष एवं परीक्षा रूप से कहानी को कथावस्तु में उलझा हुआ है और उसके इस प्रकार उलझे रहने में उसकी अपनी मां की याद है। यदि उसकी मां जीवित होती तो उसकी अच्छी देख भाल होती, उसका विकास होता, उसकी सम्हाल होती और भी न जाने क्या क्या होता ? यदि कुछ भी नही होता तो कम से कम यह तो नहीं होता कि वह मरणासन्न अवस्था में पड़ा विलाप करता रहता और उसके कानों में जूँ तक

नहीं रँगती। वह अनुराग की क्षेम-कुशल के लिए प्राणों तक की बाजी लगा देती। इन सब तथ्यों पर विचार करने पर इस निष्कर्ष पर पहुँचना होता है कि इस कहानी का प्रस्तुत शीर्षक "माँ" उपयुक्त एवं सारगर्भित है।

आपरेशन

प्रश्न—कहानीकार विष्णु प्रभाकर की विशेषताएँ बताकर 'आपरेशन' नामक कहानी को संक्षेप में लिखो।

उत्तर—श्री विष्णु प्रभाकर नये कहानी लेखकों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनकी कहानियों में मनोवैज्ञानिक तथ्यों का सरल विश्लेषण मिलता है। इनका कहानी कहने का ढंग रोचक एवं प्रभावशाली है। इस वैज्ञानिक युग में केवल मात्र आदर्श को अपना कर कोई लेखक साहित्य का निर्माण नहीं कर सकता है। इस समय प्रत्येक वस्तु वैज्ञानिक दृष्टि से आँकी जाती है। इसलिए "क्या होना चाहिए" का आग्रह छोड़ कर नवीन लेखक "क्या" है का विश्लेषण करते है। श्री विष्णु प्रभाकर भी इसी कोटि के लेखक हैं। इनकी कलम से जो साहित्यक सामग्री निकल रही है वह इस पीढ़ी के पूर्णतया योग्य है। विष्णु प्रभाकर अपनी कहानियो में बहुत ही सतर्कता के साथ जीवनोपयोगी सामग्री प्रस्तुत करते है। नवीन लेखक प्रगतिशील है। विष्णु प्रभाकर भी इसी पथ के पथिक हैं। उनके पास भाव, भाषा एवं शैली की ऐसी ब्रुस है जो आज के जीवन के प्रत्येक पहलू मे रंग भरने की सामर्थ्य रखती है। मानव की मनः स्थिति का विश्लेषण करने मे विष्णु प्रभाकरजी कुशल है। आपने लक्षणा एवं व्यंजना का सहारा लेकर अपनी कहानियो के सौन्दर्य को बढ़ाया है।

कहानी संक्षेप—सिविल अस्पताल के प्रसिद्ध सर्जन डा० नागेश का आपरेशन बड़ा सफल रहता था। एक दिन जब वे अपना कार्य समाप्त करके घर लौटने वाले थे तो उसके सहकारी डा० कुमार ने आकर सूचना दी कि एक मस्तिष्क के आपरेशन का रोगी आया है। वह अपने मस्तिष्क का आपरेशन कराना चाहता है। डा० नागेश अपने सहकारी के साथ हो लिए। उनका यह ख्याल था कि रोगी पागल है किन्तु जब वे उस कमरे में पहुंचे जहाँ रोगी बैठा हुआ था तो वह डा० नागेश के सत्कार में उठा। उसने जैसा व्यवहार किया उस व्यवहार से स्वयं डा० नागेश भी चक्कर मे पड़ गए। ऐसा भद्र व्यवहार एक पागल व्यक्ति नही कर सकता था। डा० नागेश ने रोगी की परीक्षा की, उसका नाम पूछा और उस स्थान को दबाया जहाँ उसके दर्द हुआ करता था। रोगी सन्तकुमार ने डा० नागेश

को बताया कि जब दर्द होता है तो ऐसी इच्छा होती है कि या तो अपना सिर दीवाल से दे मारूँ अथवा किसी का गला घोंट दूँ। कभी-कभी रोना भी आ जाता है। डा० नागेश ने सन्तकुमार की एक नस विशेष दबाई जिससे वह मींच कर अपनी पुतलियों को फिराने लगा। डा० नागेश ने उसके सुई लगाई जिससे वह कुछ क्षणों तक लेटा रहा। जब उसकी नार्मल स्थिति आई तो डा० नागेश ने उससे अस्पताल में भर्ती होने की बात कही जिसको उसने सहर्ष स्वीकार कर लिया। डा० नागेश उसे भर्ती करने की आज्ञा देकर चला गया।

डा० नागेश डा० कुमार को जाते समय यह निर्देश दे गया कि यदि कोई विशेष परिस्थिति उत्पन्न हो तो मुझे सूचना दे दी जाय। डा० नागेश घर पहुँच कर भी उस रोगी के सम्बन्ध में विचार करता रहा। उसने अपनी पत्नी को बताया कि एक ऐसा रोगी अस्पताल में आया है जिसे शायद सदमा हुआ है और वह सदमा भी उसे अपनी ही भूल के कारण हुआ है। शायद उसने किसी के साथ विश्वासघात किया है या धन हड़पा है और अब उसे पश्चात्ताप हो रहा है। इसी समय डाक्टर कुमार ने डा० नागेश को सूचना दी कि सन्तकुमार पागल हो गया है। डा० नागेश तत्काल अस्पताल की ओर चल पड़ा। जब तक डा० नागेश अस्पताल पहुँचा सन्तकुमार को अलग कमरे में ले जाया जा चुका था। वह वहाँ पर कह रहा था—मैंने महात्मा गांधी की हत्या की है। गौड़से का तो केवल नाम है। वह हाथ था मैं मस्तिष्क हूँ। मैंने उसका संचालन किया किया था। डा० नागेश ने उसे सहलाते हुए कहा तुम ठीक कहते हो। मैं तुम्हारी बात का विश्वास करूँगा। डा० नागेश की बात सुनकर सन्तकुमार फूट-फूट कर रोने लगा। डा० नागेश ने उसके सुई लगवाई। सन्तकुमार गांधी के लिए यह कहता हुआ बेहोश हो गया—जिस समय वह मानवता की प्राण प्रतिष्ठा के लिए प्राणों को होम रहा था उस समय मैंने अपने प्राणों की रक्षा के लिए हिंसा का स्वर उठाया। उस समय मैंने गीता के कृष्ण की दुहाई दी और शास्त्रबल का प्रचार किया। जिस समम वह दुश्मन को दोस्त बनाने में लगा हुआ था, मैंने लोगों को दुश्मन पर हमला बोल देने को उकसाया—यह सब मैंने किया, मैं जो अपने को उसका शिष्य, उसका साथी कहता था—"

डा० नागेश ने एक कागज पर लिखा—"व्यक्ति का अस्तित्व काम में है। गांधी अपने काम के कारण गांधी था। वह मर गया पर उसका काम अभी नही मरा। व्यक्ति की भांति उसके प्राण तुरन्त नहीं निकले। यदि कोई [illegible]

उठेगा उसी प्रकार जिस प्रकार एक दिन ईसा जी उठे थे ।" डा० नागेश की इन पंक्तियों ने सन्तकुमार को बहुत कुछ ठीक भी कर दिया। क्योंकि ये पंक्तियाँ सन्तकुमार की आत्मा को चीरने में सफल होगईं' किन्तु सन्तकुमार ऐसा असाध्य रोगी था कि उसे इससे भी बड़े आपरेशन की आवश्यकता थी । अतः उसका यह बड़ा आपरेशन दो दलों के झगड़े में कूद पड़ने पर हुआ जहाँ उसने एक दूसरे पर किए गये नाना प्रहारों को अपने पर झेला । वह आहत हो गया । अस्पताल में पहुँचने पर उसने डा० नागेश से स्पष्ट कहा "मैं मरूँगा नहीं। गांधी जी को पुनर्जीवित करने के लिए मुझे अभी बहुत दिन जीना होगा ।" इस प्रकार से इस कहानी की कथावस्तु सजीव, प्रभावोत्पादक, सारगभित एवं मार्मिक है।

पात्र—इस कहानी के पात्र ऐसे सजीव है कि उनका प्रभाव हमारे हृदय पर पड़े बिना नहीं रहता । कहानी के प्रमुख पात्र है डा० नागेश, डा० कुमार, सन्त कुमार एवं नर्स । डा० नागेश की पत्नी एवं डा० नागेश के नौकर का विवरण केवल कथावस्तु के तार जोड़ने के लिए आया है। डा० नागेश अनुभवी एवं योग्य सर्जन है । वह मनुष्य के रोगों का भी पारखी है । रोग की पकड़ उसे याद है । रोग की पकड़ के साथ ही रोगी का आपरेशन भी वह कुशलतापूर्वक करने में सफल होता है। सन्तकुमार के लिए उसने यह धारणा बनाई थी कि सन्तकुमार को अपने ही किसी दुष्कृत का सदमा है । डा० नागेश की इस धारणा मे काफी सचाई निकली । सन्तकुमार को गांधीजी की हत्या का दुख था क्योंकि उनकी हत्या मे उसके मस्तिष्क का बहुत बड़ा योग था। उसे अपने दुष्कृत पर खेद था इसलिए डा० नागेश ने उसके लिए ये पंक्तियाँ लिखी थी 'व्यक्ति का अस्तित्व काम मे है । गांधी अपने काम के कारण गांधी था। वह मर गया पर उसका काम अभी नही मरा । व्यक्ति की भाँति उसके प्राण तुरन्त नही निकले । यदि कोई अपने प्राण खपाकर उसके काम की रक्षा करे तो गांधी फिर जी उठेगा, उसी प्रकार जिस प्रकार एक दिन ईसा जी उठे थे ।' डा० नागेश की इन पंक्तियो ने सन्तकुमार को बहुत कुछ ठीक भी कर दिया था । वह शल्य चिकित्सा मे एक अद्भुत आविष्कार करने मे सफल हो गया था । शरीर चीरना उसका कार्य था किन्तु इन पंक्तियो के द्वारा उसने सन्तकुमार की आत्मा भी चीर दी थी । डा० नागेश से सन्तकुमार को जनहित के लिए कार्य करने की प्रेरणा मिली थी । इसी जनहित में लगने से सन्तकुमार को मानसिक शान्ति मिल सकती थी । वास्तव मे हुआ भी ऐसा ही । जब उसने दूसरों के झगड़े मे कूद कर अपने को आहत कर लिया तो उसे

सान्त्वना मिली । डा० नागेश का व्यवहार रोगियों को सान्त्वना देने में भी अपूर्व था । उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली था ।

दूसरा चरित्र सन्तकुमार का है । लेखक ने इस चरित्र के चित्रण में अत्यधिक कौशल से काम लिया है । मानसिक पीड़ा मानव को शान्त नहीं रहने देती । सोते-जागते, उठते-बैठते, खाते-पीते और चलते-फिरते यह अपना कार्य करती ही रहती है । मनुष्य को अपने दुष्कृतों पर अवश्य पश्चात्ताप होता है । सन्त कुमार को भी अपने दुष्कृत पर अत्यधिक क्षोभ था । उसने उस महान् व्यक्ति के विरुद्ध षड़यन्त्र रचा था जो मानवता के हित में कार्य कर रहा था । दुश्मनों को दोस्त बनाने में क्रियाशील था जो स्वयं महान् था और दूसरों को महान् बनने का मार्ग बता रहा था, किन्तु सन्तकुमार यह सब कुछ बर्दाश्त नहीं कर सकता था क्योंकि उसका स्वयं का अस्तित्व मिटता जा रहा था । मानवता का शत्रु सन्त कुमार मानवता की प्राण प्रतिष्ठा कैसे वर्दास्त करता । उसने षड़यन्त्र रचा और महात्मा गान्धी की हत्या करवा दी । हत्या करवाने के पश्चात् उसकी स्वयं की मानवता ने उसे काटना आरम्भ कर दिया । वह अपने जीवन से ऊब गया । अपने पाप के प्रायश्चित का मार्ग ढूंढ़ने लगा । उसने अपने मस्तिष्क के विकार को आपरेशन के द्वारा दूर करना चाहा किन्तु वह अपने प्रयास में असफल रहा । डा० नागेश ने उसे अपने प्राण खपाकर गान्धी को पुनर्जीवित करने की प्रेरणा दी । इससे उसे थोड़ी सान्त्वना हुई किन्तु उसका आपरेशन तो उस दिन हुआ जब वह अहिंसा का पुजारी बन कर हिंसा के हाथों से पिटा । दो दलों की रक्षा के हेतु लाठियों का प्रहार सहा । यहाँ उसके चरित्र में गान्धीवादी विचारधारा स्पष्ट हुई । उसके अपने दुष्कृत का प्रायश्चित हुआ । वह जीत कर हारा था किन्तु यहाँ पर हार कर जीत गया । उसके चरित्र में यह परिवर्तन आना ही चाहिए था अन्यथा वह पागल हो जाता । इस विश्व के सभी ऐसे व्यक्ति जो दूसरों के लिए षड़यन्त्र रचा करते है ऐसे ही मानसिक रोगी बन जाते हैं । उनकी आत्मा ही उन्हे काटती रहती है । वे जीवित भी मृतक के समान हो जाते हैं । लेखक ने सन्तकुमार के चरित्र में अन्तर्द्वन्द्व की चरम सीमा बताई है । उसके पाप का विश्लेषण करके उसमे सद्गुणों का समावेश किया है । अतः सन्तकुमार सम्पूर्ण कहानी में महत्वपूर्ण पात्र है । डा० कुमार एवं नर्स के चरित्र का विकास नही हो पाया है । वे उसी प्रकार के व्यक्ति रह गये है जैसे उनके फिरके के अन्य मनुष्य होते है।

कथोपकथन— इस कहानी के कथोपकथन सजीव, रोचक एवं प्रभावशाली हैं। इन कथोपकथनों के द्वारा पात्रों का चरित्र चित्रण भी हुआ है तथा कहानी में रोचकता भी आई है। कहानी की बिखरी हुई घटनाओं को संगठित करके कथानक मे गति उत्पन्न करने का कार्य भी इन कथोपकथनों के द्वारा लिया गया है। कथोपकथनो के द्वारा ही इस कहानी के मर्म का विश्लेषण हुआ है। कथोपकथन छोटे छोटे वाक्यो मे है एवं मर्मस्पर्शी हैं। मनोविकारों के आविर्भाव एवं तिरोभाव के अनुसार ही कथोपकथनो में आरोह एवं अवरोह की अवस्थाएँ आई हैं। सन्तकुमार एवं डा० नागेश के कथोपकथनो में उन दोनों व्यक्तियों के चरित्रो का सुन्दर विश्लेषण हुआ है। चरित्र विश्लेषणों के अतिरिक्त परिस्थितियों का विश्लेषण भी इन कथोपकथनों के द्वारा हुआ है। घटनाओ की सूचना भी इन कथोपकथनों के द्वारा दी गई है। लेखक कथोपकथनों का उपयोग करने में अत्यधिक जागरूक प्रतीत होता है। कथावस्तु के आरम्भ मे प्रयुक्त कथोपकथनों की एक झलक देखिए—

दूसरे साथी ने आकर कहा—"डाक्टर ! आप शीघ्र आइए।"

डाक्टर ने पूछा—"क्यो क्या है ?"

"एक अद्भुत केस है।"

"आपरेशन का ?"

"जी हाँ।"

"कोई घायल ?"

"जी नहीं वह पूर्ण स्वस्थ है।"

"तो................?"

"वह चाहता है मस्तिष्क का आपरेशन कर दिया जाय।"

आगे चल कर इन्ही कथोपकथनों से कहानी का मर्म सामने आने लगता है। डाक्टर पूछ रहा है—"हाँ, तो सन्तकुमार जी, यहाँ पर दर्द बहुत होता है ?"

'जी हाँ, यही तो मनुष्य का स्थान है।"

' क्या................?"

जी हाँ यहाँ वे गुण जन्म लेते है जिनसे मनुष्यता का निर्माण होता है डाक्टर हँसे—आप तो काफी ज्ञानी जान पड़ते है।"

डाक्टर नागेश अपनी पत्नी से घर पर वार्तालाप कर रहा है—

"मुझे विश्वास है कि इस व्यक्ति को कोई गहरा सदमा पहुंचा है।"

"हो सकता है।"

"और वह सद्मा भी ऐसा है जिसके लिए वह अपने को दोषी मानता है?"

"ऐसी क्या बात है ?"

"कुछ समझ में नहीं आता। वह युवक नहीं है, अधेड़ है। हो सकता है वह किसी विधवा का धन हड़प गया हो ?"

इस प्रकार इस कहानी के कथोपकथन सारगर्भित एवं प्राणवान है।

देशकाल—इस कहानी में देशकाल का निर्वाह उचित ढंग से हुआ है। विरोधी राजनीतिज्ञ जब अपने प्रतिद्वन्दी को छल से दबोच देता है तो उसकी आत्मा ही उसे काटने लगती है। वह जीत कर हार जाता है। सन्तकुमार का व्यक्तित्व कुछ इसी प्रकार का है। जिन लोगों का महात्मा गान्धी की हत्या में किसी प्रकार का सहयोग रहा होगा उनके हृदय में ठीक इसी प्रकार का अन्तर्द्वन्द मचा होगा जैसा अन्तर्द्वन्द सन्तकुमार के हृदय मे उठा था और उन लोगों ने महात्मा गान्धी के सिद्धान्तों का समर्थन अवश्य किया होगा। उन्होंने अपने पाप का प्रायश्चित गान्धीवाद को प्रोत्साहन देने मे किया होगा। डा० नागेश, डा० कुमार एवं नर्स का व्यवहार ठीक उसी प्रकार का है जिस प्रकार का व्यवहार डाक्टर एवं नर्स अस्पतालो में आए हुए रोगियों के साथ करते हैं। इनके व्यवहार में स्वाभाविकता है।

शैली—श्री विष्णु प्रभाकर की वर्णन शैली रोचक एवं मार्मिक है। इनकी शैली मे वर्णन की सजीवता रहती है। इस कहानी मे इनकी मंजी हुई शैली का रूप हमारे सामने आया है। इनकी भाषा में तत्सम शब्दों का प्रयोग ही अधिक होता है। इसलिए भाषा साहित्यिक बन जाती है। आवश्यकतानुसार विष्णु प्रभाकर जी अन्य भाषाओं के शब्द भी प्रयोग में लाते है किन्तु वे शब्द कम ही होते है। इनकी शैली की एक विशेषता यह भी है कि उसमें न तो भाव-दुरूहता है और न शब्द जाल है। इसका परिणाम हुआ है कि पाठक वह सब कुछ ग्रहण करता चलता है जो लेखक कहना चाहता है। इस कहानी में इनकी वर्णनात्मक शैली का निखरा हुआ रूप हमारे सामने आया है।

उद्देश्य—इस कहानी का उद्देश्य उस व्यक्ति की मनोदशा का विश्लेषण करना है जो किन्ही कारणों से कोई दुष्कृत करता है और बाद मे स्वयं ही उस दुष्कृत के लिए पाश्चाताप भी करता है। वह पश्चाताप इतना उग्र हो जाता है कि उसका जीवन ही उसके लिए भार बन जाता है। उसका जीवन उस समय

तक स्वयं उसके लिए भार बना रहता है जब तक वह अपने दुष्कृत का प्रायश्चित नहीं कर लेता । यह प्रायश्चित उस दुष्कृत के विरुद्ध आचरण करने से होता है। सन्तकुमार ने गांधी जी की हत्या मे योग दिया था—वह गांधीवाद का अन्त कर देना चाहता था । किन्तु गान्धी जी की मृत्यु के पश्चात् भी गान्धीवाद जीवित रहा । सन्तकुमार की आत्मा ने हत्या जैसा दुष्कृत करने पर उसे फटकारा उसका गला दबाया उसमें मानसिक पीड़ा जगा दी । सन्त कुमार बेचैन हो गया । उसकी हिंसा की प्रकृति उसे ही खाने लगी । उसे अपने पाप का प्रायश्चित करना पड़ा। वह स्वयं गान्धीवाद को जीवित रखने के लिए अहिंसक बना । समन्वयकारी बना । उसने दो क्रुद्ध दलों के झगड़े मे कूद कर अपने सिर पर लाठियां खाईं । तब उसके मस्तिष्क का आपरेशन स्वतः ही हो गया । गान्धीवाद की विजय दिखाना ही इस कहानी का रचना उद्देश्य प्रतीत होता है। इस प्रकार इस कहानी का उद्देश्य इन पंक्तियों में पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है—जब सन्तकुमार डा० नागेश से कहता है—"डरो नही डाक्टर! मैं जिऊँगा । गाधीजी को पुनर्जीवित करने के लिए मुझे अभी बहुत दिन जीना पड़ेगा ।"

प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए—

(क) "जिस समय वह मानवता की प्राण प्रतिष्ठा के लिए प्राणों को होम रहा था उस समय मैंने अपने प्राणों की रक्षा के लिए हिंसा का स्वर उठाया । उस समय मैंने गीता के कृष्ण की दुहाई दी और शस्त्र बल का प्रचार किया। जिस समय वह दुश्मन को दोस्त बनाने मे लगा हुआ था, मैंने लोगों को दुश्मन पर हमला बोल देने को उकसाया ।"

ये पंक्तियां विष्णु प्रभाकर की 'आपरेशन' कहानी से उद्धृत की गई हैं। संत कुमार अपना अपराध स्वीकार करता हुआ उन गलतियों के सम्बन्ध में कह रहा है जिसके कारण गान्धी जी की हत्या हुई ।

सन्त कुमार बेहोशी की हालत मे प्रलाप करता हुआ कह रहा है कि जब महात्मा गान्धी मानव मे मानवता का विकास कर रहे थे उस समय मैं अपना अस्तित्व खतरे मे समझ कर हिंसा पर बल दे रहा था क्योंकि मैं अज्ञान का प्रतीक हूँ । अमानवता अज्ञान मे निवास करती है और मानवता ज्ञान मे निवास करती है। गांधी जी अज्ञान का पर्दा चीर कर उसमे पड़े मानव को मानवता का महत्व सिखा रहे थे । ज्ञान का विकास होने पर अज्ञान स्वयं ही मर जाता है । अतः मेरे प्राण खतरे मे थे इसलिए मैंने लोगों को हिंसक बनाया जिससे मेरी पूजा हो । गान्धीजी

के कार्य में वावा उपस्थित हो। मैंने इसी हिंसा का प्रचार गीता के कृष्ण का उदाहरण देकर किया जिसका अर्थ यह था कि लड़ाई में भाईचारा कोई अर्थ नहीं रखता है। हमारे साथ जिन्होंने अन्याय किये हैं उनके साथ हमको अन्याय करना ही चाहिए। यही कारण था जब गांधीजी ने शत्रु को भी मित्र वनाने का प्रयास किया तो मैंने शत्रुओं को उनके प्राण लेने के लिए उकसाया जिससे मेरा अस्तित्व रह सके।

विशेष—लेखक का अभिप्राय उपर्युक्त पंक्तियों में यह है कि गांधी जी की हत्या का दोष उन लोगों को है जो अपना अस्तित्व वनाये रखने के लिए निम्न कोटि के राजनैतिक दांव पेच खेलते रहते हैं। उन्हें मानव एवं मानवता से कोई प्रयोजन नहीं होता। वे केवलमात्र नेतागीरी में ही अपने जीवन का साफल्य समझते हैं।

(ख) "आज उन्होंने शल्यचिकित्सा में एक अद्भुत आविष्कार किया था। प्रति दिन वह शरीर चीरा करते थे, पर आज उन्होंने शरीर की आत्मा को चीरा था और वह भी आशातीत सफलता के साथ।"

ये पंक्तियाँ विष्णु प्रभाकरकृत आपरेशन कहानी में से उद्धृत की गई हैं। सन्तकुमार अपने आपको गांधीजी का हत्यारा वताकर उन्मादी व्यक्ति के समान क्रियाएँ कर रहा था। डा० नागेश ने उसे थपथपा कर कहा था कि तुम ठीक कहते हो और लोग विश्वास करें या न करें मैं तुम्हारी वात का अवश्य विश्वास करता हूँ। डा० नागेश के इस कथन का सन्तकुमार पर प्रभाव पड़ा था। इसलिए डा० नागेश ने उसके वेहोश हो जाने के पश्चात् कुछ पंक्तियाँ लिखकर वहाँ उपस्थित नर्स को दी थी जिसका अभिप्राय यह था कि गांधीजी की मृत्यु हो गई किन्तु गांधीजी के काम नहीं मरे हैं। यदि कोई व्यक्ति उनके काम को आगे वढ़ावे तो गांधीजी फिर जी उठेंगे। इन पंक्तियों का सन्तकुमार के मस्तिष्क पर अच्छा प्रभाव पड़ा था। वह अस्पताल से छुट्टी लेकर चला गया था।

जव सन्तकुमार प्रसन्न चित्त होकर अस्पताल से विदा लेकर चला गया तो डा० नागेश का हृदय प्रसन्नता से खिल उठा क्योंकि डाक्टर नागेश को अपनी चिकित्सा में अत्यधिक सफलता मिली थी। यही कारण था कि सन्तकुमार के हृदय में अपने दुष्कृत के सम्बन्ध में व्यथा थी। इसी दुष्कृत का प्राश्यचित आवश्यक था। यह प्रायश्चित इसी प्रकार का हो सकता था जिसने महात्मा गांधी की हत्या में सहयोग दिया वह उसी महात्मा गांधी के सिद्धान्तों के प्रचार में अपने को

लगावे और महात्मा गांधी का जो अधूरा काम रह गया था उसे पूरा करे ! सन्तकुमार की आत्मा मे यह बात बैठ गई । वह महात्मागांधी के सिद्धान्तो पर चल कर जन कल्याण की दिशा में कार्य करने के लिये तत्पर हो गया। इसलिए डा० नागेश की यह चिकित्सा सफल सिद्ध हुई । आज तक डा० नागेश को ऐसी चिकित्सा करने का अवसर नही मिला था । वे शरीर को ही चीर फाड़ करते रहे थे किन्तु आज उन्होंने सन्तकुमार की आत्मा को चीर दिया था—उसे दिशा दिखा दी थी जिस पर चल कर वह अपने पाप का प्रायश्चित कर सकता था । अतः डा० नागेश का प्रसन्न होना स्वाभाविक था ।

नई जिन्दगी के लिए

प्रश्न—कहानीकार रांगेयराघव का परिचय देकर 'नई जिन्दगी के लिए', नामक कहानी की कथा संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर—रांगेयराघव जी नये कहानी लेखको मे अपना विशिष्ट स्थान रखते है। आपकी कहानियो मे यथार्थवाद का मार्मिक चित्रण मिलता है । आपकी कहानियों में जीवन की उन घटनाओं का चित्रण विशेष रूप से मिलता है जो हमारे इर्द-गिर्द घटती रहती है। इसलिए इनकी कहानियो में सुख दुख की उस भावना का अधिक विश्लेषण हो पाता है जिससे हमारा गहरा परिचय होता है । रांगेयराघव जी की लेखनी हमारे जाने पहचाने तथ्यों का विश्लेषण बहुत ही मार्मिक ढंग से करने में सफल रहती है। यही कारण है कि हमारे हृदय में सुख दुख एवं सहानुभूति की भावनाएं तत्काल उदय होती है। आपका बात कहने का ढंग भी मार्मिक है। दैनिक जीवन के मार्मिक उदाहरणों को छांट कर ज्यों का त्यों रख देने में रांगेयराघव जी को अपूर्व सफलता मिली है। इससे एक ओर तो कहानियो में प्रभावोत्पादकता आ गई है तथा दूसरी ओर सत्य की व्यंजना बहुत ही सुन्दर रूप में हो पाई है । इनकी कहानियों की यह प्रमुख विशेषता भी है । इन्होने अपनी कहानियों के पात्रों का चरित्र-चित्रण कुशलतापूर्वक किया है। आप मानव मनोविज्ञान के ज्ञाता है इसलिए मनोविज्ञान के सहारे गहराई में पैठकर सूक्ष्म विश्लेषण करने में सफल हो जाते है ।

कहानी संक्षेप—हम नौ लड़कियाँ थी । मेरी आयु लगभग १५ वर्ष की थी । अब तो मै ही तीन बच्चों की माँ हूँ, इसलिए सब कुछ समझती हूँ किन्तु उस समय इतना नही समझती थी । माँ के दशवाँ बच्चा और होने वाला था ।

पिता जी ६०) रु० माहवार पर दफ्तर का काम करते थे। वे सदैव ही थके मांदे से प्रतीत होते थे। उनका यह स्वभाव बन गया था कि दफ्तर से आते ही सब लोगों को डाँटने लगते। कभी-कभी तो बुरी तरह से मारपीट भी करते जिस से घर में कुहराम मच जाता था। बाबा साँवलदास ने उन्हें एक लड़का होने का मन्त्र दिया था। उसे वे रटते रहते और पूजा करते रहते थे। मैं इतना कठोर परिश्रम करती थी कि थोड़ा सा लेटते ही मुझे गहरी नींद आजाती थी। ठकुरानी मुझ से कहा करती थी—"तुम्हारे बाबूजी विचारे अत्यन्त दुखी जीव हैं। नौ लड़कियाँ क्या कम होती हैं। तुम्हारा कन्यादान करते करते ही उनके घुटने टूट जाएँगे।" मुझे यह सुनकर बहुत व्यथा होती थी। हैं जो तो हैं ही मर कैसे जायें। एक दिन पिताजी और माँ में वार्तालाप चल रहा था। पिताजी कह रहे थे कि जब दो पत्नियाँ मर गईं तो माँ ने तीसरी शादी इसलिए करवा दी थी कि घर का दीपक न बुझ जाए। अब इतनी सारी लड़कियों से घर में कैसा उजाला हो रहा है? माँ ने नम्रता से यही कहा था–"लड़के लड़कियाँ भगवान की देन हैं। वह जो देता है वही लेना पड़ता है। यदि आपको ज्यादा ही दुख है तो दो चार का गला घोंटकर मार डालो।" कुछ दिनों के बाद पिताजी बहुत उद्विग्न दिखाई दिये। वे दाई को लाए। मैं कठिन परिश्रम के कारण उस दिन बहुत थक गई थी। मुझे इसलिए लेटते ही गहरी नीद आ गई, फिर मैं सहसा शोरगुल सुनकर जाग पड़ी। मेरी सारी छोटी बहिनें मेरे पास आकर जमा हो गई थीं। पिताजी देहलीज पर अपना शिर मार रहे थे। बात यह हुई कि दशवीं सन्तान भी लड़की ही हुई थी।

प्रश्न—'नई जिन्दगी के लिए' नामक कहानी की कहानी कला की दृष्टि से आलोचना कीजिए।

उत्तर—रांगेयराघवजी को कहानी कला की दृष्टि से इस कहानी में प्रशंसनीय सफलता मिली है। कहानी के आवश्यक तत्वों का समावेश होने के कारण इस कहानी का कला की दृष्टि से भी बहुत महत्व बढ़ गया है। इस कहानी का कला की दृष्टि से विश्लेषण करके देखने से हमें राघवजी की कहानी विषयक योग्यता एवं इस कहानी का महत्व स्पष्ट विदित हो सकेगा।

कहानी के ६ तत्त्व माने जाते हैं जिनका विवरण इस प्रकार है—(१) कथावस्तु या कथानक (२) पात्र या चरित्र चित्रण (३) कथोपकथन (४) देश-काल अथवा वातावरण (५) उद्देश्य (६) शैली। इस कहानी को इन्हीं तथ्यों के आधार पर आंककर देखना उचित होगा।

इसलिए इनकी वर्णन तथा विवरण शक्ति वाली शैली का सुन्दर रूप हमारे सामने आया है। छोटे छोटे वाक्यों में गूढ़ भावों को व्यक्त किया गया है। भावात्मक वर्णनों की इस कहानी में कमी नही है। बड़ी लड़की की भावनाओं का विश्लेषण मनोवैज्ञानिक तथ्यपूर्ण है। बाबू चिरंजीलाल की मानसिक व्यथा का विश्लेषण करने में लेखक को अच्छी सफलता मिली है। सीधी सादी साहित्यिक भाषा में मानव मनोविश्लेषण कर देना रांगेयराघव जी की शैली की अपनी विशेषता है।

उद्देश्य—इस कहानी का उद्देश्य भारतीय समाज के मध्यम वर्गीय परिवार की परिस्थिति, विचारधारा, मनः स्थिति एवं जीवन का विश्लेषण करना है। भारतीय समाज में लड़की का जन्म होना दुर्भाग्य का द्योतक है एवं लड़के का जन्म होना भाग्य का द्योतक माना जाता है। यदि किसी परिवार में केवल लड़कियाँ ही लड़कियां उत्पन्न होती जाएँ तो उस परिवार वाले अपने को महान् अभाग्यशाली समझने लगते हैं। उनके जीवन में से सुख शान्ति का लोप होने लगता है। वे चिड़चिड़े एवं दुखी रहने लगते है। बाबू चिरंजीलाल का उदाहरण ऐसा ही है। लड़कियां स्वयं घुटने लगती है, किन्तु आखिर वे क्या करें ? रस्ते मोहल्ले वाली तक की सहानुभूति उनके प्रति न होकर उनके माता पिताओं के प्रति होती है। यही भारतीय समाज की प्रकृति है। लेखक ने इसी भारतीय समाज की विचारधारा का विश्लेपण किया है।

यह कहानी कहानी-कला के तत्वों पर पूर्णत खरी उतरती है। इसलिए कहानी-कला की दृष्टि से श्रेष्ठ कहानी है।

प्रश्न---'नई जिन्दगी के लिए' कहानी के शीर्षक के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर—रांगेयराघव जी ने अपनी इस 'नई जिन्दगी के लिए' नामक कहानी में कही भी नई जिन्दगी के लिए शब्द के सम्बन्ध में वर्णन नहीं किया है, किन्तु फिर भी इस शीर्षक में बहुत कुछ सार है। इस कहानी की रचना का आधार मनोवैज्ञानिक सत्य है। लेखक ने उस मनः स्थिति का विश्लेपण किया है जो भारतीय समाज में विद्यमान है। कहानी के शीर्षक का कहानी में बहुत महत्त्व होता है। इसलिए सफल कहानी लेखक भूल कर भी निरर्थक शीर्षक का प्रयोग अपनी कहानी में नही करता। रांगेयराघव जी ने भी नई जिन्दगी के लिए नामक शीर्षक साभिप्राय रखा है।

कहानीकार ने इस शीर्षक के द्वारा अपनी कहानी को आकर्षक बनाया है।

इस शीर्षक के पढ़ते ही कहानी को पूरी पढ जाने की तीव्र इच्छा होती है। पाठक इस शीर्षक का रहस्य जानना चाहता है, इसलिए वह उत्सुकता से इसे पढना आरम्भ कर देता है। कहानी को पूरी पढ जाने के पश्चात् भी शीर्षक का रहस्य बना ही रहता है। अतः फिर वह इस रहस्य को समझने का प्रयास करता है। कहानी की घटनाओं पर पुनः विचार करता है। उसके मन में प्रश्न उठता है जिस का वह समाधान करना चाहता है। इस समाधान करने की इच्छा मे ही इस कहानी का आकर्षण छिपा हुआ है। कहानीकार प्रायः अपनी कहानी में शीर्षक का प्रयोग प्रमुख रूप से चार पांच रूपों मे करता है, जिनका विवरण इस प्रकार है—

(क) वह कहानी के मुख्य पात्र के नाम पर शीर्षक रख देता है।

(ख) कहानी के प्रधान विषय अथवा भाव के आधार पर अपनी कहानी का शीर्षक रख लेता है।

(ग) कहानी की प्रधान घटना के अनुसार शीर्षक रख लेता है।

(घ) कहानी की मुख्य कथावस्तु अथवा दृश्यावली के अनुसार शीर्षक रख लेता है।

(५) किसी स्थान विशेष का महत्व बताने के लिए कहानी का शीर्षक रख लेता है।

इस कहानी का शीर्षक पुत्र होने की तीव्र कामना पर आधारित है। नौ लड़कियो के पश्चात् लड़के की कामना करना स्वाभाविक ही है। इस कामना की पूर्ति के लिए पूजन पाठ एवं जप-तप करना भी स्वाभाविक है। बाबू चिरंजीलाल की यह तीव्र इच्छा थी कि दसवी सन्तान तो लड़का ही हो, किन्तु जब दसवी सन्तान भी लड़की ही हुई तो उनके हृदय पर इतनी गहरी ठेस लगी कि उन्होंने अपना शिर ही देहलीज पर दे मारा। उनकी पत्नी के गर्भ से नई जिन्दगी लड़की के रूप में निकल कर उनकी समस्त इच्छाओ एवं कामनाओं पर पानी फेर गई। उन्होने जो पूजा पाठ एवं मन्त्र जाप किये थे वे सब व्यर्थ चले गये। लड़का न होकर लड़की ही उत्पन्न हो गई। उनकी दो पत्नियां निःसन्तान मर चुकी थीं। इसलिए उन्होने यह तीसरा विवाह अपनी मां के दबाव में आकर किया था कि वे निःसन्तान न रहें। उनके घर का दीपक न बुझे, किन्तु इस पत्नी के गर्भ से केवल लड़कियां ही लड़किया उत्पन्न हुईं। घर का दीप एक भी उत्पन्न नहीं हुआ जो उनके पश्चात् उनके वंश की परम्परा स्थिर रखता। इसलिए जब

दसवीं सन्तान भी लड़की ही हुई तो सम्पूर्ण घर में मातम का वातावरण छा गया। मृत्यु का सा शोरगुल मच गया। वह नई जिन्दगी बाबू चिरंजीलाल के घर में आई ही नहीं जिसकी उनको लालसा थी। इसलिए 'इस नई जिन्दगी' शीर्षक में कहानी का सम्पूर्ण रहस्य छिपा हुआ है। अतः यह शीर्षक सारगर्भित एवं सार्थक है। लेखक इस शीर्षक के द्वारा कथानक की प्रधान घटना की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित करके सम्वेदना केन्द्रित करने में सफल हुआ है। वह एक प्रभाव एवं वातावरण की सृष्टि करना चाहता था। पुत्र के रूप में नई जिंदगी के लिए जो कामना एवं अभिलाषा बाबू चिरंजीलाल के हृदय में थी उसका सारगर्भित विश्लेषण पुत्र के स्थान पर पुनः पुत्री के उत्पन्न होने पर जिस रूप में हुआ वह वास्तविक है। इसका गहरा प्रभाव पाठक के हृदय पर पड़े बिना नही रह सकता है। पाठकों की बाबू चिरंजीलाल के प्रति सहानुभूति जागृत हो ही जाती है।

प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांश की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए—

(क) 'मारता है! अरे मारेगा नही। नौ नौ बाघ जिस पालने पड़ें उसकी बुद्धि भ्रष्ट नही हो जायगी? एक नहीं रहेगी, उमर आने पर कम्बल झाड़ झाड़ कर चल दोगी। बेचारे बूढ़े को कंगाल कर जाओगी और उसकी देख रेख करने वाला तक कोई न रहेगा। कही किसी ने उसका मुँह भी काला कर दिया तो बेचारे को डूबने तक को ठौर नहीं मिलेगा।"

ये पंक्तियाँ रांगेयराघव कृत 'नई जिन्दगी के लिए' कहानी से उद्धृत की गई है। चिरन्जीलाल के पुत्रियों पर पुत्रियाँ होती गईं, तो वह विड़चिड़े स्वभाव का व्यक्ति बन गया। वह आये दिन उन लड़कियो को मारता पीटता रहता था। इस मारपीट का विश्लेषण करती हुई ठकुरानी बड़ी लड़की से कहती है—

चिरन्जीलाल यदि उन लड़कियों को मारता है तो क्या नई बात करता है। उसकी अक्ल क्या ठिकाने है? अक्ल ठिकाने पर भी कैसे रहे? एक दो नहीं पूरी नौ लडकियाँ तो हो गईं, वह बेचारा इन लड़कियों रूपी नौ बाघों से घिरा हुआ है। उसे इनके पालन पोषण से लेकर व्याह सगाई और उस ब्याह सगाई के देन लेन तक की चिन्ता सता रही है। वह इन्ही चिन्ताओं में दबा जा रहा है। लड़की तो पराई सम्पत्ति होती है। तुम भी सब एक दिन इस घर से चली जाओगी। तुम्हारी सगाई ब्याह मे इतने रुपये खर्च हो जायेंगे, कि चिरंजीलाल कंगाल हो जायगा। उसकी इस कंगाली के प्रति सहानुभूति दिखाने वाला अथवा

सुनती रही थी। उसने बार-बार मन में कहा—बच्चों के साथ इतने प्यार से बातें करने वाला फेरी वाला कभी पहले नहीं आया।

आठ महीनों के बाद रोहिणी के कानों में फिर एक मीठी ध्वनि पड़ी—बच्चों को बहलाने वाला, मिठाई वाला। उसे यह स्वर परिचित सा लगा। उसने वृद्धा दादी को उस मिठाई वाले को रोककर चुन्नू मुन्नू के लिए मिठाई लेने का आग्रह किया वृद्धा दादी ने मिठाई वाले को रोककर भावताव पूछा और कहने लगी कि एक पैसे की कम से कम २५ गोलियाँ तो दो। मिठाई वाले ने अपनी विवशता प्रकट करते हुए कहा—"नहीं दादी अधिक नही दे सकता। इतनी भी कैसे देता हूँ यह अब मैं तुम्हे क्या बताऊँ।" रोहिणी ने दादी को मिठाई वाले से यह पूछने के किए कहा कि क्या वह पहले भी इस शहर में आया था। मिठाई वाले ने रोहिणी की आवाज सुन ली थी। उसने बताया—"मैं पहले भी आया था। एक बार खिलौने बेचने और दूसरी बार मुरली बेचने के लिए" रोहिणी ने उत्सुकता से पूछा कि तुम्हे इन व्यवसायो मे क्या मिलता होगा। मिठाई वाले ने उत्तर दिया—मैं भी अपने नगर का प्रतिष्ठित आदमी था। मकान व्यवसाय, गाड़ी, घोड़े, नौकर चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे-छोटे दो बच्चे भी थे। मेरा वह सोने का संसार था। बाहर सम्पत्ति का वैभव था, भीतर सांसारिक सुख था······अब कोई नही रहा। इसलिए अपने उन बच्चो की खोज मे निकला हूँ। ये सब अंत मे होंगे तो यही कही। आखिर कही न कहीं आखिर कही न कही जन्मे ही होगे। उस तरह रहता तो घुल-घुलकर मरता। इस तरह सुख सन्तोष के साथ मरूंगा। इस तरह के जीवन में कभी-कभी अपने उन बच्चों की एक झलक सी मिल जाती है। ऐसा जान पड़ता है जैसे वे इन्ही में उछल-उछल कर हँस खेल रहे है। पैसो की कमी थोड़े ही है। आपकी दया से पैसे तो काफी है। जो नहीं है, इस तरह उसी को पा जाता हूँ।' यह कहते कहते मिठाई वाले की आँख आसुओ से तर होगईं। इसी समय चुन्नू-मुन्नू वहां आ पहुचे थे। मिठाई वाले ने उनको मिठाई दी। रोहिणी ने भीतर से पैसे फेके किन्तु मिठाई वाला यह कह कर वहाँ से चला गया—अब इस बार ये पैसे न लूँगा। वही मीठी ध्वनि गूँज उठी—'बच्चो को बहलाने वाला, मिठाई वाला ?"

प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से मिठाई वाला नामक कहानी की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—यह कहानी भगवतीप्रसाद वाजपेयी की लिखी हुई है। वाजपेयीजी में कहानी लिखने की अद्भुत क्षमता है। इनकी कहानियों में मानव मनोविज्ञान का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है। यह कहानी भी मानव मनोविज्ञान का सूक्ष्मतम विश्लेषण करने में अत्यधिक सफल है। मिठाई वाले का चरित्र विश्लेषण लेखक ने जो इस कहानी में किया है वह अद्वितीय है। यह कहानी कहानी कला की दृष्टि से आंकी जाने पर भी पूर्णतः सफल ही उतरेगी। अतः अपने इस कथन की सत्यता आंकने के लिए इसे कहानी के तत्वों पर कस कर देखा जाता है।

कथावस्तु—इस कहानी की कथावस्तु मर्मस्पर्शी एवं सार गर्भित है। एक ऐसा व्यक्ति है जो धनधान्य से सम्पन्न था। उसका व्यवसाय खूब चलता था उसके पास गाड़ी घोड़े थे एवं नौकर-चाकर थे। उसके सुन्दर पत्नी थी और दो सुन्दर बच्चे थे किन्तु उन सबकी मृत्यु हो गई। उस व्यक्ति के जीवन का सुख झुलस गया। वह कभी खिलौने बेचकर, कभी मुरली बेचकर और कभी मिठाई बेचकर छोटे-छोटे बच्चों के झुंड में घूमा करता था। वह अपने मृत बच्चों के लिए सोचा करता था कि वे अवश्य कहीं न कहीं जन्मे होंगे और इन्हीं बच्चों में फुदक रहे होंगे। उसे बच्चों के इन झुण्डों में अपने बच्चों का आभास होता था इस लिए वह घाटा खाकर भी स्नेह स्निग्ध मीठी भाषा में उनको कभी खिलौने बेचता कभी मुरली बेचता और कभी मिठाई बेचता था। लेखक ने इस कथावस्तु का चयन करके मानव मनोविज्ञान का सुन्दर विश्लेषण किया है। मनुष्य के हृदय के भावों को, उन भावों के रहस्यों को खूब खोला है। मनुष्य पर विपत्ति पड़ने से उसमें नम्रता आ जाती है तथा उसकी वाणी की कटुता चली जाती है। मिठाई वाले पर ऐसी विपत्ति आई कि उसकी पत्नी एवं बच्चों का देहान्त हो गया। मिठाई वाले के पास पैसे की कमी नहीं थी। वह नगर-नगर एवं गली-गली घूम कर इठलाते हुए बच्चों में अपने बच्चों की खोज करने लगा। उसको अपने बच्चों की प्यार भरी तोतली वाणी, उनकी उछल कूद एवं उनकी नैसर्गिक हँसी से वँचित होना पड़ा था। वह इन सबको इन बच्चों के सम्पर्क से प्राप्त करता था। अपने दुखी हृदय को बहलाता था। उसका यह हृदय बहलाने का ढंग इतना वास्तविक एवं प्रभावशाली है कि सम्पूर्ण कथावस्तु अत्यधिक रोचक एवं संकेतपूर्ण बन गई है। मुरली वाले एवं विजयबाबू की बातें तथा रोहिणी की मिठाई वाले के प्रति सहानुभूति यथार्थ वातावरण की सृष्टि करते हैं।

पात्र—इस कहानी के पात्रों का चरित्र-चित्रण इतना मनोवैज्ञानिक एवं

सस्ते दामों पर बेचता था ? इसलिए उसने दादी के द्वारा उसको रुकवाया था। जब मिठाई वाले ने अपनी दुख गाथा भीगे हुए नेत्रों से सुनाई तो उसकी उत्कंठा तो शान्त हो गई किन्तु उसकी सहानुभूति और भी प्रबल हो गई होगी। दादी का चरित्र चित्रण भी स्वाभाविक रूप से हुआ है। मिठाई वाले के अतिरिक्त दूसरा चरित्र चित्रण नन्हें मुन्नों का हुआ है। उनकी तोतली वाणी एवं निश्छल व्यवहार के चित्रण में लेखक ने अत्यधिक सावधानी बरती है। बच्चे प्रायः फेरीवालों की ताक मे रहते हैं। जब कोई फेरीवाला उनकी गली में आता है तो वे उसको घेर लेते है। चीजों का भाव ताव करते है इछका दाम नया है, औल इछका, औल इछका और दौड़ कर घर पहुंचते हैं। वहां अपनी मां से पैसे लेकर फिर फेरीवाले को घेर लेते है। अपनी तोतलीवाणी में कह उठते हैं—अमा वो लेंगे और हम भी लेंगे ! यह लो पैछे ले लो, थिलौने दे दो, मुल्ली दे दो, यह दे दो, वह दे दो आदि।" इस कहानी में बच्चे खिलौने वाले, मुरली वाले एवं मिठाई वाले को घेर कर ऐसा ही कहते है ऐसे ही रमड़ते है। लेखक ने बच्चो के चरित्र चित्रण मे बालमनोविज्ञान का अच्छा परिचय दिया है। इस चरित्र चित्रण में स्वाभाविकता सबलता, प्रभाव एवं औचित्य का पूरा ध्यान रखा गया है। प्रायः ऐसा प्रतीत होता है कि बीस बच्चों में एक बच्चा ऐसा भी होता है कि उसके पास पैसे नही होते ऐसे अवसर पर सहृदय फेरीवाले उनको भी थोड़ी बहुत चीज मुफ्त में ही दे देते है। उनसे उनका छोटा मन या उदास चेहरा देखा नहीं जाता है। मुरली वाला भी उस बच्चे को मुरली मुफ्त देकर आगे चल पड़ता है जिसके पास पैसे नही थे। वह बीस लड़को को प्रसन्न और एक लड़के को अप्रसन्न कैसे देख सकता था। कोई भी सहृदय फेरीवाला यह नही देख सकता है फिर मुरली वाला इन प्रसन्न बच्चों को देखकर ही जीता था, वह मुफ्त मुरली क्यो नही दे देता। अतः चरित्र चित्रण की दृष्टि से यह कहानी अत्यन्त प्रभावशाली एवं श्रेष्ठ है।

कथोपकथन—इस कहानी के कथोपकथन स्वाभाविक, सशक्त एवं प्रभावशाली है। ये कथोपकथन कहानी के बीच-बीच मे बिखरे हुए है इसलिये कहानी में शिथिलता नही आने पाई है। ये कथोपकथन कथानक की बिखरी हुई घटनाओ को संगठित करके कथानक में गति उत्पन्न करते रहे है। इन कथोपकथनों से पात्रों का चरित्र चित्रण हुआ है। कहानीकार ने इन कथोपकथनो के द्वारा कथानक का विकास करके चरित्रो का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। कथोपकथनो का एक भी शब्द अथवा वाक्य निरर्थक नही है। कथोपकथनों के

कुछ स्थल तो ऐसे हैं कि यदि उनमें प्रयुक्त शब्दों के पर्यायवाची शब्द भी रख दिये जायँ तो वह आनन्द एवं प्रभाव ही नष्ट हो जाय जो इस समय मूल कथोप-कथनों में हैं। इस कथन का तात्पर्य स्पष्ट ही यह है कि कथोपकथन उत्तम कोटि के हैं और उन पर लेखक की अपनी मोहर है। कथोपकथनों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

विजय बाबू बोले—"तुम लोगों को झूँठ बोलने की आदत होती है। देते होंगे सभी को दो दो पैसे में, पर अहसान का बोझ मेरे ही ऊपर लाद रहे हो" मुरली वाला एक दम अप्रतिम हो उठा। बोला—"आपको क्या पता बाबूजी कि असली लागत क्या है। यह तो ग्राहकों का दस्तूर होता है कि दूकानदार चाहे हानि उठा कर चीज क्यों न बेचे, पर ग्राहक यही समझते हैं—दूकानदार मुझे लूट रहा है।"

विजय बाबू बोले—'अच्छा-अच्छा मुझे ज्यादा वक्त नहीं है जल्दी से दो निकाल दो।'

× × ×

दादी उठ कर कमरे में आकर बोली—"ए मिठाई वाले, इधर आना।" मिठाई वाला निकट आगया। बोला—"कितनी मिठाइयाँ ?.................... पैसे की सोलह देता हूँ।"

दादी बोली—"सोलह तो बहुत कम होती हैं, भला पच्चीस तो देते।"

मिठाई वाला—नही दादी, अधिक नही दे सकता। इतनी भी कैसे देता हूँ, यह अब मैं तुम्हें........... । खैर मैं अधिक नहीं दे सकूंगा।"

रोहिणी बोली—"दादी, फिर भी काफी सस्ती दे रहा है। चार पैसे की लेलो यह पैसे रहे।"

"तो चार की दे दो। अच्छा पच्चीस न सही; बीस ही दो। अरे हाँ मैं बूढ़ी हुई। मोलभाव अब मुझे ज्यादा करने आता नही" कहते हुए दादी के पोपले मुंह की जरा सी मुस्कराहट भी फूट निकली।

देशकाल—वाजपेयीजी ने इस कहानी में देशकाल का पूरा ध्यान रखा है। गली में फेरीवाले की आवाज सुनकर बच्चों का उसे घेर लेना, भावताव पूछना, पैसे लेने के लिए घर दौड़ना और फिर अच्छी से अच्छी मन पसंद चीज छाँट कर लेना बच्चों का स्वभाव है। वे जो चीजें खरीदते है उनका घर पर प्रदर्शन करते हैं। उनके माता-पिता चीज देख कर फेरी वाले की ईमानदारी और बेई-मानी पर टीका टिप्पणी करते हैं। बड़े आदमी फेरी वालों से चीजों का मोल

लोग इस दृष्टि से ही कहते हैं कि यह आदमी गांठ काट रहा है अतः फेरी वाले एवं बड़े व्यापारी की बातें नहीं ही व्यावहारिक जानकारी की भी इच्छा करती हैं। सहृदय फेरी वाला यदि बीस बच्चों को पैसे लेकर सौदा देता है तो एक दो बच्चों को थोड़ा बहुत मुफ्त भी दे ही देता है। प्रायः यह बात देखने में आती है कि बड़ी बूढ़ी स्त्री यदि फेरी वाले की किसी चीज का मोल तोल करती है तो अपनी बात-चीत का अजीब सा ढंग रखती है। यदि फेरी वाला एक पैसे की दस चीज देने की बात कहता है तो वह उसे बहुत कम कह कर पच्चीस मांगती है। पच्चीस नही तो बीस दो, अच्छा बीस नहीं तो पन्द्रह तो दो। क्यों ठगना ही है क्या ? वे यहां तक कह देती हैं। ये प्रायः ऐसी घटनाएं हैं जो प्रायः घटती रहती है, जिन्हें हम देखते एवं सुनते रहते हैं। इस कहानी में भी लेखक ने इन्हीं घटनाओं का समावेश किया है। दुखी व्यक्ति अपने दुख को अनेक प्रकार से हल्का किया करता है। यदि वह अपने दुख को हल्का न करे तो जीवित नहीं रह सकता है। मिठाई वाला भी अपने पुत्रों की मृत्यु के पश्चात् फेरी लगा कर बच्चों के झुण्ड में खिलौने, मुरली एवं मिठाई बेच कर उनकी बाल सुलभ क्रीड़ाओं को देखता है और अपने हृदय के दुख को हल्का करता है। वह समझता है कि उसके बच्चे भी जन्म लेकर इन्ही बच्चों मे आ मिले होंगे। इसलिए वह प्रसन्न चित्त बच्चों को देखकर अपने हृदय की व्यथा को हल्का करता रहता है। कहानीकार ने जिस वातावरण की सृष्टि की है वह स्वाभाविक एवं यथार्थ सा प्रतीत होता है इसलिए यह कहानी देश काल की दृष्टि से अनुपम है।

शैली—वर्णन शैली का कहानी मे महत्वपूर्ण स्थान होता है। यदि यह प्रवाहमयी, रोचक एवं प्रभावपूर्ण होती है तो कहानी का महत्व बहुत बढ़ जाता है। भगवतीप्रसादजी वाजपेयी की वर्णन शैली मे प्रसाद गुण पाया जाता है। उसमें व्यवहारिकता की मात्रा भी खूब रहती है। कथोपकथन मे इनकी वर्णन शैली हृदय के चुटकी लेने वाली बन जाती है। इस कहानी मे भी इनकी वर्णन शैली के गुण विद्यमान हैं। इन्होंने पात्रानुकूल भापा का प्रयोग करके इस कहानी का सौन्दर्य और भी बढ़ा दिया है। बच्चे अपनी तोतली बोली में खिलौने वाले से खिलौनों की ओर संकेत करके पूछते है—इछका दाम क्या है, और इछका और इछका ?" फेरी वाला आवाज लगा रहा है—"बच्चो को बहलाने वाला, खिलौने वाला। चुन्नू मुन्नू अपने खिलौने के सम्बन्ध में बातें कर रहे है—"मेला घोला कैछा छुन्दल ऐ।"

"श्रोल देखो, मेला आती कैछा छुन्दल ऐ" जब उनकी माँ पूछती है तो मुन्नू कहता है—"दो पैंछे में खिलौने वाला दे गया ए।" किन्तु जब कुछ गंभीर विचार व्यक्त करने होते हैं तो इस शैली का यह रूप हो जाता है—आपको क्या पता बाबूजी कि इनकी लागत क्या है। यह तो ग्राहकों का दस्तूर होता है कि दूकानदार चाहे हानि ही उठाकर चीज क्यों न बेचे, पर ग्राहक यही समझते हैं—दूकानदार मुझे लूट रहा है।" यदि इतिवृत्तात्मक स्थल होते हैं तो उनका वर्णन इस शैली में होता है—"सरदी के दिन थे। रोहिणी स्नान करके अपने मकान की छत पर चढ़ कर आजानुविलंबित केश राशि सुखा रही थी" वर्णनात्मक स्थलों पर शैली का यह रूप पाया जाता है—"मैं भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित आदमी था। मकान, व्यवसाय, गाड़ी, घोड़े, नौकर, चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे-छोटे दो बच्चे थे। मेरा वह सोने का संसार था............" भावात्मक स्थलों पर शैली में थोड़ी मधुरता आ जाती है—"मिलता भला क्या है! यही खाने भर को मिल जाता है। कभी नहीं भी मिलता है। पर हाँ सन्तोष, धीरज और कभी-कभी असीम सुख जरूर मिलता है और यही मैं चाहता हूँ।"

इस प्रकार से इस कहानी की वर्णनशैली रोचक, प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहमयी है। कहीं-कहीं चित्रोपमता भी आई है।

उद्देश्य—इस कहानी का उद्देश्य मानव की मनः स्थिति का विश्लेपरण करके उसके चरित्र की कमजोरियों एवं विशेषताओं की ओर ध्यान आकर्षित करना है। मानव वैभवशाली होकर भी आत्मा की भूख मिटाने के लिए गली गली चक्कर काट सकता है। इस विश्व में केवल रुपया पैसा ही सब कुछ नहीं है। रुपये पैसे की भूख मानव को इतना विह्वल नहीं बनाती है जितना हृदय की भूख बनाती है। मनुष्य अपनेश, सौहार्द, प्रेम और स्नेह के लिए जीवित रहता है। यदि ये सब कुछ नही तो उसके जीवन में कुछ भी नहीं है। वह धनाढ्य होकर भी कङ्गाल है। बच्चों का आह्लाद एवं व्यवहार निश्छल तथा आकर्षक होता है। मानवमन स्वतः ही इधर झुक जाता है—ये सब कुछ ऐसे शाश्वत तथ्य हैं जो मानव में क्रान्तिकारी परिवर्तन उपस्थित कर देते हैं। कहानीकार ने इन्हीं तथ्यों का विश्लेपरण अपनी इस कहानी में किया है। मिठाई वाले के चरित्र का मनोवैज्ञानिक विश्लेपरण करके मानव मात्र के हृदय का रहस्य खोला है।

प्रश्न—"कहानी जीवन की एक ही घटना पर प्रकाश डालती है तथा कहानी में संवेदना केन्द्रित होती है।" इस कथन के सम्बन्ध में अपने विचार

प्रकट कीजिये। तथा मिठाई वाला नामक कहानी की आलोचना उस एक घटना एवं संवेदना को ध्यान में रख कर कीजिए।

उत्तर—यह कथन निर्विवाद रूप से सत्य है कि कहानी जीवन की एक ही घटना पर प्रकाश डालती है तथा कहानी मे संवेदना केन्द्रित होती है। कहानी का आकार और प्रकार कुछ इस प्रकार का है कि उसमे अधिक करने की गुंजाइश ही नही है। कहानी का प्रधान कार्य जीवन के किसी एक अंग अथवा घटना का विश्लेषण करना होता है। इसलिए लेखक जिन चरित्रो की सृष्टि करता है वे उसकी शैली एवं उसका कथा विन्यास यह सब उसी एक अंग अथवा घटना को पुष्ट करते है। उपन्यास की तरह उसमे मानव जीवन का सम्पूर्ण एवं वृहत् रूप दिखाने का प्रयास नही किया जाता है और न उसमे उपन्यास की तरह सभी रसो का सम्मिश्रण होता है। कहानी किसी एक भाव तथा एक घटना को लेकर चलती है और उसी पर प्रकाश डालती है। इसीलिए कहानी में प्रायः गौण कथाएँ नही होती। आधुनिक कहानियों मे कथानक इतना स्पष्ट हो जाता है कि वह निर्दिष्ट सीमा मे पूर्ण हो जाता है। कहानी केवल एक घटना को लेकर ही आगे बढ़ती है। जहाँ यह घटना समाप्त होती है वही कहानी का भी अन्त हो जाता है। यही कारण है कि कहानियों, इतिहास तथा उपन्यासो के समान क्रमबद्ध घटनाएँ नही होती है। कहानीकार ऐसे पथ का पथिक है जिसमें इधर-उधर करने को छूट नही है। वह जो कुछ भी करता है, केवल मात्र उसी एक घटना पर प्रकाश डालने के लिए करता है।

मिठाई वाला नामक कहानी में जीवन की एक ही घटना पर प्रकाश डाला गया है। मिठाई वाला एक ऐसा व्यक्ति है जो सम्पन्न व्यक्ति था। उसकी पत्नी थी एवं दो बच्चे थे। उसकी पत्नी एवं दोनों बच्चों की मृत्यु होगई। उसके जीवन की सम्पूर्ण प्रसन्नता झुलस गई। वह नगर एव गली-गली फेरी लगा कर उछलते कूदते बच्चो में घूमता है। उन्हे भाँति-भाँति के खिलौने बेचने के मिस, मुरली बेचने के मिस और मिठाई बेचने के मिस एकत्रित करके उनकी मीठी-मीठी वाणी सुनता है, हंसी सुनाता है और उनके आनन पर बिखरी प्रसन्नता से अपने हृदय की पीड़ा को शान्त करता है। उसका अपना उद्यान सूख गया तो विश्व के उद्यान मे खिले फूलो का साक्षात्कार करके अपने हृदय के दुलार और अपनेश को बिखेरता है। यदि वह ऐसा नहीं करे तो घुट कर मर जाय। उसका विश्वास है कि उसके बच्चों ने कहीं अन्यत्र जन्म लिया होगा और बहुत सम्भव

है कि इन्हीं वच्चों में वे भी खेल रहे होंगे। उसकी यह भावना ही उसे इन वच्चों में लाती है। यहाँ ही आकर उसे शान्ति मिलती है। उसके जीवन में एक दुर्घटना घटी थी। उसके वच्चों की मृत्यु होगई थी उन्हीं वच्चों की तलाश में वह इधर उधर फिरता रहता है। कभी खिलौने वाला वनता है, कभी मुरली वाला वनता है और कभी मिठाई वाला वनता है। विजय वावू से उसे वहस करनी पड़ती है। रोहिणी की दादी से वार्तालाप करना पड़ता है—यह सव कथानक को अग्रसर करने वाली घटनाएँ हैं। प्रमुख घटना तो मिठाई वाले की आत्मा की वह वेदना है जो उसके वच्चों की मृत्यु के कारण उसके हृदय में जागरित हो रही थी ये सव उस वेदना को शान्त करने के तरीके है। वच्चों को वह नई से नई अच्छी से अच्छी चीज कम से कम पैसों में वेच कर संतुष्ट होता है। वच्चे उसको घेर लेते हैं। अपनी तोतली वाणी से उसको निहाल कर देते हैं। अपने नन्हे-नन्हे हाथ उसके हाथ पर टिकाते हैं। वस इसी में वह सव कुछ पा लेता है। इस प्रकार इस कहानी में जीवन की एक ही घटना पर प्रकाश डाला गया है। वह घटना यह कि अपने वच्चों की मृत्यु के दुख को वह किस प्रकार भूल जाना चाहता है किस प्रकार वह अन्य वच्चों में अपने वच्चों की कल्पना करके उनके आह्लाद से अपने दुख को हल्का करता है।

दूसरा प्रश्न है कहानी में सवेदना केन्द्रित होने का। यह वात निश्चित है कि कहानी की कथावस्तु वहुत ही सीमित होती है। उपन्यास की भाँति अनेक कथायें कहानी में नहीं चलतीं क्योंकि कहानी का आकार एवं प्रकार ही कुछ इस प्रकार का है कि उसमें अनेक कथाएं हो ही नहीं सकतीं। इसलिए कहानीकार को संवेदना केन्द्रित करनी पड़ती है। यह संवेदना प्रायः उस स्थल पर केन्द्रित होती है जहां कहानी अपनी चरम सीमा पर पहुँचती है। इस मिठाई वाला कहानी में भी संवेदना केन्द्रित है और यह संवेदना मिठाई वाले के इस कथन में केन्द्रित है—मैं भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित आदमी था। मकान, व्यवसाय; गाड़ी-घोड़े, नौकर-चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी, छोटे छोटे वच्चे भी थे। मेरा वह सोने का संसार था। वाहर सम्पत्ति का वैभव था, भीतर सांसारिक सुख था। स्त्री सुन्दर थी, मेरा प्राण थी। वच्चे ऐसे सुन्दर थे जैसे सोने के सजीव खिलौने। उनकी अठकेलियों के मारे घर में कोलाहल मचा रहता था। समय की गति विधाता की लीला! अव कोई नहीं है दादी! प्राण निकाले नही निकले। इसलिए अपने उन वच्चों की खोज मे निकला हूँ। वे सव अन्त में होंगे तो यहीं

कहीं। आखिर कहीं न कहीं जन्में ही होंगे। उस तरह रहता तो घुल घुल कर मरता। इस तरह संतोष के साथ मरूँगा। इस तरह के जीवन में कभी कभी अपने उन बच्चों की एक झलक सी मिल जाती है। ऐसा जान पड़ता है जैसे वे इन्हीं में उछल उछल कर हँस खेल रहे हैं। पैसों की कमी थोड़े ही है। आपकी दया से पैसे तो काफी है। जो नहीं है, इस तरह उसी को पा जाता हूँ।"

इस कथन को पढ़ते ही पाठक के हृदय में मिठाई वाले के दुर्भाग्य के प्रति सहानुभूति उत्पन्न हुए बिना नहीं रहती। मिठाई वाले के दुख पूर्ण जीवन का एक चित्र सा अंकित हो जाता है। लेखक ने इस स्थल पर मिठाई वाले का खिलौने मुरली एवं मिठाई बेचने का रहस्य खोला है। कहानी यहाँ ही चरम सीमा पर पहुँचती है और पाठकों के हृदय पर इस कहानी का गहरा प्रभाव पड़ता है। पाठक मिठाई वाले का दुख सुनकर द्रवित हो जाते है। इस प्रकार से मिठाई वाला कहानी मे जीवन की एक ही घटना पर प्रकाश डाला गया है।

प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए—

(क) "मिलता भला क्या है ? यही खाने भर का मिल जाता है और यही मैं चाहता भी हूं।"

उत्तर—ये पक्तियां भगवती चरण बाजपेयी कृत मिठाई वाला कहानी में से उधृत की गई है। रोहिणी ने मिठाई वाले से पूछा था—इतनी अच्छी वस्तुयें इतनी सस्ती बेचने पर उसके पास नफे की दृष्टि से क्या बचता होगा। मिठाई वाला रोहिणी के प्रश्न का उत्तर देता हुआ कह रहा है—

मुझे इन वस्तुओ के बेचने से बहुत कम लाभ होता है। यों समझ लो कि मेरे खाने के पैसे बच जाते है। खाने भर के पैसे प्रत्येक बार बचते हों यह बात भी नही है। कभी कभी तो कुछ भी नहीं बच पाता है। ऐसा भी होता है कि मूल मे भी घ.टा लग जाता है। मुझे इन वस्तुओ को बच्चों में बेचने से संतोष, धैर्य तथा कभी कभी अत्यधिक प्रसन्नता अवश्य मिलती है। मैं इसी संतोष, धैर्य एवं सुख के लिए अपनी वस्तुए बच्चों में बेचा करता हूँ। मैं मुनाफा कमाने के लिए ये वस्तुए नही बेचता हूँ। मुझे सुख, संतोप तथा धैर्य की आवश्यकता है जो इस प्रकार इन बच्चो में आकर उनको प्रसन्न करने की भांति भाति की वस्तुए बेचने पर मुझे मिल जाता है। मिठाई वाले के पुत्रों की असमय में ही मृत्यु हो गई थी इसलिए वह अत्यधिक दुखी हो गया था। उन बच्चों में वह उन्ही बच्चो की आत्मा के दर्शन करता है और एक विशेष प्रकार का संतोष एवं सुख प्राप्त करता है।

जीजी

लेखिका-चन्द्रकिरण सौनरेक्सा

प्रश्न—कहानीकार चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की विशेषताएँ बताकर जीजी नामक कहानी का सारांश लिखिए।

उत्तर—कहानीकार चन्द्रकिरण सौनरेक्सा नवीन कहानी लेखिकाओं में प्रभावशाली लेखिका हैं। आप नवीन सभ्यता में रंगे हुए व्यक्तियों के चरित्र की कमियों को खोलकर रखने में अधिक सफल होती हैं। आप भारतीय एवं पाश्चात्य सभ्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन करने की सामग्री का चयन बहुत ही सतर्कता से करती हैं। आपकी कहानियों में यथार्थवाद एवं आदर्शवाद का अच्छा विश्लेषण मिलता है। आपकी कहानियों के पात्र समाज के चलते फिरते व्यक्तियों के प्रतीक हुआ करते हैं। आपको समाज में फैली रूढ़ियों एवं कुरीतियों से कोई सहानुभूति नहीं है किन्तु कोई उपयोगी प्रथा को रूढ़ि समझ कर त्यागना भी आपका स्वभाव नहीं है। यही कारण है कि आपकी कहानियों में संयम एवं निष्ठा के सुन्दर वर्णन मिलते हैं। आप केवल मात्र शिक्षा को ही महत्व नहीं देतीं, शिक्षा के साथ उत्तम संस्कारों को बनाने पर बल देती हैं। आप पात्रों का चरित्र चित्रण बहुत ही कुशलता से करती हैं। इनकी भाषा में प्रवाह एवं प्रभाव दोनों ही पर्याप्त मात्रा में रहते है। आपकी कहानियों में मनोवैज्ञानिक वर्णन कम एवं स्थूल घटनाओं का चित्रण अधिक मिलता है, किन्तु जहाँ कही आप मानव मन का विश्लेषण करती हैं वहाँ कलम ही तोड़ देती है। आप की कहानियों में व्यंग का पुट भी मिलता है किन्तु उस व्यंग में बारीकी नहीं होती। आप की भाषा शैली चलती हुई है रोचक है, एवं व्याख्यात्मक है। जिसमें मुहावरों का भी पुट रहता है।

कहानी का सारांश—गिरीश की पत्नी सुरेखा पूर्णतः पाश्चात्य सभ्यता में रंगी हुई स्त्री है। उसे घर के काम से अधिक अपनी पोजीशन का ध्यान है। लक्ष्मी उसकी ननद है। वह भारतीय संस्कृति को अत्यधिक महत्व देती है। वह विवाह के पश्चात् शीघ्र ही विधवा हो गई थी। इसलिए अपने मायके में रहती थी। घर का काम काज ही सम्हालती थी। अच्छवाई से भोजन बनाना, शाक भाजी की सुन्दर व्यवस्था करना, गाय, साँड़ को सम्हालना, बच्चों को सम्हालना, स्वयं गिरीश एवं सुरेखा के चाय-पानी एवं नाश्ते का प्रबन्ध करना, यह सब कुछ वह अकेली करती थी। घर में मिश्राणी थी एवं नौकर चाकर भी थे किन्तु वह

किसी के भरोसे कोई काम नहीं छोड़ती थी। इसलिए घर का प्रबन्ध बहुत अच्छे रूप से चल रहा था। सुरेखा को लक्ष्मी गंवार मालूम होती थी। लक्ष्मी के साथ ही लीला को भी गंवार समझती थी। सुरेखा का सारा समय बनाव शृंगार में सोने बैठने मे ही जाता था। पूजा पाठ और अछ्वाई तो उसे छू तक नहीं गई थी। किन्तु लक्ष्मी पूजा-पाठ एवं अछ्वाई का जीवन ही जीती थी। वह प्रत्येक कार्य में मर्यादा का विचार करती थी, घर की प्रतिष्ठा की बात सोचती थी, किन्तु सुरेखा तितली टाइप की स्त्री थी। नौकरों के इशारे पर नाचने वाली पढ़ी लिखी बुद्धू थी। जब उसने मिश्राणी के बहकावे में आकर इधर उधर की अन्ट शन्ट बाते की तथा श्रद्धाहीन व्यवहार किया तो लक्ष्मी अपने सुसराल चली गई।

लक्ष्मी के जाते ही सारा घर भूतो का डेरा बन गया। सुरेखा ने नौकरों के भरोसे घर छोड़ दिया, इसलिए प्रत्येक वस्तु की सह समाप्त हो गई। अपने कटु स्वभाव के कारण नौकरो से दुर्व्यवहार करने लगी, इसलिए वे अपना काम छोड़ छोड़ कर जाने लगे और घर गृहस्थी का पूरा भार उस पर पड़ने लगा। उस भार को उठाने की न तो उसमे सामर्थ्य थी और न बुद्धि। बच्चे ठण्डी रोटियों का कलेवा करने लगे। वह साबूदाने की खीर बनाने बैठी तो साबूदाने पैंदे में ही चिपट गये। कढ़ाई में पूरियां उछल उछल कर उसे जलाने लगी। वह पुस्तकों के सहारे शाक सब्जी बनाना सीखने लगी, किन्तु वह व्यवहारिक ज्ञान उसमें कैसे आ सकता था जो लक्ष्मी में उसके संस्कारों के कारण आया था। इसलिए गाय जब बीमार हुई तो उसने ब्रांडी को गर्म दवा के रूप मे गाय को दे दी। गाय की मृत्यु की दुर्घटना घटते घटते बची। उससे न बच्चों की सम्हाल हुई, न गिरीश की सम्हाल हुई और न घर की सम्हाल हुई। भोजन बनाने बैठी तो उसमें इतनी खटाई डाल दी कि गिरीश एक ग्रास तक नही खा सका। कुछ ही दिनों में घर की स्थिति पूर्णतया बिगड़ गई। उससे हाथ मे छाले पड़ गये गरम घी उस पर आ पड़ा कपड़े ऐसे गन्दे हो गये कि उसने कभी ऐसे गन्दे कपड़े नही पहने होगे। गिरीश दुखी था। वह स्वयं दुखी थी, नौकर जो बचे वे दुखी थे। घर की यह दुर्दशा गिरीश से नही देखी गई। इसलिए वह लक्ष्मी को मनाकर लाने के लिए रेलगाड़ी मे बैठ कर लक्ष्मी के सुसराल की ओर चल पड़ा।

प्रश्न—कहानी कला की दृष्टि से जीजी नामक कहानी की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—जीजी नामक कहानी की लेखिका चन्द्रकिरण सौनेरक्सा है। आप

नवीन कहानी लेखिकाओं में प्रभावशाली लेखिका हैं। आपकी कहानियों में जीवन का चित्र अंकित रहता है। यह कहानी भी इनकी उत्तम कहानी है। इसमें इन्होंने पाश्चात्य सभ्यता में रंगी हुई सुरेखा के व्यक्तित्व की कमियों एवं लक्ष्मी के चरित्र की विशेपताओं का सफल चित्रण किया है। कहानी के सभी आवश्यक तत्वों का समावेश इस कहानी में हुआ है। अतः अत्र इसका विश्लेपण कहानी कला की दृष्टि से किया जाता है।

कथावस्तु—लेखिका ने जीजी कहानी की कथावस्तु का चयन करने में योग्यता से काम लिया है। आधुनिक युग में पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव न केवल पुरुषों पर ही पड़ा है स्त्रियों पर भी घनी मात्रा में पड़ा है। उस प्रभाव का कुपरिणाम यह हुआ कि स्त्रियों में घर के कामों में अरुचि हो गई है एवं टीपटाप पर ध्यान देने का स्वभाव बन गया है। उनसे न घर की सम्हाल हो सकती है और न नौकर चाकरों से काम लिया जा सकता है। वे स्वयं किसी काम को योग्यता से करना जानती ही नहीं और जो व्यक्ति योग्यता से यह सब कुछ कर सकता है उसकी कद्र उनसे होती नहीं है। उनका ज्ञान व्यवहारिक न होकर केवल पुस्तकीय होता है जिससे घर गृहस्थी का काम सुचारु रूप से चल सकना सम्भव नही होता है। पाश्चात्य सभ्यता से आक्रान्त स्त्रियों में धर्म-कर्म एवं पाठ पूजा की प्रवृत्ति तो होती ही नही। प्रत्युत जो स्त्री ऐसा करती है उसकी मजाक बनाना उनका स्वभाव हो जाता हैं। शिक्षित घरानों से अच्छवाई नाम की चीज शनैः शनैः उठती ही जा रही है। धर्म उनके लिए वेवकूफी का नाम है अथवा रूढ़िवाद है। इन्हे ऐडीकेट प्रिय है। बनाव शृङ्गार पसन्द है। किसी प्रचीन प्रथा को मानना जैसे वे अपना अपमान समझती हैं। घर में मेह-मान आये बैठे रहें और स्वयं पिक्चर, गार्डन एवं तफरी के लिए निकल पड़ें यह तो उनके लिए मामूली सी घटना है। उनसे स्वयं के बच्चे की ही सम्हाल नहीं हो पाती है। उनमें अहं इतना समा जाता है कि वे अपने में प्रत्येक कार्य करने की सामर्थ्य एवं बुद्धि समझती हैं किन्तु जब उन्हें वस्तु स्थिति का सामना करना पड़ता है तो चीं बोल जाती है। इस कहानी की कथावस्तु इन्हीं मुद्दों को ले कर लिखी गई है। सुरेखा को अपने पर बहुत अभिमान है किन्तु लक्ष्मी के जाते ही उसका खोखला बखौल उठता है। घर की सारी सह बरकत जाती रहती है। प्रत्येक काम बिगड़ने लगता है। वह स्वयं दुखी हो जाती है तथा उससे अन्य व्यक्ति हो दुखी जाते हैं। अन्त मे लक्ष्मी को वापिस लाने के अतिरिक्त और कोई

चारा नही रह जाता है। इस प्रकार इस कहानी की कथावस्तु जीवन के बहुत समीप है तथा प्रभावशाली है। इसमें उन्ही घटनाओं का समावेश किया गया है जो प्रायः समाज मे घटती रहती है अथवा घट सकती हैं। अतः इस कथानक में यथार्थवाद का पूर्ण पुट है।

पात्र—इस कहानी के पात्रो का चरित्र-चित्रण प्रभावशाली एवं वास्तविक है। इस कहानी के प्रमुख रूप से दो ही पात्र है—लक्ष्मी (जीजी) एवं सुरेखा। लेखिका ने दोनों के चरित्रो का ऐसा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है कि उनमें वास्तविकता की पूरी झलक मिल जाती है। सुरेखा एवं लक्ष्मी क्रमशः पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कृति की प्रतीक है। लक्ष्मी का जीवन बहुत सादा है। उसमें व्यवहारिक ज्ञान भी है, निष्ठा भी है, योग्यता भी है धर्म कर्म में रुचि एवं विश्वास भी है तथा घर गृहस्थी सम्हालने की सामर्थ्य भी है। उसका चरित्र पूर्णतया भारतीय है। सुरेखा पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित एक ऐसी नारी है, जिसमे केवल मात्र ऊपरी टीपटाप है वह घर गृहस्थी नही सम्हाल सकती; नौकर चाकरो को नहीं दाब सकती। आये हुए अतिथियो का समुचित आदर-सत्कार नही कर सकती। स्वयं अपने को नही सम्हाल सकती फिर भी अभिमान इतना रखती है और अपने बारे मे यह सोचती है कि सब प्रकार से समर्थ है तथा सब कुछ करने की योग्यता रखती है। वह किसी पर किसी काम के लिए निर्भर नही रह सकती है। दूसरे चाहे उस पर निर्भर रहें। उसके मुँह पर कोई लाज शर्म नहीं है। उसके व्यवहार मे कोई आकर्षण नही है। धर्म एवं पूजा पाठ को तो वह निरर्थक वस्तु समझती है। उसमे इतनी भी बुद्धि नही है कि काम के आदमी को तो पहिचान सके। इसलिए लक्ष्मी का अपमान कर देती है और उस विपत्ति को अपने पर बुला लेती है जो लक्ष्मी के कारण उस पर नही आ रही थी। लक्ष्मी के रुष्ट हो कर जाते ही उसका खोखला व्यक्तित्व बौखला उठता है और उसका अहं धराशायी हो जाता है। उसे तीन पैसे के तो लक्षण नही है और मिजाज आसमान में रखती है। एक लक्ष्मी है कि जगह की जगह काम कर देती है और कोई काम नौकर चाकरो के भरोसे पर नही छोड़ती। सब उससे दबते है डरते है और श्रद्धा से नतमस्तक होते है। एक सुरेखा है कि उससे अपना शरीर ही नही सम्हलता। वह भोजन नही बना सकती, नौकर चाकरो से अच्छा व्यवहार नहीं कर सकती, घर की चीजो को सम्हाल कर नही रख सकती। हाथ रोक कर

खर्च नहीं कर सकती। यह नहीं समझ सकती कि ब्रांडी भी गर्म होती अवश्य है किन्तु गाय को देने की नहीं होती। गाय को गुड़ दिया जाता है। वही उसमें गर्मी उत्पन्न करने के लिए अच्छी दवा है। गाय को बांट में क्या-क्या और कितनी कितनी मात्रा में दिया जाता है यह उसने उस समय भी नहीं सीखा, जब उसके घर में गाय थी और उसे रोज बांट लगता था। जब उसे देना पड़ा तो पुस्तक में से नुस्खा उतारा जो भी ऐसा अटपटा कि गाय को एक बार में वह मात्रा दे दी जाय तो गाय ही समाप्त हो जाए। इसका अर्थ यह हुआ कि सुरेखा केवल मात्र नाक भौं सिकोड़ कर बात करना जानती थी, व्यवहारिक ज्ञान बिल्कुल नहीं रखती थी। जिस स्त्री को यह तक पता नहीं कि अमुक मौसम में कौन-कौन सी शाक सब्जियाँ आती हैं तथा वे किस-किस प्रकार से बनती हैं, वह क्या गृहणी कहलाने के योग्य है ? लेखिका ने लक्ष्मी एवं सुरेखा के चरित्रों का चित्रण करके पाश्चात्य सभ्यता का पोपलापन एवं भारतीय सभ्यता का ठोसपन दिखाने का सफल प्रयास किया है। गिरीश एवं लीला के चरित्रों का विकास नहीं हुआ है। मिश्राणी का चरित्र व्यक्तिगत, वर्ग गत दोनों विशेपताओं को लिए हुए है उसके चरित्र मे समुचित विकास है। इन्दु की सृष्टि केवल लक्ष्मी एवं सुरेखा के चरित्रों का विकास करने एवं उनके चित्रण के हेतु ही की गई है। नौकरों के चरित्रों में उनकी कोटि की विशेपता है। लेखिका की पात्र कल्पना सशक्त एवं प्रभावशाली है।

कथोपकथन कथोपकथनों की दृष्टि से यह कहानी बहुत सुन्दर है। लेखिका ने इन कथोपकथनों द्वारा पात्रों का चरित्र-चित्रण तो किया ही है साथ ही उनका तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया है। कहानी का आरम्भ ही कथोपकथनों द्वारा किया गया है। ये कथोपकथन कथानक को अग्रसर करके उसमें गति बनाये रखने में पर्याप्त योग देते रहे हैं। इस कहानी में लेखिका ने कथोपकथनों को भी मर्म स्पर्शी एवं प्रभाववान बनाया है। इस कहानी में कथोपकथनों की बहुलता नहीं है। पात्रों के मनोविकारों के आविर्भाव एवं तिरोभाव के अनुसार ही कथोपकथनों में भी आरोह एवं अवरोह होता रहा है। लेखिका ने इन कथोपकथनों के द्वारा पात्रों की मनः स्थिति को स्पष्ट किया है। उनके चरित्र का विश्लेपण किया है। ये कथोपकथन कथानक की बिखरी हुई घटनाओं को संगठित करके कथावस्तु को आगे बढ़ाते रहे हैं। इस कहानी मे जाल की भाँति बिखरे हुए छोटे-छोटे कथोपकथन, परिस्थिति, मनोदशा एवं व्यक्तियो की कमियों, मान्यताओं

एवं विश्वासों का सुन्दर तथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने में सफल हुए है। मनोभावो को स्पष्ट करने वाले तथा नारियों का विश्लेषण करने वाले ये कथोपकथन इस प्रकार उद्धृत किए जा सकते हैं—

"यही है ?" आश्चर्य से इन्दु ने कहा।

"हां" अनेला से गर्दन हिला कर उत्तर दिया—

"अरे !" इन्दु ने एक टुकड़ा समोसे का मुँह में रखते-रखते कहा—"अच्छा हुआ सुरेखा तुमने मुझे बता दिया, नही सच जानो मैं कहने वाली थी कि मिश्रानी जी समोसे तो तुम बढ़िया बना लेती हो।"

"ऊँह तो क्या होता"—"इन्हे कोई देखने वाला इससे अधिक समझ ही क्या सकता है ? दिन भर झाड़ू हाथ में लिए सफाई में जुटी रहती है। पोजीशन का ख्याल तो इन्हे कतई है ही नही, मुझे तो बड़ी शरम लगती है, इन्हें अपनी ननद बताते।"

× × ×

"तेरे रंग ढंग तो इन्हे काहे को पसद आते होगे।" इन्दु ने मुस्कराकर पूछा—

"न आवे मेरी बला से। यहाँ परवाह कौन करता है। मैं तो वही आठ बजे सोकर उठती हूँ। तब तक सब काम हुआ पाती हूँ.......... ।"

देशकाल—देशकाल की दृष्टि से भी यह कहानी सफल ही कही जायगी। पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव भारतीय समाज पर काफी पड़ा है तथा पड़ता जा रहा है। उस विदेशीय सभ्यता में कितना खोखलापन है कि सिवा टीप टाप के और कुछ है ही नही। सुरेखा के चरित्र से यह बात पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है। स्त्री शिक्षा ग्रहण करके विदुषी एवं सफल गृहिणी नही बनती प्रत्युत आलसी एवं निठल्ली बनती जा रही है। उसमे बड़ो के प्रति सम्मान की भावना का लोप होता जा रहा है। उसका सारा ज्ञान केवल पुस्तकीय है। क्रियात्मक रूप से वह प्रत्येक घरेलू कार्य से अनभिज्ञ रहती जा रही है। पुरानी स्त्रियाँ जो देख सुन और करके सब कुछ जान जाती थी, उनको आज की पढ़ी लिखी स्त्रियां मनन करके भी नही जान पाती हैं। इन्ही सब तथ्यों एवं घटनाओं का वर्णन लेखिका ने इस जीजी कहानी मे किया है। पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ स्वयं सब काम काज नही कर सकती है और यदि परिवार का कोई सदस्य घर के उन कामों को—झाड़ू लगाना, भोजन बनाना, पूजा पाठ करना, अछवाई रखना, आदि करता है तो वे उन्हे पुरानी लकीर की फकीर कहकर उनकी उपेक्षा करती है। कहानी लेखिका ने जिस वातावरण की सृष्टि इस कहानी में की है वह वास्तविक है। हम अपने

इर्द गिर्द इन घटनाओं को सुनते अथवा देखते रहते हैं जो इस कहानी में वर्णित की गई है। इसलिए हमें सुरेखा एवं लक्ष्मी के चरित्र चित्रणों से वास्तविकता का आभास मिलता है।

शैली—इस कहानी की वर्णन शैली-रोचक, आकर्षक, प्रवाहमयी तथा प्रभावोत्पादक है। लेखिका को मानव हृदय की भावनाओं को विश्लेषण करने में आशातीत सफलता मिली है। लेखिका की इस कहानी में वर्णनशक्ति तथा विवरण शक्ति दोनों का सुन्दर सामंजस्य हुआ है। भाषा सजीव एवं शक्तिशाली है। लेखिका की भाषा में मुहावरों का भी प्रयोग उचित मात्रा में पाया जाता है। इस कहानी में भी बकिया ताऊ, मुँह बिचकाना, खेत की मूली होना, मर्ज की दवा होना, सन्न रह जाना, छुई मुई होना, पैसे की गर्मी होना, अक्लमंद की दुम होना, जलती कढ़ाई का बेंगन होना, आदि अनेक मुहावरों का प्रयोग यथास्थान करके भाषा में सफलता लाई गई है। कहीं-कहीं पर पात्रानुकूल भाषा का भी प्रयोग हुआ है।

उद्देश्य—इस कहानी का उद्देश्य आज की शिक्षित नारी के व्यक्तित्व की कमियों की ओर ध्यान आकर्षित करना तो है ही पर साथ ही लेखिका ने भारतीय एवं पाश्चात्य सभ्यता, गुणों एवं अवगुणों का विवेचन करना उचित समझा है। भारतीय नारी मे अनेक गुण हैं। इन्ही गुणों के कारण वह गृह लक्ष्मी कही जाती है, किन्तु आधुनिक शिक्षा का उस पर प्रतिकूल प्रभाव हो रहा है। वह उन गुणों को खोती जा रही है। अन्ध विश्वास एवं कुरीतियों से यदि घृणा की जाय तो कोई बुरी बात नहीं है किन्तु प्रत्येक पुरानी बात को रूढ़ि कहकर त्याग देना भी कोई अच्छी आदत नही है। शिक्षा का महत्व इसमें है कि ज्ञान की वृद्धि हो। आचार विचारों में शुद्धता आवे। जिस देश में व्यक्ति उत्पन्न हुआ है उसी की सभ्यता एव संस्कृति का उसे ज्ञान हो जाए, किन्तु भारत में आधुनिक शिक्षा का जो परिणाम देखने में आता है वह विचित्र ही है। यह शिक्षा मनुष्य में सद्-गुणों का समावेश करने में पूर्णतया असफल रही है। इस शिक्षा के ग्रहण करने से ऊपरी टीप टाप, शान शौकत एवं घरेलू काम धन्धों की अपेक्षा करने की ही आदत बनती है। सादा जीवन जीकर आचार विचार में शुद्धता लाने की कोई प्रेरणा इसमें नहीं मिलती। इसलिए आधुनिक शिक्षा प्राप्त स्त्रियाँ सफलता पूर्वक घर गृहस्थी चलाने मे पिछड़ी जा रही हैं। वे हठी एवं अकुशल बनती जा रही हैं, जिससे उनको स्वयं को कष्ट उठाना पड़ रहा है तथा उन पर निर्भर रहने वाले व्यक्तियों को कष्ट उठाना पड़ रहा है। लेखिका ने यह स्पष्ट संकेत किया है

कि आधुनिक शिक्षित नारी का ज्ञान केवल मात्र पुस्तकीय ज्ञान होता है, जिसके बल बूते पर गृहस्थी नहीं चल सकती है। आज समाज में जो पारिवारिक कलह कष्ट एवं विपत्तियां बढ़ रही हैं, उनका बहुत कुछ कारण आज की नारी की आधुनिक शिक्षा का कुप्रभाव ही है। इस शिक्षा से उसमें सहिष्णुता, सादगी एवं कर्त्तव्यपालन की भावना का लोप हो रहा है। उसकी घर-गृहस्थी सम्हालने की सामर्थ्य निर्बल होती जा रही है। अतः लेखिका ने एक निश्चित उद्देश्य को सामने रखकर यह कहानी लिखी है और उसे अपने इस उद्देश्य में पूरी सफलता मिली है।

यह कहानी कला की दृष्टि से आंकी जाने पर पूर्ण सफलता ठहर है।

प्रश्न—जीजी कहानी के शीर्षक के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर—शीर्षक का कहानी में बहुत महत्व होता है। इसलिए प्रत्येक कहानीकार अपनी कहानी का शीर्षक रखने मे बहुत सतर्क रहता है। शीर्षक यदि आकर्षक एवं तथ्यपूर्ण होता है तो कहानी का महत्व बढ़ जाता है और उसकी सुन्दरता मे चार चांद लग जाते है। जीजी कहानी के शीर्षक पर विचार करते समय भी हमे यही देखना होगा कि यह शीर्षक सार्थक है अथवा नही। शीर्षक की सार्थकता इसी मे है कि उससे कहानी मे आकर्षण तो आवे ही साथ ही उसमें कोई तथ्य भी निहित हो। गिरीश बाबू की बडा विधवा बहिन लक्ष्मी घर भर में जीजी कहलाती है। परिवार के व्यक्ति एवं नौकर चाकर सब उसे जीजी कहते हैं। वह बड़ी कार्य कुशल स्त्री है। गिरीश बाबू के घर का पूरा काम उसने सम्हाल रखा है। वह नौकरो के भरोसे कोई काम नहीं छोड़ती। सब कामों की स्वयं देख भाल करती है। नौकर चाकर नौकर चाकरो की जगह है वह उनको घर पर आने नही देती। यदि कोई गलती करता है तो यह तत्काल उसका कान ऐंठ देती है। घर में रसोई का काम करने वाली मिश्रानी है किन्तु रसोई घर का बहुत कुछ काम वह स्वयं करती है। रसोई घर में पूरी तरह से अछवाई रखती है। स्वयं पूजन पाठ करती है और आये हुए अतिथि का पूरा सत्कार करती है। गिरीश बाबू की पूरी सम्हाल रखती है और उसके स्वभावानुसार उसके भोजन एवं चाय पानी का प्रबन्ध करती है। बच्चो के नाश्ते का उचित प्रबन्ध करके उनको बाजारू गन्दी चीजो को खाने की बुरी आदत से बचाती है। अपनी छोटी बहिन लीला को घर गृहस्थी का पूरा काम सिखाती है और सुरेखा को कार्यकुशल बनने की प्रेरणा देती है। जब तक वह गिरीश बाबू के घर मे रहती है गिरीश

बाबू की पत्नी सुरेखा को यह भी पता नहीं लगता है कि सूरज किधर से निकलता है किन्तु जब वह सुरेखा के दुर्व्यवहार से दुखी होकर अपने सुसराल चली जाती है तो गिरीश बाबू के घर की सारी व्यवस्था लड़खड़ा जाती है। कभी लकड़ियां बीत जाती हैं तो कभी घी खत्म हो जाता है। गाय मरणासन्न हो जाती है। बच्चों को नाश्ता नहीं मिलता और गिरीश बाबू का चाय पानी बेस्वाद हो जाता है। नौकर नौकरी छोड़ छोड़ कर चलने लगते हैं। स्वयं सुरेखा कढ़ाई के घी के छींटों से जल जाती है। उसकी पोशाक महान् गन्दी रहने लगती है। कभी कोई बीमार पड़ने लगता है तो कोई भुँझलाने लगता है। कोई भूखा ही रह जाता है तो कोई कच्ची पक्की चीजें खाकर दिन काटने लगता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जीजी के जाते ही सबको दिन में तारे दीख जाते हैं। वह क्या चली गई मानों घर की बरकत ही चली गई। इसलिए इस कहानी की केन्द्र बिन्दु जीजी है वह है तो घर में सुख शान्ति है और वह नहीं है तो घर भूतों का डेरा बन जाता है। उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली है। अतः लेखिका ने इसी का महत्व बतलाने के लिए इस कहानी का नाम जीजी रखा है। इस प्रकार से कहानी का नामकरण प्रमुख पात्र के नाम पर हुआ है।

इस कहानी का दूसरा शीर्षक इतना महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित हो ही नहीं सकता था क्योंकि न तो कोई दूसरा चरित्र इतना प्रभावशाली है और न कोई ऐसी घटना है जिसके आधार पर कहानी का नामकरण किया जाता लक्ष्मी जीजी ही इस कहानी के सम्पूर्ण वातावरण पर छाई हुई है। वह जब गिरीश बाबू के घर पर थी; घर स्वर्ग बना हुआ था। वह उनके घर से चली गई; घर की सारी व्यवस्था बिगड़ गई और हाय हाय मच गई। इसीलिए गिरीश बाबू उनको मना कर लाने के लिए उसके सुसराल की ओर चल पड़े। कहानी का अन्त यहीं हुआ है। अतः कहानी का प्रस्तुत शीर्षक जीजी पूर्णतया सार्थक है।

प्रश्न—निम्नलिखित गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

(क) "कुछ लोगों को दूसरों की बुराई करने में मजा आता है। उस बुराई भलाई में अपना निजी स्वार्थ चाहे न भी हो, किन्तु बिना इधर की उधर लगाए जैसे उनकी रोटी हजम नहीं होती।"

ये पंक्तियाँ चन्द्रकिरण सोनरेक्सा कृत जीजी कहानी से उद्धृत की गई हैं। कहानी लेखिका ने इन पंक्तियों मे कुछ व्यक्तियों की विशेष मनोवृत्ति का विश्लेषण किया है। वह कहती है कि कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं कि उनका स्वभाव ही दूसरों

की बुराई करने का बन जाता है। दूसरों की बुराई करने में उन्हें आनन्द आता है इसलिए वे अवश्य बुराई करते हैं। कभी-कभी तो बुराई करने वाले व्यक्ति का इस बुराई में थोड़ा बहुत स्वार्थ होता है और कभी उसका किसी भी प्रकार का स्वार्थ नहीं होता फिर भी वह बुराई करता है। दूसरों की बुराई करने की उसकी आदत बन जाती है। यह आदत उसके जीवन में इतनी घुलमिल जाती है कि यदि वह किसी दिन किसी की भाव बे भाव बुराई न करे तो उसे चैन नहीं पड़े बुराई करने में उसका जी हल्का होता है और उसका भोजन हजम होता है। यदि उसको इधर की बात उधर और उधर की बात इधर करने का अवसर न मिले तो वह शायद घुट कर ही मर जाए। बात चाहे कुछ हो अथवा न हो किन्तु वह तो उसे इधर से उधर घुमावे ही गा। उसकी इस बुराई का परिणाम कुछ निकले अथवा न निकले इसकी उसको लेश मात्र भी चिन्ता नही रहती। उसकी क्षुद्र मनोवृत्ति इसी में प्रसन्नता का अनुभव करती है कि उसने किसी की बुराई की। मिश्रानी की मनोवृत्ति भी इसी प्रकार की थी।

(ख) "नानसेन्स ! बड़ा सुन्दर धर्म है। हाथ लगते ही छुई मुई हो जाए।"

ये पंक्तियां चन्द्रकिरण सोनरेक्सा कृत जीजी कहानी से उद्धृत की गई हैं। मिश्रानी ने रसोई में अण्डों का आमलेट बना लिया था। लक्ष्मी को यह बात बुरी लगी। उसने मिश्रानी को डाटा और मिश्रानी ने यह बात जाकर सुरेखा के कान में फो दी। उसने जाकर लक्ष्मी से वादविवाद करना आरम्भ किया और उसी वादविवाद के अवसर पर लक्ष्मी को इस कथन पर कि मैं धर्म कर्म नष्ट नही कर सकती। आग बबूला होकर कहने लगी कि रसोई में आमलेट बनाने से ही धर्म-कर्म नष्ट हो जाता है तो वह धर्म कर्म बिल्कुल मूर्खतापूर्ण है। वह भी क्या कोई धर्म है, जिसका नष्ट होना तत्काल सम्भव हो। वह तो धर्म क्या हुआ फिर छुई मुई का पेड़ हो गया, जिसके हाथ लगते ही सिमट जाता है। अगर तुम्हारा ऐसा ही धर्म है कि खाने पीने की चीजों को रसोई घर में पकाने से वह नष्ट हो जाता है तो वह कितने दिन चलेगा ? यह धर्म नही आडम्बर है, अन्ध विश्वास है। मुझे ऐसा धर्म पसन्द नही है। यह पसन्द करने की चीज भी नही है। "बड़ा सुन्दर धर्म है।" इस वाक्य मे व्यंग है। सुरेखा का अभिप्राय यह है कि यदि ऐसा ही तुम्हारा धर्म है तो बहुत बुरा धर्म है। यह क्या बात हुई ? खाने पीने की चीजें तो रसोईघर में बनें ही गी। उनको बनाने कहाँ जाएँगे ? क्यो दूसरी जगह

जाएँ ? अंडा वण्डा सब यहाँ ही बनेंगे। तुम्हारा धर्म नष्ट हो तो हो, मुझे उसकी चिंता नहीं है।

विशेष—लेखिका ने इन पंक्तियों में पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित नारी के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है कि वह शनैः शनैः नास्तिक बनती जा रही है तथा भारतीय सभ्यता का जो विशेष गुण अच्छाई है उसको छोड़ती जा रही है।

टेक की रक्षा

लेखिका—कमला चौधरी

प्रश्न—कहानीकार कमला चौधरी की कहानी विषयक विशेषताएँ बताकर उनकी टेक की रक्षा नामक कहानी की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—महिला लेखिकाओं में कमला देवी चौधरी का विशिष्ट स्थान है। आपकी कहानियों में मर्म स्पर्शी विश्लेषण मिलते हैं। आपकी भाषा प्रौढ़ प्रांजल एवं साहित्यिक है। आप में पात्रों के चरित्र चित्रण करने की अद्भुत क्षमता है। आपका व्यवहारिक ज्ञान तथा निरीक्षण शक्ति उच्चकोटि की है। इसलिए कहानियों में जिन घटनाओं का वर्णन आप करती हैं उनकी सत्यता के सम्बन्ध में अविश्वास नहीं होता। आप में वातावरण की सृष्टि करने की अनुपम प्रतिभा है। आपकी कहानियों का एक निश्चित उद्देश्य होता है। उस उद्देश्य पर पहुँचते ही कहानी समाप्त हो जाती है। इसलिए आपकी कहानियों की चरमवस्था तीखी एवं प्रभावशाली होती है। आपकी कहानियों में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण गूढ़तम भावों को स्पष्ट करके पाठक के हृदय पर अमिट छाप छोड़ जाते हैं। घटनाक्रम कुछ इस प्रकार का रखा जाता है कि पाठक अन्त तक पहुँचे बिना परिणाम की कल्पना नहीं कर पाता है। इसलिए उसकी उत्सुकता सदैव ही बनी रहती है। आपकी कहानियों में यथार्थवाद एवं आदर्श का मिश्रण रहता है। इसीलिए कभी आपकी कहानियाँ यथार्थवाद से आदर्शवाद की ओर उन्मुख होती हैं और कभी आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर मुड़ती हैं किन्तु यह सब कुछ ऐसी परिस्थितियों एवं वातावरण में होता है कि पाठक चौंकता नहीं प्रत्युत उनमें रमता है। उनका रस लेता है। आप महिला कहानी लेखिकाओं में समर्थ कहानीकार हैं।

कहानी का सारांश—सरयू नदी के तट पर टूटी फूटी झोंपड़ी में एक ब्राह्मण परिवार रहता था। कुल मिलाकर छः प्राणी थे। ब्राह्मण त्रिजट तथा उसकी पत्नी एवं उनकी चार सन्तानें। ब्राह्मण त्रिजट भिक्षा वृत्ति की उपेक्षा करता था